धनबाद, रांची एवं पटना से प्रकाशित | रांची, गुरुवार 15 अगस्त 2024 ● श्रावण शुक्ल पक्ष 11 संवत 2081 | मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 2, अंक : 128 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

शुभम संदेश

पृष्ठ : 24 (12+12 पेज का स्वतंत्रता दिवस परिशिष्ट)

एक राज्य - एक अखबार

झारखण्ड सरकार
GOVERNMENT OF JHARKHAND

समस्त प्रदेश एवं देशवासियों को

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

मैं स्वतंत्र हूँ, पढ़ाई के छोटे-मोटे खर्चों से, मुझे मिला **सावित्रीबाई फुले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, विदेश में उच्च शिक्षा के लिए, मुझे मिला **मरङ गोमके जयपाल सिंह मुंडा पारदेशीय छात्रवृत्ति योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, रोजमर्रा की आर्थिक परेशानी से, मेरा **झारखण्ड मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना में हुआ निबंधन**

मैं स्वतंत्र हूँ, पलाश ब्रांड ने मुझे दिया आर्थिक स्वावलंबन

मैं स्वतंत्र हूँ, उच्च/तकनीकी शिक्षा के लिए, मुझे मिला **गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, कृषि ऋण की चिंता से, मुझे मिला **झारखण्ड कृषि ऋण माफ़ी योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, बुढ़ापे की आर्थिक समस्या से, मुझे मिला **सर्वजन पेंशन योजना का लाभ**

मैं स्वतंत्र हूँ, बीमारी में खर्च की चिंता से, सरकार दे रही है **अबुआ स्वास्थ्य सुरक्षा योजना का लाभ**

आइये हमसब मिलकर झारखण्ड के वीर सपूतों और वीरांगनाओं के सोना झारखण्ड के सपनों को साकार करने में अपना योगदान दें।

हेमन्त सोरेन
मुख्यमंत्री, झारखण्ड

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

झारखंड पुलिस के अफसरों ने सरकार का कराया नुकसान

सौरभ सिंह। रांची

झारखंड पुलिस के अफसरों की वजह से राज्य सरकार को पिछले डेढ़ दशक से ज्यादा समय से अरबों का नुकसान उठाना पड़ा है. दरअसल केंद्र सरकार से मिलने वाले सुरक्षा संबंधी व्यय (एसआरई) फंड से झारखंड पुलिस ने कई जिलों में किराये पर चार पहिया वाहन लिया. इसका इस्तेमाल नक्सल अभियान, विधि व्यवस्था और अफसरों के आने-जाने को लेकर किया गया. लेकिन इस दौरान मोटर अधिनियम का खुलेआम उल्लंघन किया गया. नियम के अनुसार, सरकारी कार्यालयों में किराये और लीज पर चलने वाले सभी वाहनों का कॉमर्शियल निबंधन होना चाहिए. साथ ही उस पर पीला नंबर प्लेट लगाना अनिवार्य है. लेकिन झारखंड पुलिस ने जितने भी किराये पर चार पहिया वाहन लिये थे, उसमें से अधिकतर वाहनों में पीले नंबर प्लेट की जगह प्राइवेट नंबर वाले सफेद प्लेट लगे थे. इसको लेकर झारखंड पुलिस अफसरों ने कोई आपत्ति भी नहीं जतायी और वाहन के मालिक ने टैक्स बचाने के लिए बिना कमर्शियल नंबर के वाहनों को किराये पर लगा दिया.

क्या है एसआरई फंड

एसआरई फंड केंद्र सरकार की ओर से नक्सलवाद और उग्रवाद प्रभावित राज्यों को उपलब्ध करायी जाती है. ताकि परिवहन, संचार, वाहनों को किराये पर लेना, आत्मसमर्पण करने वाले नक्सलियों को स्टाइपेंड देना और सुरक्षा बलों के लिए बुनियादी ढांचे के निर्माण जैसे सुरक्षा संबंधी व्यय की भरपाई की जा सके. दरअसल राज्यों की ओर से धन मिलने में देरी होने की वजह से जवानों के लिए बुनियादी ढांचे के निर्माण में काफी विलंब हो जाता था. इसीलिए केंद्र सरकार ने यह फैसला लिया है. गौरतलब है कि एसआरई फंड उग्रवाद प्रभावित क्षेत्र में पुलिस बल को साधन सुविधा उपलब्ध कराने के लिए भी खर्च किया जाता है.

एसआरई फंड से कौन-कौन से काम होते हैं

- उग्रवादी हिंसा में मारे गये नागरिकों/सुरक्षाबल के परिवारों को अनुग्रह राशि का भुगतान करना के लिए.
- सरेंडर करने वाले नक्सली को मुआवजा देने के लिए.
- फोर्टिफाइड पुलिस स्टेशन के निर्माण के लिए.
- सिविक एक्शन प्रोग्राम के लिए.
- उग्रवाद प्रभावित क्षेत्रों में सड़क निर्माण के लिए.
- नक्सल विरोधी अभियानों में हेलीकॉप्टर मुहैया कराने के लिए.
- चार पहिया और दो पहिया वाहन के लिए.
- पुलिस पिकेट बनाने के लिए.
- उग्रवाद प्रभावित राज्यों में केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बलों की तैनाती के लिए.

झारखंड में सिर्फ पांच जिले नक्सल प्रभावित

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने झारखंड में नक्सल प्रभावित जिलों के आधार पर श्रेणीकरण कर राज्य सरकार को रिपोर्ट भेजी थी. इस रिपोर्ट के मुताबिक, झारखंड में अब पांच जिले ही नक्सल प्रभावित रह गये हैं. इनमें गिरिडीह, गुमला, लातेहार, लोहरदगा और पश्चिमी सिंहभूम का नाम शामिल है. वहीं देश के पांच राज्यों के 12 सबसे अधिक नक्सल प्रभावित जिलों की श्रेणी में झारखंड का सिर्फ पश्चिमी सिंहभूम जिले के नाम शामिल हैं.

उपराष्ट्रपति से मिले राज्यपाल गंगवार

झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने बुधवार को उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ से नयी दिल्ली में उनके निवास स्थान पर मुलाकात की. इसे शिष्टाचार भेंट बताया गया.

रिटायरमेंट की उम्र सीमा बढ़ाने की मांग

राज्यभर के ढाई लाख कर्मचारी पदाधिकारी आंदोलन की राह पर

- कर्मचारी संगठन ने सीएम हेमंत सोरेन को सौंपा ज्ञापन
- पदाधिकारी-कर्मचारी संघों का तर्क : शारीरिक एवं मानसिक रूप से तंदुरूस्त व कार्य करने में हैं सक्षम

आंध्र प्रदेश की तर्ज पर रिटायरमेंट एज 60 से 62 करने की मांग पर अड़े

प्रमुख संवाददाता। रांची

राज्य के विभिन्न कर्मचारी संघ आंदोलन की राह पर हैं. कर्मचारी संघों के बैनर तले लगभग 2.50 कर्मचारी-पदाधिकारियों से रिटायरमेंट की उम्र सीमा 60 से 62 साल करने की मांग की है. इन कर्मचारी संघों का कहना है कि झारखंड में भी आंध्रप्रदेश की तर्ज पर रिटायरमेंट की उम्र सीमा 60 से 62 साल होनी चाहिए. आंध्र प्रदेश में पदाधिकारियों और कर्मचारियों की रिटायरमेंट की उम्र सीमा बढ़ा दी गई है. सचिवालय सेवा संघ ने सीएम को ज्ञापन सौंप रिटायरमेंट की उम्र सीमा 60 से 62 साल करने की मांग की है. संघ के अध्यक्ष ध्रुव प्रसाद ने कहा है कि आंध्र प्रदेश में इसे लागू कर दिया गया है. इस दिशा में झारखंड सरकार को भी सकारात्मक पहल करनी चाहिए.

डिप्लोमा अभियंता संघ ने भी उम्र सीमा बढ़ाने की मांग की

डिप्लोमा अभियंता संघ ने भी रिटायरमेंट की उम्र सीमा 60 से 62 साल करने की मांग की हैय संघ के अध्यक्ष गुप्तेश्वर राम ने कहा है कि सेवानिवृति के समय अभियंता अपने कार्यों में काफी कुशल एवं अनुभवी होते हैं. उनके कार्यकुशलता एवं अनुभव को उपयोग राज्यहित में किया जा सकता है, जिससे राज्य के विकास को गति मिल सकती है. संघ की ओर से कहा गया है कि इपीएफओ के द्वारा राज्य सरकार के अभियंताओं की रिटायरमेंट की उम्र सीमा 60 से 62 साल करने की सलाह दी है.

एसटी-एससी कर्मचारी संघ | राज्य के अनुसूचित जाति- अनुसूचित जनजाति कर्मचारी संघ ने सेवानिवृति की उम्र सीमा 60 से 62 साल करने की मांग की है। संघ के अध्यक्ष राकेश प्रसाद ने इस बाबात मुख्यमंत्री को ज्ञापन भी सौंपा है.

झारखंड वित्त सेवा के पदाधिकारियों ने की मांग : झारखंड वित्त सेवा के पदाधिकारियों ने भी रिटायरमेंट की उम्र सीमा 60 से 62 साल करने की मांग की है. संघ के अध्यक्ष विनय कुमार सिन्हा ने कहा है कि वर्ष 1998 में केंद्र सरकार द्वारा सेवानिवृत्ति की उम्र को 58 वर्ष से बढ़ाकर 60 वर्ष किया गया. वर्ष 1998 से लेकर अबतक भारत में जीवन प्रत्याशा वृद्धि होकर लगभग 62 वर्ष से 70 वर्ष हुई है. वर्तमान में झारखण्ड वित्त सेवा के सेवानिवृत्त प्राप्त करने वाले समस्त पदाधिकारीगण शारीरिक एवं मानसिक रूप से तंदुरूस्त एवं कार्य करने में सक्षम है, जिनके पास समस्त सेवा काल का राजस्व संग्रहण संबंधी सबसे अच्छा सेवानुभव है, जो राज्य के समग्र विकास के लिए वृहतर रूप से लाभ मिल सकता है. वित्त सेवा के पदाधिकारियों के सेवानिवृत्ति उपरांत राज्य सरकार के अन्य विभागों एव विभिन्न सस्थानों में इनके वित्त वलेखादि संबंधी सेवानुभव व कार्यकुशलता का लाभ प्राप्त करने हेतु तत्पर रहते हैं और वित्तीय सलाहकार आदि के पदों पर नियुक्त होकर सेवा दे रहे हैं. सेवानिवृत्ति की उम्र बढ़ाने से कर्मियों को पेंशन के भुगतान को फलस्वरूप उत्पन्न वित्तीय भार को कम किया जा सकता है.

ऊर्जा विभाग के पुनर्गठन के बाद हुई पहली पोस्टिंग

रांची। ऊर्जा विभाग का पुनर्गठन और विस्तार के बाद पहली पोस्टिंग कर दी गयी है. मालूम हो कि विगत नौ जुलाई को मुख्य विद्युत अभियंता निरीक्षक के एक अतिरिक्त पद का सृजन किया गया था. इस प्रकार विभाग अंतर्गत मुख्य अभियंता सह मुख्य विद्युत निरीक्षक के समेकित पद को अलग-अगल कर दिया गया है. ऐसे में अगम प्रसाद जो मुख्य विद्युत अभियंता सह मुख्य विद्युत निरीक्षक के पद पर पदास्थापित हैं, उन्हें पृथक पद मुख्य विद्युत निरीक्षक विद्युत निरीक्षणालय रांची के पद पर पदास्थापित किया गया है. वहीं विजय कुमार सिन्हा वरीय विद्युत निरीक्षक को उनके अपने वेतनमान पर मुख्य विद्युत अभियंता के पृथक का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है.

राहुल के बुलावे पर दिल्ली पहुंचीं विधायक शिल्पी नेहा तिर्की, कई मुद्दों पर हुई चर्चा

विशेष संवाददाता। रांची

कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के विशेष आमंत्रण पर कांग्रेस विधायक शिल्पी नेहा तिर्की दिल्ली गयीं. बुधवार को उनकी मुलाकात राहुल गांधी से हुई. तिर्की ने कहा कि उन्होंने राहुल गांधी से बस एक ही बात कही कि कांग्रेस पूरे देश में लोगों के दिलों में है. आम जनमानस की भावनाओं को समझकर यदि रणनीति तैयार की जाए, तो इसका सकारात्मक परिणाम होगा. इसके साथ ही अनेक वैसी जटिल समस्याओं के समाधान में सहायता मिलेगी जो पिछले 10 साल में पैदा हुई है. 13 अगस्त को राहुल गांधी के कार्यालय से उन्हें फोन आया और 14 अगस्त को होने वाली विशेष बैठक और मुलाकात के लिए आमंत्रित किया गया.

राहुल ने संगठनात्मक और सरकार के कार्यों की जानकारी ली. राहुल गांधी ने नेता तिर्की से झारखंड में कांग्रेस की संगठनात्मक स्थिति के साथ ही सरकार की गतिविधियों की भी जानकारी ली.

सचिवालय घेराव केस : अर्जुन मुंडा, बाबूलाल व संजय सेठ के खिलाफ धुर्वा थाना में दर्ज एफआईआर रद्द

रांची। झारखंड हाईकोर्ट ने पूर्व मुख्यमंत्री और भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा, केंद्रीय राज्य मंत्री संजय सेठ और धनबाद सांसद ढुल्लू महतो समेत दो दर्जन से ज्यादा भाजपा नेताओं को को हाईकोर्ट से बड़ी राहत मिली है. बुधवार की सुनवाई के दौरान अदालत ने 28 प्रार्थियों के खिलाफ प्राथमिकी को रद्द कर दिया है. दरअसल पिछले वर्ष भाजपा के सचिवालय घेराव कार्यक्रम में हुए उपद्रव के बाद तीन पूर्व सीएम, आधा दर्जन सांसद समेत 41 लोगों पर धुर्वा थाना में केस दर्ज किया गया है, जिसका कांड संख्या 107/2023 है. आरोपियों पर उपद्रव करने, दंगा भड़काने, सरकार के निर्देशों का उल्लंघन करने, सरकारी कार्य में बाधा डालने आदि से संबंधित धाराएं लगायी गयी हैं.

कोर्ट की खबरें

विश्वनाथ शुक्ल को बनाया गया चीफ जस्टिस का ओएसडी, फहीम किरमानी का बोकारो ट्रांसफर

रांची। झारखंड हाईकोर्ट ने जिला जज रैंक के नौ न्यायिक पदाधिकारियों की ट्रांसफर पोस्टिंग की है. इसकी नोटिफिकेशन जारी कर दी है. ट्रांसफर पोस्टिंग का नोटिफिकेशन जारी होने के बाद इन्हें अविलंब नए पदस्थापन वाली जगह पर योगदान देने का निर्देश दिया गया है. सूची के मुताबिक, हाईकोर्ट के वर्तमान रजिस्ट्रार मोहम्मद शाकिर का चाईबासा कोर्ट के प्रधान न्यायाधीश के पद पर तबादला किया गया है. विश्वनाथ शुक्ल को हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस का ओएसडी नियुक्त किया गया है. साथ ही फहीम किरमानी को बोकारो के तेनुघाट और बेरमो कोर्ट में जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद पर नियुक्त किया गया है.

आदिवासी समाज के साथ-साथ सभी को चौकन्ना रहने की जरूरत

बांग्लास्तान नामक देश बनाने की चल रही साजिश : बाबूलाल

प्रमुख संवाददाता। रांची

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने कहा कि झारखंड के बड़े हिस्से (संताल बहुल इलाके) को बांग्लास्तान देश बनाने की साजिश चल रही है. बाबूलाल ने खुफिया एजेंसियों का हवाला देकर एक्स पर पोस्ट में लिखा कि झारखंड के बड़े हिस्से (संताल बहुल इलाके), बिहार का किशनगंज, पश्चिम बंगाल, अधिकांश उत्तर पूर्वी राज्य, नेपाल और म्यांमार के कुछ हिस्से को मिलाकर बांग्लास्तान नामक देश बनाने की साजिश चल रही है. पांच अगस्त को शेख हसीना सरकार की तख्तापलट के बाद कट्टरपंथी गजवातुल-हिंद (गैर मुसलमानों के खिलाफ युद्ध) और इस्लामिक बांग्लादेश के मकसद को पूरा करने की जुगत में लगे हैं. बांग्लादेश में

उत्पन्न हालात और कट्टरपंथियों का खतरनाक मंसूबा पूरे देश के साथ-साथ झारखंड के लिए भी अत्यंत संवेदनशील है.

झारखंड में सवाल पूछना मना है : बाबूलाल मरांडी ने अपने दूसरे पोस्ट में कहा कि झारखंड में सवाल पूछना मना है. सवाल कैसा भी हो, सवाल का उद्देश्य कैसा भी हो, हेमंत सोरेन के निर्देशानुसार- झारखंड में शासन और प्रशासन से सवाल पूछने की सख्त पाबंदी है, इसके बाद भी अगर आपने हिम्मत करके हिम्मतवाली सरकार से सवाल पूछने की जुर्रत भी की, तो तैयार हो जाइये पुलिस की लाठी खाने को, तैयार हो जाइये अपनी हड्डियां तुड़वाने को.

एक अस्पताल में तैनात बाउंसरों के कृत्य पर भी उठाए सवाल : बाबूलाल ने आगे लिखा कि ऐसी ही घटना राजधानी रांची से सामने आयी है, जहां परिवार के लोगों की बस एक गलती थी कि उन्होंने इलाजरत अनुमाला देवी की मौत के कारणों के बारे में अस्पताल प्रशासन से पूछ लिया. फिर क्या जैसा हाल हेमंत सरकार से सवाल पूछने पर पुलिस की लाठी करती है, वैसा ही हाल अस्पताल प्रशासन में तैनात बाउंसरों ने परिवारवालों के साथ किया. इन सबके बाद एक सवाल सबके सामने खड़ा हो जाता है कि हेमंत है, तो हिम्मत है, लेकिन किसको, सिर्फ पुलिस और प्रशासन को?

एक्शन में चीफ सेक्रेट्री: मांगी स्वीकृत योजनाओं के प्रगति की रिपोर्ट

रांची । राज्य के चीफ सेक्रेट्री एल खियांग्यते पूरी तरह से एक्शन में हैं. अब उन्होंने पिछले छह महीने के अंदर कैबिनेट की हुई बैठक में जिन योजनाओं को स्वीकृति दी गई है, उनके क्रियान्वयन से संबंधित पूरी रिपोर्ट संबंधित विभागों से मांगी है. साथ ही योजनाओं के क्रियान्वयन में आ रही समस्याओं से भी अवगत कराने को कहा है. चीफ सेक्रेट्री ने लोकहित और जनकल्याणकारी योजनाओं को जल्द पूरा करने का भी निर्देश दिया है. सभी योजनाओं को छह महीने के अंदर पूरा करने का भी निर्देश दिया है. इसे लेकर विभाग के पदाधिकारी रेस हो गए हैं. चीफ सेक्रेट्री ने विभागीय स्तर पर नीतियों की समीक्षा करने को कहा है. साथ ही खामियों को जल्द से जल्द दूर करने की बात भी कही है.

समस्त झारखंडवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

रमेश महली
प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष इटकी

मंगा उरांव
प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष, मांडर

मंगलेश्वर उरांव
विधायक प्रतिनिधि, चान्हो

मो, इम्तियाक
प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष चान्हो

जयंत बारला
प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष लापुंग

जमील मलिक
विधायक प्रतिनिधि, मांडर प्रखंड

मुदस्सिर हक
विधायक प्रतिनिधि सह उप प्रमुख, बेड़ो प्रखंड

प्रो करमा उरांव
प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष बेड़ो

सुदामा महली
विधायक प्रतिनिधि, लापुंग

राजन किस्पोट्टा
विधायक प्रतिनिधि, इटकी प्रखंड

क्लासिफाइड

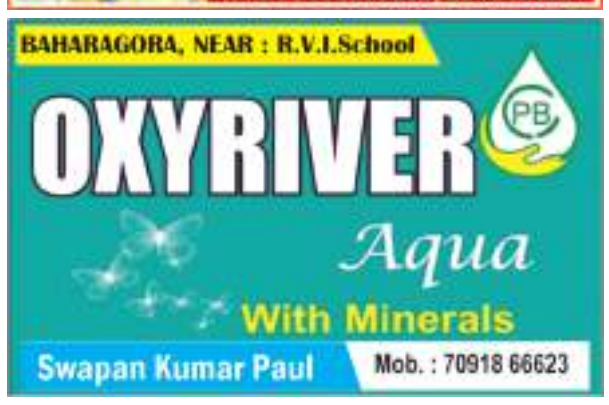

78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

शुभम संदेश

पृष्ठ : 24 (12+12 पेज का स्वतंत्रता दिवस परिशिष्ट)

एक राज्य - एक अखबार

रांची, गुरुवार 15 अगस्त 2024 ● श्रावण शुक्ल पक्ष 11 संवत 2081 ● मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 2, अंक : 128 ● आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

छुट्टी की सूचना

78वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में दैनिक शुभम संदेश और लगातार .इन का कार्यालय गुरुवार 15 अगस्त 2024 को बंद रहेगा. अत: अखबार का अगला अंक शनिवार 17 अगस्त 2024 को आएगा. शुभम संदेश के सभी पाठकों, शुभेच्छुओं और विज्ञापनदाताओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं.

– संपादक

सर्राफा

सोना (बिक्री)	66,200
चांदी (किलो)	85,000

ब्रीफ खबरें

केजरीवाल को अंतरिम जमानत से इनकार

नयी दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने कथित आबकारी नीति घोटाले में सीबीआई द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार मामले में दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को अंतरिम जमानत देने से बुधवार को इनकार कर दिया. न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति उज्जल भुइयां की पीठ ने सीबीआई को नोटिस भी जारी किया. इस मामले की अगली सुनवाई 23 अगस्त को होगी.

देश का व्यापार घाटा 23.5 अरब डॉलर रहा

नयी दिल्ली। भारत का वस्तुओं का निर्यात जुलाई में सालाना आधार पर 1.2 प्रतिशत घटकर 33.98 अरब डॉलर रहा है. एक साल पहले इसी महीने में यह आंकड़ा 34.39 अरब डॉलर था. वहीं, देश का आयात जुलाई में करीब 7.45 प्रतिशत बढ़ कर 57.48 अरब डॉलर हो गया. इससे देश का व्यापार घाटा जुलाई में 23.5 अरब डॉलर रहा है.

अप्रैल 2005 से खनिजों पर रॉयल्टी का बकाया वसूल सकेंगे राज्य

झारखंड को मिलेगी 1.36 लाख करोड़ की रॉयल्टी

झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन ने कहा- ऐतिहासिक फैसला, मांग सफल हुई

- एक अप्रैल 2026 से 12 वर्ष में खनन कंपनियां व केंद्र लौटाएगी बकाया
- कर की मांग एक अप्रैल 2005 से पहले के लेन-देन पर लागू नहीं

लगातार न्यूज नेटवर्क। नयी दिल्ली/रांची

सुप्रीम कोर्ट ने राज्यों को एक अप्रैल 2005 के बाद से केंद्र सरकार, खनन कंपनियों से खनिज संपन्न भूमि पर रॉयल्टी का पिछला बकाया वसूलने की अनुमति दे दी. अदालत ने कहा कि केंद्र, खनन कपंनियों द्वारा खनिज संपन्न राज्यों को बकाये का भुगतान अगले 12 वर्ष में क्रमबद्ध तरीके से किया जा सकता है. इसके साथ ही खनिज संपन्न राज्यों को रॉयल्टी के बकाया भुगतान पर किसी तरह का जुर्माना न लगाने का निर्देश दिया है. संविधान पीठ की अध्यक्षता कर रहे सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा कि राज्य पिछले कर का दावा कर सकते हैं, लेकिन शर्तों के साथ कि कर की मांग एक अप्रैल 2005 से पहले के लेन-देन पर लागू नहीं होगी.

झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सुप्रीम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते हुए खुशी जाहिर की है. उन्होंने कहा है कि झारखंड के लिए यह बड़ी जीत है. हम लंबे समय से इसकी मांग कर रहे थे. इस ऐतिहासिक फैसले से हमारी मांग सफल हुई. सीएम ने कहा कि केंद्र सरकार झारखंड की जनता का हक मार रही थी. सुप्रीम फैसले के बाद झारखंड को 1.36 लाख करोड़ मिलेंगे. उन्होंने कहा कि अब हमें 2005 से खनिज रॉयल्टी का बकाया मिलेगा. 12 साल में चरणबद्ध तरीके से यह भुगतान होगा. राज्यवासियों का हक सुरक्षित होने के साथ इन पैसों का उपयोग जन-कल्याण में होगा और हर झारखंडवासी को इसका पूरा लाभ मिलेगा.

संवैधानिक पीठ ने केंद्र की याचिका खारिज कर दी

सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक पीठ ने 25 जुलाई के अपने फैसले को आगामी प्रभाव से लागू करने की केंद्र की याचिका बुधवार को खारिज कर दी, जिसमें राज्यों के पास खदानों और खनिज युक्त भूमि पर कर लगाने के विधायी अधिकार को बरकरार रखा गया था. सीजेआई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली नौ सदस्यीय संविधान पीठ ने कहा कि 25 जुलाई के आदेश को आगामी प्रभाव से लागू करने की दलील खारिज की जाती है. कर की मांग के भुगतान का समय एक अप्रैल 2026 से शुरू होकर 12 वर्षों में किस्तों में बांटा जाएगा.

केंद्र ने राज्यों को रॉयल्टी लौटाने का विरोध किया था

केंद्र ने खनिज संपन्न राज्यों को 1989 से खनिजों और खनिज युक्त भूमि पर लगाई गई रॉयल्टी उन्हें वापस करने की मांग का विरोध करते हुए कहा था कि इसका असर नागरिकों पर पड़ेगा. प्रारंभिक अनुमान के अनुसार, सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों (पीएसयू) को अपने खजाने से 70,000 करोड़ रुपये निकालने पड़ेंगे. सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा कि इस फैसले पर पीठ के आठ न्यायाधीश हस्ताक्षर करेंगे, जिन्होंने बहुमत से 25 जुलाई को फैसला दिया था, जिसमें राज्यों को खनिज युक्त भूमि पर कर लगाने का विधायी अधिकार दिया गया था. उन्होंने कहा कि न्यायमूर्ति नागरत्ना बुधवार के फैसले पर हस्ताक्षर नहीं करेंगी, क्योंकि उन्होंने 25 जुलाई को अलग फैसला दिया था.

कोर्ट ने पूर्व में कहा था- खनिजों पर दी जानेवाली रॉयल्टी कर नहीं : संविधान पीठ ने 25 जुलाई को 8:1 के बहुमत वाले फैसले में कहा था कि राज्यों के पास खदानों और खनिज युक्त भूमि पर कर लगाने का विधायी अधिकार है और खनिजों पर दी जाने वाली रॉयल्टी कोई कर नहीं है. इस फैसले ने 1989 के उस निर्णय को पलट दिया था जिसमें कहा गया था कि केवल केंद्र के पास खनिजों और खनिज युक्त भूमि पर रॉयल्टी लगाने का अधिकार है. इसके बाद कुछ विपक्षी दल शासित खनिज संपन्न राज्यों ने 1989 के फैसले के बाद से केंद्र द्वारा लगाई गई रॉयल्टी और खनन कंपनियों से लिए गए करों की वापसी की मांग की थी.

मोरहाबादी मैदान में मुख्यमंत्री और दुमका में राज्यपाल करेंगे झंडोत्तोलन

संवाददाता। रांची

78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर गुरुवार की सुबह नौ बजे झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन रांची के मोरहाबादी मैदान में राष्ट्रीय ध्वज फहराएंगे. इस अवसर पर मुख्यमंत्री कई महत्वपूर्ण घोषणाएं कर सकते हैं. वहीं, राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार उपराजधानी दुमका में ध्वजारोहण करेंगे. हेमंत कैबिनेट के मंत्रियों द्वारा भी अपने-अपने जिले में झंडोत्तोलन किया जाएगा. इनमें कैबिनेट मंत्री चंपाई सोरेन सरायकेला-खरसावां, मंत्री रामेश्वर उरांव लोहरदगा, सत्यानंद भोक्ता चतरा, बैद्यनाथ राम लातेहार, दीपक बिरुआ पश्चिमी सिंहभूम, बन्ना गुप्ता पूर्वी सिंहभूम, इरफान अंसारी जामताड़ा, मिथिलेश कुमार ठाकुर गढ़वा, हफीजुल हसन देवघर, बेबी देवी बोकारो और दीपिका पांडेय सिंह गोड्डा जिले में ध्वजारोहण करेंगी.

लाल किला की प्राचीर से देश को संबोधित करेंगे पीएम

दिल्ली। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी लाल किले की प्राचीर से देश को संबोधित करेंगे. इस बार कार्यक्रम में लाल किले पर समारोह को देखने के लिए करीब 6,000 विशेष मेहमानों को आमंत्रित किया गया है. पेरिस ओलंपिक में भाग लेने वाले भारतीय दल को भी आमंत्रण भेजा गया है. 15 अगस्त की सुबह 7.17 बजे पीएम मोदी लाल किला पहुंचेंगे. 7.19 बजे उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया जाएगा. 7.26 बजे पीएम मोदी तीनों सेनाओं के अध्यक्षों से मुलाकात करेंगे और 7.30 बजे ध्वजारोहण करेंगे. इसके बाद 7.33 बजे पीएम देश को संबोधित करेंगे.

पीएम नरेंद्र मोदी ने विभाजन पीड़ितों को श्रद्धांजलि अर्पित की

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुधवार को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के मौके पर देश के बंटवारे के दौरान अपनी जान गंवाने वाले लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की. उन्होंने कहा कि आज के दिन वह राष्ट्र में एकता और भाईचारे के बंधन की रक्षा करने की अपनी प्रतिबद्धता को भी दोहराते हैं. उल्लेखनीय है कि पीएम मोदी ने वर्ष 2021 में 14 अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी. मोदी ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर, हम उन अनगिनत लोगों को याद करते हैं जो विभाजन की भयावहता के कारण प्रभावित और पीड़ित हुए. यह उनके साहस को श्रद्धांजलि देने का भी दिन है, जो मानव प्रतिरोध की शक्ति को दर्शाता है.

मुठभेड़ में सेना के कैप्टन शहीद, चार आतंकवादी ढेर

एजेंसी। जम्मू

डोडा में मुठभेड़ के दौरान कैप्टन दीपक सिंह गंभीर रूप से घायल हो गये थे

जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले के ऊंचाई वाले इलाके में बुधवार को आतंकवादियों की तलाशी के लिए चलाए जा रहे अभियान में सेना का एक कैप्टन शहीद हो गया. अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ में चार आतंकवादी मारे गए हैं.

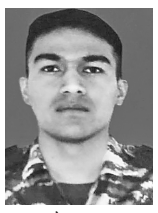

शहीद कैप्टन दीपक सिंह (फाइल फोटो)

सेना के अधिकारियों ने बताया कि बुधवार की सुबह करीब 7.30 बजे आंतकवादियों से मुठभेड़ में कैप्टन दीपक सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए. उन्हें सैन्य अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने अंतिम सांस ली. अधिकारियों ने बताया कि मुठभेड़ स्थल से चार बैग मिले हैं, जिनमें खून लगा है. इससे यह समझा जा रहा है कि मुठभेड़ में चार आतंकवादी मारे गए हैं. साथ ही वहां से एम-4 कार्बाइन भी बरामद की गई है. एडीजीपी आनंद जैन ने बताया कि इलाके में अभियान अब भी जारी है. सेना ने कैप्टन की मौत पर गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि व्हाइट नाइट कोर' के सभी रैंक बहादुर कैप्टन दीपक सिंह के सर्वोच्च बलिदान को सलाम करते हैं. बता दें कि कैप्टन दीपक भारतीय सेना के 48 राष्ट्रीय राइफल्स में तैनात थे.

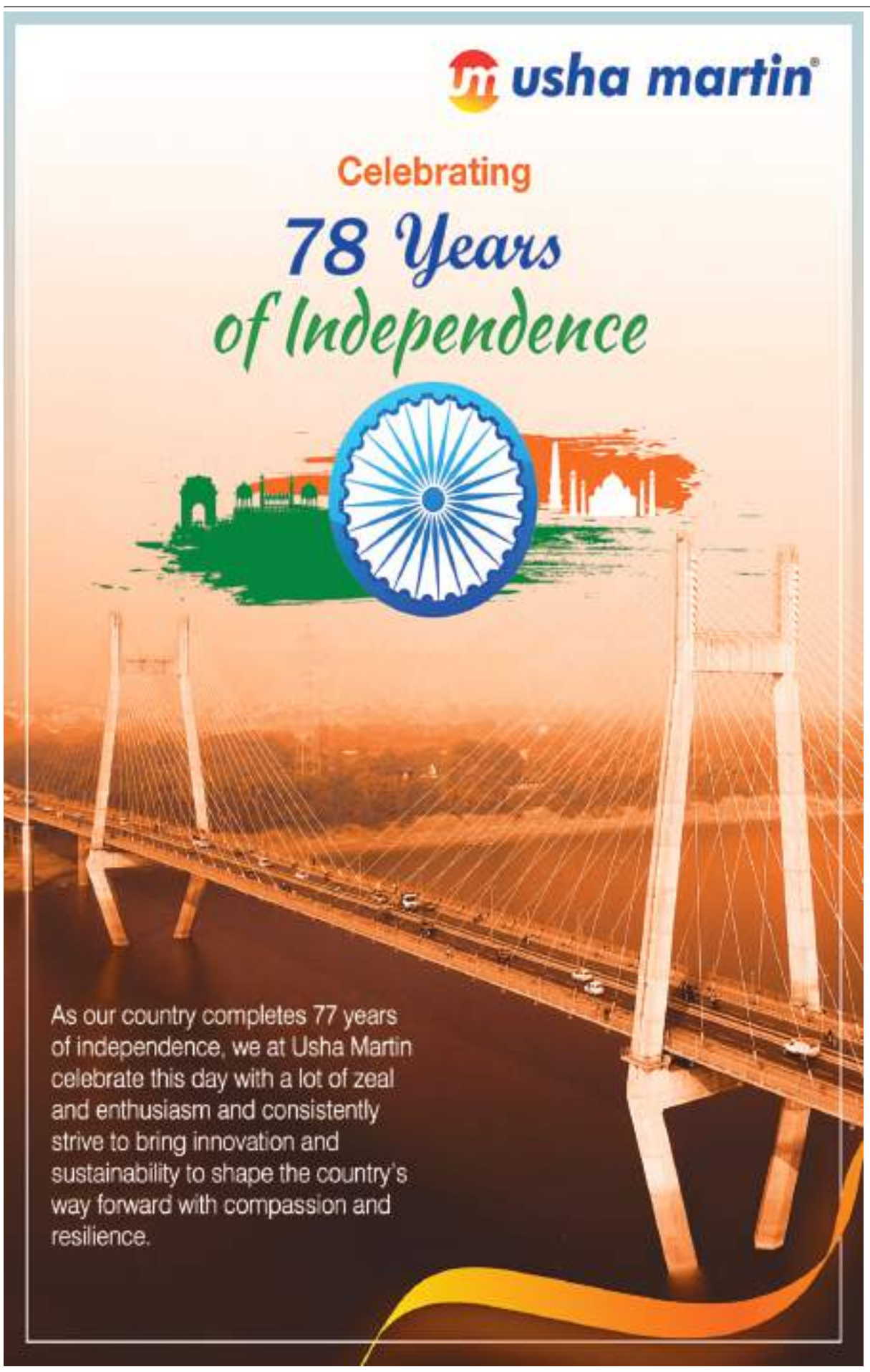

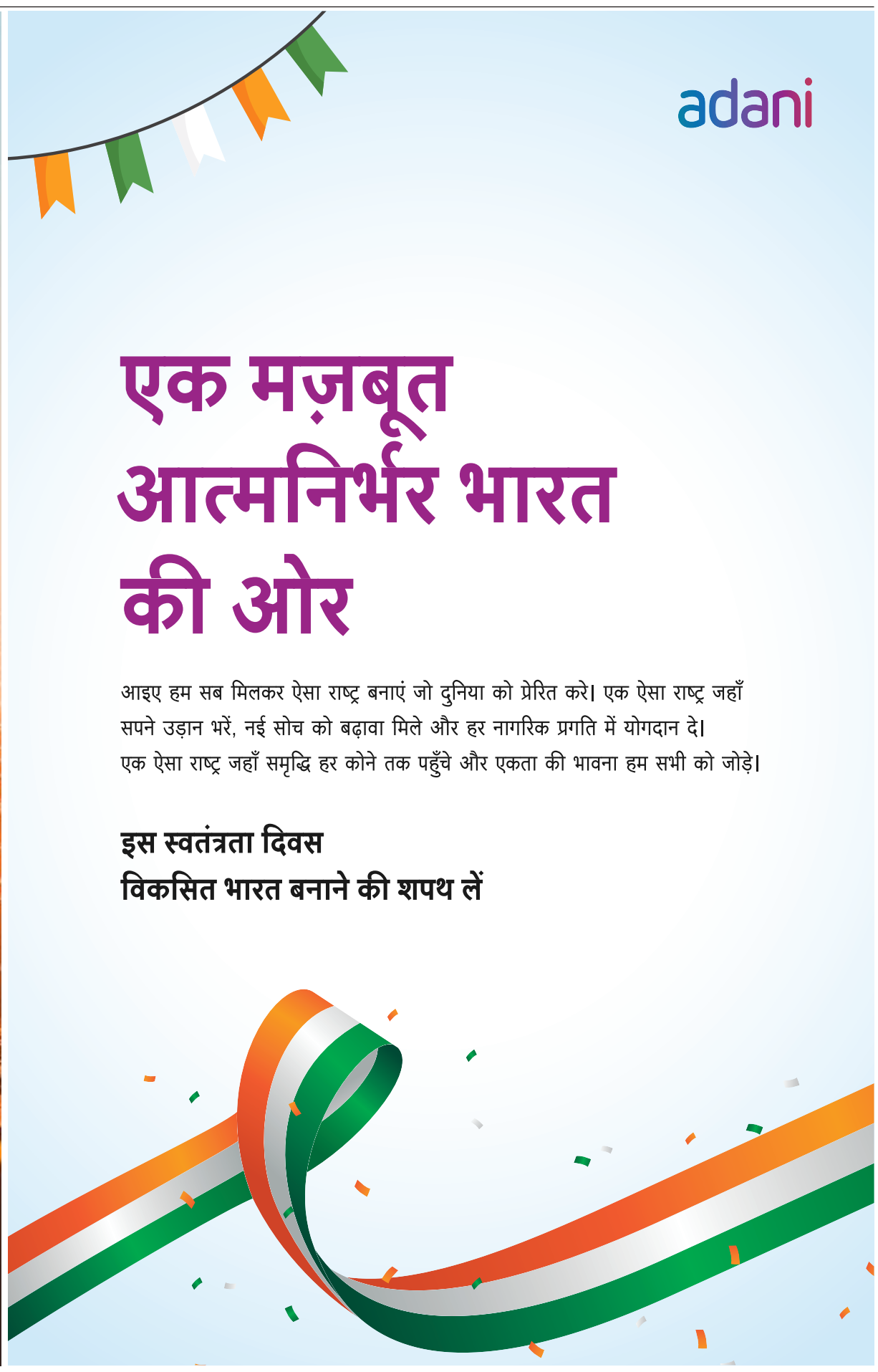

ब्रीफ खबरें

पुलिस वालों ने बाइक पर निकाली तिरंगा यात्रा

धनबाद : आजादी के अमृत उत्सव के तहत स्वतंत्रता दिवस से पूर्व वरीय पुलिस अधीक्षकहृदीप पी जनार्दनन के नेतृत्व में पुलिस और सीआरपीएफ की संयुक्त टीम द्वारा हर घर तिरंगा यात्रा निकाली गई. हाथों में राष्ट्र ध्वज लेकर बाइक पर सवार पुलिस के वरीय पदाधिकारियों व जवानों ने भारत माता की जय का उद्घोष करते हुए शहर के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया. हर घर तिरंगा यात्रा का मकसद जनता के बीच राष्ट्र प्रेम व समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का भाव उत्पन्न करना है.1 इस यात्रा के जरिए समाज में एकता, अमन व भाईचारा कायम रखते हुए देश की प्रगति में प्रत्येक व्यक्ति को योगदान के लिए प्रेरित करना है.

डीसी के नाम-तस्वीर से बनाया फेक व्हाट्सएप

धनबाद। उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी माधवी मिश्रा के नाम पर तस्वीर वाली फेक व्हाट्सएप आईडी बनाने का मामला प्रकाश में आया है. फेक व्हाट्सएप आईडी का नंबर 94 785948722 हैं. इस संबंध में जिला उपायुक्त ने अपने अधिकारियों, शुभचिंतकों व आमजनों से अपील की है कि अगर इस व्हाट्सएप नंबर या किसी भी अन्य नंबर व अन्य किसी भी अनाधिकृत सोशल मीडिया के माध्यम द्वारा आपसे संपर्क किया जाता है, तो उनके झांसे में न आए और किसी भी प्रकार की कोई भी वार्तालाप न करें.

सांसद ढुल्लू महतो नहीं हुए हाजिर

धनबाद : ओरिएंटल स्ट्रक्चरल इंजीनियर्स प्राइवेट लिमिटेड के मैनेजर मुकेश चंदानी को धनबाद परिसदन बुलाकर धमकी देने व रंगदारी मांगने, तथा मारपीट के दो मामले की सुनवाई एमपी-एमएलए न्यायालय के विशेष न्यायिक दंडाधिकारी अर्पिता नारायण की अदालत में हुई. सुनवाई के दौरान अदालत ने अभियोजन को गवाह पेश करने का आदेश दिया है. सुनवाई के दौरान भाजपा सांसद ढुलू महतो हाजिर नहीं थे.

साइबर ठगी में साला-बहनोई गिरफ्तार

06 मोबाइल के साथ 09 सिम बरामद, बरामद पांच सिम के खिलाफ मुकदमे

- साथ मिलकर कई राज्यों में करते थे ठगी

संवाददाता । धनबाद

साइबर अपराधियों के खिलाफ गुप्त सूचना पर कार्रवाई करते हुए एसएसपी धनबाद की विशेष छापामारी टीम ने दो साइबर अपराधियों को दबोचा है. इनके पास से छह मोबाइल, नौ सिम कार्ड बरामद किया है. इन अपराधियों के खिलाफ लगभग डेढ़ दर्जन ठगी के मुकदमे चल रहे हैं. पकड़े गए दोनों अपराधी रिश्ते में साला-बहनोई हैं. दोनों करीब एक साल से लोगों को ठग रहे थे. वरीय पुलिस अधीक्षक को अपराधियों की गुप्त सूचना मिली थी. लोकेशन के आधार पर पुलिस टीम ने जयनगर दास बस्ती, थाना-बरवाअड्डा के दास टोला स्थित भगतु रविदास के घर में छापामारी की. यहां से साईबर अपराध करते हुए दो साईबर अपराधियों को रंगेहाथ पकड़ा गया. उनके पास से 06 मोबाइल, 09 सिम कार्ड बरामद किया गया. प्रारंभिक जांच में पाया गया कि इसमें से 05 सिम जो बरामद हुए हैं, उसके खिलाफ पूर्व से साईबर अपराध का कुल 15 शिकायतें दर्ज हैं.जो महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और उड़ीसा राज्य से जुड़ी हैं. पूछताछ के क्रम में गिरफ्तार अपराधियों द्वारा अपराध स्वीकार करते हुए बताया गया कि ये पिछले एक वर्ष से साईबर अपराध कर रहे हैं. ये लोग बैंक अधिकारी बनकर आम विभिन्न राज्यों के आम लोगों को फोन कर उन्हें केवाइसी अपडेट प्राप्त कर उनके खाते से अवैध निकासी कर लेते थे. इंटरनेट बैंकिंग चार्ज के नाम पर उनसे ओटीपी लेकर बैंक खाता व एटीएम बंद करने की बात बताकर उनसे ओटीपी प्राप्त कर उनके खाते से फर्जी मोबाईल नंबर को रजिस्ट्रर्ड कर दिया जाता था. इसके बाद अवैध निकासी कर ली जाती थी. पकड़े गए रोहित रविदास निवासी चिरकुण्डा और मंतोष रविदास निवासी बरवाअड्डा दोनों को जेल भेज दिया गया.

निरसा में निकाली गई तिरंगा यात्रा

मैथनः निरसा मध्य पंचायत की मुखिया रीता देवी एवं मनोज सिंह द्वारा स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर बुधवार को तिरंगा यात्रा निकाली गई. तिरंगा यात्रा निरसा कांटा स्थित मुखिया रीता देवी के आवास से शुरू होकर निरसा चौक, सिनेमा मोड़, गोपीनाथपुर, बेलचढी मोड़ होते हुए कंचनडीह पहुंची. कंचनडीह से तिरंगा यात्रा वापस निरसा कांटा पहुंचकर समाप्त हुई. मौके पर मुखिया रीता देवी ने बताया कि लाखों बलिदानियों के बलिदान के बाद हमारा देश स्वतंत्र हुआ है. कार्यक्रम को सफल बनाने में निरसा प्रखंड मुखिया संघ अध्यक्ष दिनेश सिंह, पंसस अर्जुन भुइयां, सुदामा कुमार रवि, दशरथ चंद्रा, सजल पांडे, सुरेश बाउरी, गब्बर पाल, निमाई सिंह, आदेश सिंह, प्रिंस कुमार महतो, मजनू बाउरी, विजय भुइयां पिताजी की भूमिका रही.

चिरकुंडा में दर्जनों लोगों ने मासस का दामन थामा

संवाददाता ।चिरकुंडा

चिरकुंडा नगर परिषद क्षेत्र के गांजा गली स्थित एलिट पब्लिक स्कूल के सामने बुधवार को आयोजित मिलन समारोह में पूर्व विधायक अरूप चटर्जी के नेतृत्व में विभिन्न राजनीतिक दलों को छोड़ मासस के प्रति आस्था जताते हुए बड़ी संख्या में लोगों ने मासस का दामन थामा. चटर्जी ने सभी आंगतुकों को पार्टी में शामिल करते हुए उनका स्वागत किया. आपके हर सुख दुख में मासस कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रहेगी. पार्टी में शुभम अग्रवाल, भोलाराम, रविकांत पाठक, अजय कुमार गुप्ता, सूरज कुमार साब, जोगिंदर साब, विकास अग्रवाल, राजेश प्रसाद, सूरज रवानी, कारण पंडित, कृष्णा भुईया, विक्की साव, संजय यादव, रंजीत यादव, इंद्र साव, शंकर सिंह, शंकर चौबे, दिलीप कुमार, प्रवीण झा आदि शामिल हुए. समारोह में संतु चटर्जी, मानिक गोराई, अमरेश चक्रवर्ती, जियाउद्दीन शाह, श्यामा गाडिया, नानटू गोस्वामी, सहित अनेक मौजूद थे.

मानदेय बढ़ोतरी की मांग को लेकर सफाई कर्मियों की हड़ताल

- चिरकुंडा नगर परिषद : पूर्व विधायक अरूप चटर्जी की मौजूदगी में वार्ता के बाद हड़ताल समाप्त

संवाददाता ।चिरकुंडा

चिरकुंडा नगर परिषद के अंतर्गत कार्य कर रहे सफाई कर्मियों ने अचानक मानदेय को बढ़ाने की मांग को लेकर बुधवार को कार्य स्थगित कर हड़ताल पर चले गए. जिससे सफाई व्यवस्था चिरकुंडा की ठप हो गई. सफाई कर्मियों की मांग थी उनको सरकारी नियमानुसार 425 रु मानदेय के साथ पीएफ व ईएसआई दिया जाए1 सफाई कर्मियों के पक्ष में पूर्व विधायक अरूप चटर्जी पहुंचे. कहा कि सफाई कर्मियों की यह मांग जायज है. सफाई कर्मी विधायक अरूप चटर्जी के नेतृत्व में नगर परिषद प्रबंधन से वार्ता कर आश्वासन के बाद सफाई कर्मियों ने कार्य प्रारंभ करने की बात कही. नगर परिषद कार्यालय चिरकुंडा में कार्यपालक पदाधिकारी विजय हांसदा व सिटी मैनेजर मुकेश निरंजन के साथ पूर्व विधायक अरुप चटर्जी द्वारा वार्ता की गई. वार्ता में कहा गया कि सफाई कर्मियों को प्रतिदिन 370 रुपया प्रति व्यक्ति इनका मानदेय मिलता था, अब सफाई कर्मियों को प्रति व्यक्ति 425 रुपया मिलेगा. सफाई कर्मियों को जुलाई माह से ही बढ़ा हुआ मानदेय दिया जाएगा. सफाई कर्मियों को नगर परिषद की ओर से आई कार्ड, ईएसआई व पीएफ सुविधाओं का भी लाभ मिलेगा. बैठक में इन सभी बिंदुओं को लेकर के चर्चा हुई.कार्यपालक पदाधिकारी विजय हांसदा ने सभी बातों पर सहमति जताई और कहा कि अचानक इस तरह से कार्यों को स्थगित करके आंदोलन का रुख नहीं अपनाना चाहिए. इससे नागरिकों को परेशानी झेलनी पड़ती है. सफाई कर्मियों को हड़ताल के पूर्व अपनी मांग को अधिकारी के समक्ष रखनी चाहिए थी ताकि उसका वे समाधान करने का प्रयास करते. वार्ता में संतु चटर्जी,मानिक लाल गोराई,अमरेश चक्रवर्ती,शम्भू साव आदि थे।

नाबालिग के यौन उत्पीड़न में सौतेली मां को पांच वर्ष कैद

धनबाद : नाबालिग का यौन उत्पीड़न व उसे मानसिक व शारीरिक रूप से प्रताड़ित करने के एक मामले में धनबाद पोक्सो एक्ट के विशेष न्यायाधीश प्रभाकर सिंह की अदालत ने नामजद आरोपी झरिया निवासी टुंपा टिकैत (सौतेली मां) को पांच वर्ष कैद एवं पांच हजार रुपए जुर्माना से दंडित किया है. मंगलवार को अदालत ने उसे दोषी करार दिया था. अदालत ने सजा के बिंदु पर सुनवाई के लिए बुधवार की तारीख निर्धारित की है. आरोपी इस मामले में फरार है. उसकी अनुपस्थिति में ही अदालत ने अपना फैसला सुनाया है. प्राथमिकी पीड़ित बच्चे की बुआ की शिकायत पर झरिया थाने में 17 अगस्त 2015 को दर्ज की गई थी. प्राथमिकी के मुताबिक पीड़ित बच्चे की सौतेली मां टुंपा टिकैत बच्चे के साथ दो वर्षों तक शारीरिक आर्थिक एवं मानसिक रूप से प्रताड़ित करती थी. प्राथमिक की में आरोप था कि सौतेली मां ने बच्चों के साथ यौन उत्पीड़न भी किया था. अनुसंधान के बाद पुलिस ने 30 में 2018 को टुंपा टिकैत के विरुद्ध आरोप पत्र दायर किया था.

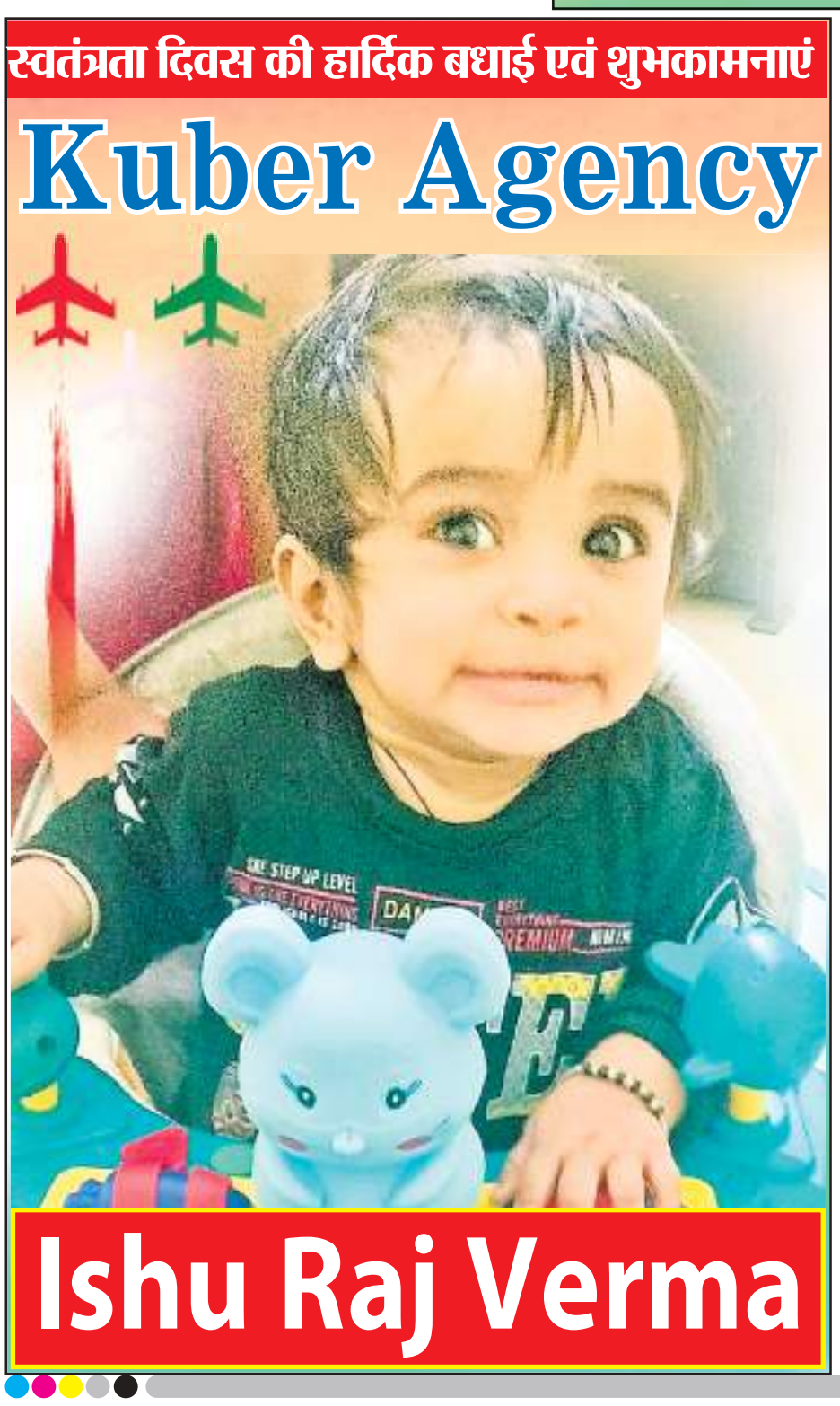

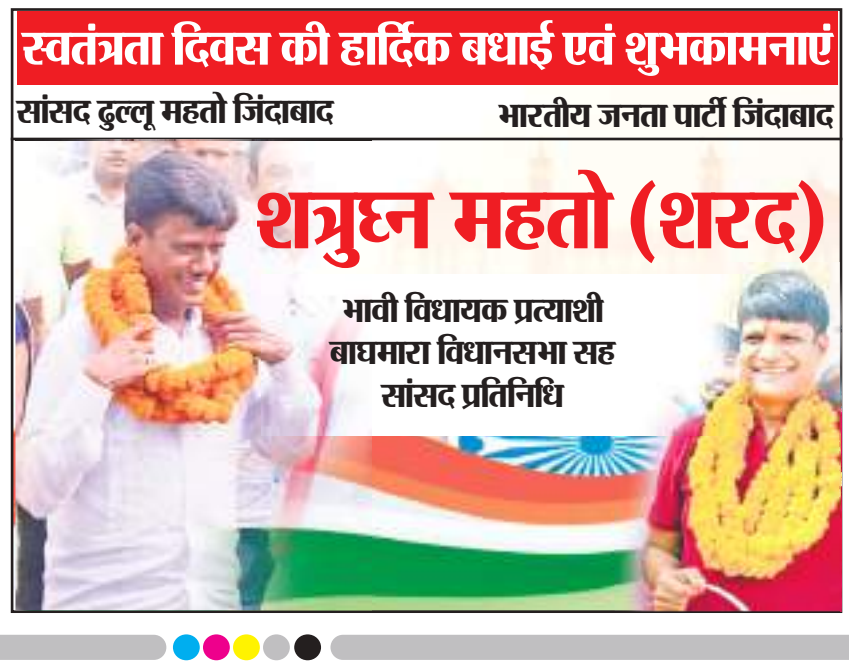

78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

धनबाद, गुरुवार 15 अगस्त 2024 ● श्रावण शुक्ल पक्ष 11 संवत 2081 ● पृष्ठ : 12 ● मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 2, अंक : 128 ● आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

पुलिस वालों ने बाइक पर निकाली तिरंगा यात्रा

संवाददाता। धनबाद

आजादी के अमृत उत्सव के तहत स्वतंत्रता दिवस से पूर्व वरीय पुलिस अधीक्षकहृदीप पी जनार्दनन के नेतृत्व में पुलिस और सीआरपीएफ की संयुक्त टीम द्वारा हर घर तिरंगा यात्रा निकाली गई. हाथों में राष्ट्र ध्वज लेकर बाइक पर सवार पुलिस के वरीय पदाधिकारियों व जवानों ने भारत माता की जय का उद्घोष करते हुए शहर के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण किया. हर घर तिरंगा यात्रा का मकसद जनता के बीच राष्ट्र प्रेम व समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का भाव उत्पन्न करना है. इस यात्रा के जरिए समाज में एकता, अमन व भाईचारा कायम रखते हुए देश की प्रगति में प्रत्येक व्यक्ति को योगदान के लिए प्रेरित करना है.

तोपचांची के कई गांवों में रात जागकर हो रही पहरेदारी

आंतक : जीटी रोड में वाहन लगाकर गांव में घुस रहा चोरों का झुंड

संवाददाता। तोपचांची

तोपचांची। थाना क्षेत्र में लगातार बढ़ती चोरियों ने लोगों को परेशान कर रखा है, लोग अब अपने गांव को सुरक्षित-महफूज नहीं कर रहे हैं. पुलिस का भरोसा छोड़कर अपने स्तर पर ही गांव में पहरा देना शुरू कर दिया है. कई-कई युवक टीम बनाकर गांव की पहरेदारी कर रहे हैं. पूरी रात जाग रहे हैं. वहीं पुलिस ने भी गश्ती तेज कर दी है. बताते चलें कि एक सप्ताह पहले ही तोपचांची थाना क्षेत्र के काण्डेडीह और बरवाडीह गांव में लाखों चोरी हुई थी. दोनों ही मामले में चोरों का अभी तक कोई सुराग नहीं लग पाया है. ग्रामीणों ने बताया कि मंगलवार देर रात 7-8 अज्ञात लोगों का झुण्ड पाण्डेयडीह गांव में देखा गया, गांव में यह झुण्ड चोरी की मंशा से आया था. पुलिस की आते ही सभी लोग फरार हो गए. ग्रामीणों ने बताया कि चार पहिया वाहन सभी लोग आए थे, जो जीटी रोड किनारे खड़ी की गई थी. ऐसे में अब पुलिस के साथ ग्रामीण भी अलर्ट हो गए हैं.अपने गांव-घर की रक्षा के लिए खुद ही आगे आ रहे हैं. ग्रुप बनाकर गांव के लोग पूरी रात में पहरेदारी कर रहे हैं. इस पहरेदारी के बाद अन्य ग्रामीण चैन की नींद से सो पा रहे हैं. काण्डेडीह, पाण्डेयडीह, सिंहदाहा, सिसकारी और अन्य गांवों में ग्रामीण लगातार पहरा दे रहे हैं. ग्रामीणों ने बताया कि वे अपनी सुरक्षा के लिए खुद कदम उठाने के लिए मजबूर हैं. हालांकि मंगलवार देर रात तक तोपचांची पुलिस गांव में लगातार गश्ती करती रही. लेकिन ग्रामीण भी पूरी रात जगे रहे.

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

2600 लीटर शराब जब्त

पुलिस ने किया शराब बनाने के उपकरण नष्ट

संवाददाता। बराकर

आबकारी विभाग ने स्वतंत्रता दिवस की पूर्व संध्या पर बड़े पैमाने पर शराब विरोधी अभियान चलाया. जहा 2600 लीटर शराब के साथ शराब बनाने के उपकरण को नष्ट कर दिया गया. सूत्रों के अनुसार इस दिन बाराबनी थाना क्षेत्र के मेटेला और खैरकनाली में छापेमारी की गयी राज्य के आवकारी विभाग के बाराबनी ओसी मिराज हुसैन के नेतृत्व में इस दिन बाराबनी थाना के पुलिस अधिकारी, दुर्गापुर एक्साइज, आसनसोल एक्साइज, आसनसोल नॉर्थ और कुल्टी एक्साइज के पुलिस अधिकारियों के साथ इस ऑपरेशन को चलाया गया. हालांकि इस ऑपरेशन में पुलिस को बड़ी सफलता हाथ लगी है उस क्षेत्र में शराब बनाने के उपकरण जंगल में छिपाए रखे थे. जिसे देखकर सबसे पहले आबकारी विभाग की नजर इस इलाके पर गई. जहां काफी समय से चोलाई शराब का कारोबार फल-फूल रहा है, आवाकारी विभाग के सूत्रों के मुताबिक इलाके में चोरी-छिपे शराब बनाये जाने की जानकारी विभाग के कर्मचारियों को पहले ही मिल गयी थी. गुप्त सूत्रों से प्राप्त जानकारी के आधार पर पुलिस अधिकारियों ने मेटेला और खैयेर कनाली में एक घर पर छापा मारा. वहां 2600 लीटर चुलाई शराब बरामद की गई. जहा शराब बनाने के उपकरण का उन्हें नष्ट कर दिया गया, अबगारी विभाग के मुताबिक यह अभियान जारी रहेगा.

डिप्टी मजिस्ट्रेट ने थोक विक्रेताओं को दी चेतावनी

संवाददाता। बराकर

वर्दवान जिला अधिकारी के निर्देश पर डिप्टी मजिस्ट्रेट स्वपन कुमार देव के नेतृत्व में अधिकारियों की एक टीम ने बुधवार को बराकर स्टेशन रोड स्थित आलू प्याज के थोक विक्रेता के गोदाम का निरीक्षण किया. उन्होंने आलू एवं प्याज के थोक विक्रेता से बात की. वही कुल्टी के खुदरा मार्केट का निरीक्षण किया. निरीक्षण के दौरान आलु,प्याज सहित विभिन्न सब्जियों की मूल्यों के बारे में पूछताछ की. डिप्टी मजिस्ट्रेट स्वपन कुमार देव ने कहा कि आलु एवं प्याज के अलावा विभिन्न सब्जियों की कीमत में वृद्धि नही हो. थोक विक्रेताओं की ओर से कालाबाजारी को रोकने एवं आम लोगों को उचित मूल्य पर सब्जियां उपलब्ध कराया जा सके. इसे लेकर कुल्टी एवं बराकर के अलावा जिला के अंतर्गत विभिन्न शहरों में स्थित सब्जी मार्केट का लगातार निरीक्षण किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि आलु की कीमत में बढ़ोतरी नही हो, इसके लिये राज्य सरकार की ओर से बंगाल से अन्य राज्यों में जाने वाली आलू पर प्रतिबंध लगाया गया है. उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में भी सब्जी मार्केट का लगातार निरीक्षण किया जायेगा. इस अवसर पर प्रवर्तन निदेशालय विभाग एवं कृषि विभाग के अधिकारी भी शामिल थे.

ब्रीफ खबरें

सांकतोड़िया अस्पताल के चिकित्सकों ने जताया रोष

सांकतोड़िया। ईसीएल सांकतोड़िया अस्पताल के चिकित्सकों ने बुधवार को आउटडोर बंद कर कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज में ट्रेनी डॉक्टर के साथ हुई दुष्कर्म एवं हत्या का विरोध जताया. इसके कारण यहां स्वास्थ्य सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हुई. आउटडोर सेवाएं बंद होने से मरीजों को खासी परेशानी का सामना करना पड़ा. उल्लेखनीय है कि कोलकाता में ट्रेनी डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या मामले में यहां भी डॉक्टरों का विरोध-प्रदर्शन जारी है. बुधवार को अस्पताल परिसर से ईसीएल मुख्यालय तक एक विरोध रैली निकाली गई. सीएमओ डॉक्टर अभिजीत विश्वास ने कहा कि कोलकाता में जो हुआ उस घटना से सांकतोड़िया अस्पताल में काम करने वाली डॉक्टर्स, नर्स भी भयभीत हैं. सभी ने अस्पताल में सुरक्षा प्रदान करने की मांग की है. उन्होंने कहा कि 9 अगस्त को हुई इस घटना के बाद से बंगाल सहित पूरे देश के डॉक्टरों के बीच आक्रोश है. उन्होंने कहा कि कोलकाता में जो हुआ वह अपनी तरह की अकेली घटना नहीं है. देश में ऐसे कई मामले रोजाना हो रहे हैं. डॉक्टर होना सबसे महान कार्यों में से एक है. हम मंदिर जैसे माहौल में काम करते हैं और उसपर भी डॉक्टर सुरक्षित नहीं रहेंगे तो मरीज़ कैसे सुरक्षित महसूस करेंगे? कहा कि हम चिकित्सकों की सुरक्षा निश्चित होनी चाहिए.

हर घर झंडा तिरंगा यात्रा का आयोजन

बराकर। भारतीय जनता पार्टी कुल्टी मंडल दो के अध्यक्ष मनमोहन राय के नेतृत्व में हर घर झंडा तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया. इस दौरान बड़ी संख्या में भाजपा कुल्टी मंडल दो पार्टी कार्यकर्ताओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया, तिरंगा यात्रा में सभी सदस्यो ने हाथो में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के साथ शामिल थे. कुल्टी मंडल दो के विभिन्न मोहल्लों में होते हुवे इस तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया. पार्टी के आदेशानुसार प्रत्येक ब्लॉक में वार्ड स्तर पर आजादी के पवन पर्व पर पार्टी की ओर से यात्रा का आयोजन का दिशा निर्देश का भली भांति पालन किया गया. इस दौरान भारत माता की जय बंदे मातरम के नारों से छेत्र गुंजायमान रहा, कुल्टी सी सियाल डंगा से कुल्टी न्यू रोड तक निकाली गई. जिनमे मंडल महासचिव आदित्य नारायण शर्मा,भीम हाड़ी,रबिंद्र सिंग, मनोज मिश्रा, समीर बागड़ी सहित बड़ी संख्या में पार्टी के यूवा सदस्य शामिल थे.

जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री वितरण

बराकर। बीसीसीएल अंतर्गत सीवी एरिया 12 की दृष्टि महिला समिति द्वारा जरूरतमंद लोगों के बीच मच्छर से बचाव को लेकर सामग्री प्रदान किया गया . इस दौरान समिति द्वारा जरूरतमंद महिलाओं को मच्छरदानी ब्लीचिंग पाउडर तथा फिनायल के अलावे सत्तू मुड़ी आदि खाद्य पदार्थ बराकर के मोहल्ले के 20 परिवारों को प्रदान किया गया . इस अवसर पर दृष्टि महिला समिति की अध्यक्षया शशि प्रसाद ने बताया कि महिला संगठन के द्वारा समय-समय पर जरूरतमंद लोगों के बीच जाकर सहायता प्रदान की जाती है . उन्होंने कहा कि वर्षा का मौसम है इस मौसम में मच्छरों की उत्पत्ति बहुत ज्यादा हो जाती है और मच्छरों के काटने से बुखार आदि की संभावना बढ़ जाती है . जिससे सुरक्षा प्रदान करने हेतु बराकर के 20 परिवारों को मच्छरदानी दिया गया . ताकि वे इसमें मच्छरों से सुरक्षित होकर आराम भरी नींद प्राप्त कर सके.

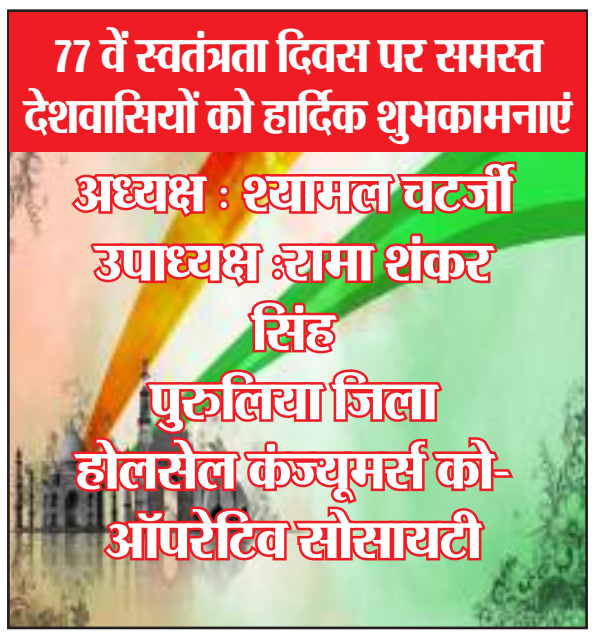

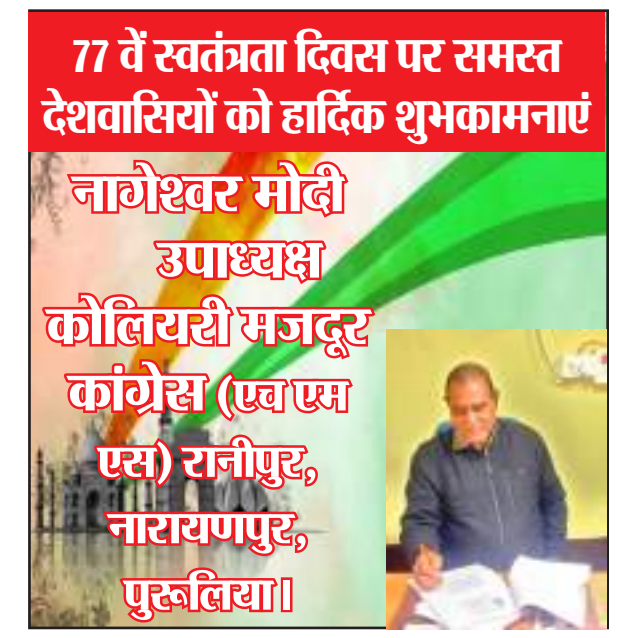

भारी मात्रा में नकली विदेशी शराब जब्त, दो गिरफ्तार

- घटना में प्रयुक्त कार के साथ विभिन्न ब्रांड के 500 बोतल बरामद

संवाददाता। जमुआ (गिरिडीह)

जमुआ-गिरिडीह मुख्य मार्ग डोमन पहाड़ी में वाहन चेकिंग के दौरान पुलिस की गठित टीम ने भारी मात्रा में नकली विदेशी शराब जप्त किया.
इस बाबत जमुआ थाना में खोरीमहुआ अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ने प्रेस कॉफ्रेंस में बताया कि पुलिस अधीक्षक को गुप्त सूचना मिली कि एक कार में अवैध नकली विदेशी शराब जमुआ से कोडरमा के रास्ते बिहार ले जाया जा रहा है. बताया कि पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में टीम गठित किया गया. जिसमें नीरज कुमार सिंह एसडीपीओ, पुलिस निरीक्षक ममता कुमारी, मणिकांत कुमार जमुआ थाना प्रभारी, एसआई रोहित कुमार सिंह, एसआई धीरेंद्र कुमार, एएसआई हरेंद्र सिंह, बेले उराँव, वेद प्रकाश पांडेय सहित पुलिस बल शामिल थे. डोमन पहाड़ी मुख्य मार्ग पर वाहन चेकिंग के दौरान सेवरलेट कार जिसका नबंर बीआर1पीबी 7397 ऊपर से बंगाल नम्बर डब्ल्यूबी74के 6677 को जप्त किया गया. जांच के दौरान विभिन्न तरह के ब्रांड का लगभग 500 बोतल बरामद किया.
इस दौरान मो कलाम उम्र 35 वर्ष, शाकिन रूपनगर थाना व जिला सहरसा बिहार, मो शबाब, उम्र 19 वर्ष, शाकिन राहुआमनी, थाना बनगाँव, जिला सहरसा, बिहार को गिरफ्तार कर लिया गया.
इस बाबत जमुआ थाना में कांड दर्ज कर उत्पाद अधिनियम के तहत जेल भेज दिया गया.

बिजली से परेशान उग्र लोगों ने विभाग के खिलाफ की नारेबाजी

तिसरी (गिरिडीह)। लचर बिजली व्यवस्था के खिलाफ तिसरी प्रखंड के लोग आक्रोशित हैं. पिछले कुछ दिनों से बिजली की आँख मिचौली से लोग खासे परेशान हैं. वहीं मंगलवार की शाम से ही बिजली गुल रहने से गुस्साए युवाओं ने मंगलवार की रात 10 बजे तिसरी पॉवर हॉउस प्रांगण में ही डेरा डाल दिया. युवाओं ने तत्काल बिजली आपूर्ति चालू करने की मांग की और बिजली नहीं आने तक वहीं बैठे रहने की भी बात कही. साथ ही बिजली विभाग और विभाग के एसडीओ के खिलाफ जमकर नारेबाजी की. जिसके बाद मौके पर उपस्थित लोगों ने एसडीओ से फोन पर बात की. जल्द बिजली आने के आश्वासन पर लोग माने और उठकर अपने घर गए. वहीं बिजली आपूर्ति में सुधार नहीं होने पर उग्र आंदोलन की चेतावनी भी दी.

सिविल सर्जन ने किया एसडीएच का औचक निरीक्षण

साहिबगंज। सिविल सर्जन साहिबगंज डॉ० प्रवीण कुमार संथालिया के द्वारा अनुमण्डलीय अस्पताल राजमहल का औचक निरक्षण किया गया. जिसमें ओपीडी, आईपीडी, प्रसव कक्ष, पेशेंट वार्ड, एनसीडी, क्लिनिक, कुपोषण उपचार केन्द्र, युवा मैत्री कक्ष, प्रयोगशाला कक्ष, उपस्थिति पंजी एवं अस्पताल में साफ -सफाई आदि का निरीक्षण किए. निरीक्षण के दौरान एक स्वास्थ्य कर्मी बिना सूचना के अनुपस्थित पाए गए, जिससे स्पष्टीकरण पूछने का निर्देश दिए कि किन परिस्थितियों में आप अनुपस्थित थे. वहीं निरीक्षण के दौरान सिविल सर्जन के द्वारा उपाधीक्षक अनुमण्डलीय अस्पताल राजमहल, प्रखंड कार्यक्रम प्रबंधक एवं उपस्थित सभी पारा मेडिकल कर्मियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए समय पर ड्यूटी आकर मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने, साथ ही स्वास्थ्य विभाग के अंतर्गत चलने वाले सभी प्रोग्राम का रेगुलर मॉनिटरिंग एवं उपलब्धियों का रिव्यू करने को कहा.

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
पटलावती नर्सिंग होम
संचालक-प्रमोद यादव व पूनम कुमारी
इंद्र चौक गम्हरियाटांड
प्रखंड-तिसरी जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
गुणानंद महतो
समाजसेवी सह जेबीकेएसएस नेता
गोमिया विधानसभा क्षेत्र
आवास रु कसमार (बोकारो)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
हारु रजवार
मुखिया संघ अध्यक्ष
कसमार प्रखंड (बोकारो)
(मुखिया, पोंडा पंचायत, कसमार प्रखंड)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
मो हसिमुद्दीन
मुखिया, पंचायत-सिंघो
प्रखंड-तिसरी
जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
मो मुनीबुद्दीन अंसारी
अध्यक्ष, बीस सूत्री कार्यान्वयन समिति प्रखंड-तिसरी
जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
महेश शर्मा
समाजसेवी सह संवेदक
कसमार प्रखंड (बोकारो)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
बबिता देवी
मुखिया, हिसिम पंचायत
कसमार प्रखंड (बोकारो)

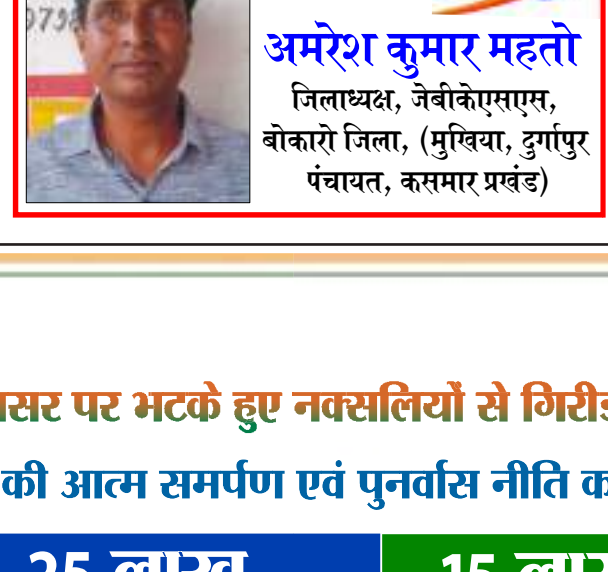

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
डॉ सलीम
समाजसेवी सह बगोदर विधानसभा से प्रत्याशी
प्रखंड-बिरनी जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
सजदा खातून
सदस्य, जिला परिषद मध्य भाग
प्रखंड-बिरनी जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
सदानंद प्रसाद वर्मा
प्राचार्य, उत्क्रमित उच्च विद्यालय टाँगटोना
कसमार प्रखंड (बोकारो

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
लक्ष्मण कुमार नायक
निवर्तमान उपाध्यक्ष
बोकारो जिला बीस सूत्री समिति
निवास रु दांतू कसमार (बोकारो)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
ऋषिकेश मरांडी
अंचल अधिकारी
अंचल-पीरटांड़ जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
दीपक कुमार
थाना प्रभारी, हारिलाडीह ओपी जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
रवि कुमार
पंचायत समिति सदस्य
पोंडा पंचायत
कसमार प्रखंड (बोकारो)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
दिलीप कुमार महतो
पंचायत समिति सदस्य
बरईकला पंचायत दक्षिणी
कसमार प्रखंड (बोकारो)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
मिथलेश साह
प्रखंड अध्यक्ष
राष्ट्रीय जनता दल
प्रखंड-बेंगाबाद जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
श्री दिगम्बर जैन बीसपंथी कोठी मधुबन
अध्यक्ष - अजय कुमार जैन,
महामंत्री - अरविंद राव दोशी,
प्रबंधक - कपिल गांधी चौगुले
एवं कर्मचारियों संघ

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
अमरेश कुमार महतो
जिलाध्यक्ष, जेबीकेएसएस,
बोकारो जिला, (मुखिया, दुर्गापुर पंचायत, कसमार प्रखंड)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
मंजू देवी
मुखिया, सिंहपुर पंचायत
कसमार प्रखंड (बोकारो)

मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना को लेकर नुक्कड़ नाटक आयोजित

कसमार (बोकारो)। राह सोसाइटी खैराचातर की ओर से बोकारो जिले के जरीडीह प्रखंड के आठ गांवों में मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना को लेकर बुधवार को नुक्कड़ नाटक के माध्यम से जागरुकता कार्यक्रम की शुरुआत की गई. इस दौरान ग्रामीणों को मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना के बारे विस्तृत जानकारी देते हुए बताया गया कि अब 21 से 50 वर्ष की महिलाओं को झारखंड सरकार हर महीने एक हजार रुपये की सम्मान राशि उनके एकाउंट में भेजेगी. इस दौरान संस्था के टीम लीडर कुमार गौरव ने बताया कि यह अभियान का समापन 17 अगस्त को होगा. इसके तहत जरीडीह प्रखंड के कल्याणपुर, बाराडीह, गांगजोरी, चिलगड्डा, अराजु, अरालडीह, बरमसिया एवं टोंडरा में मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना को लेकर जागरुकता हेतु नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया जाएगा. मौके पर नुक्कड़ नाटक टीम के कलाकार हबीब नाज, रामकिसुन महतो, टीम लीडर कुमार गौरव, सुनील कालिंदी, किशोर कालिंदी, पायल, सावित्री, गौतमी व अन्य लोग मौजूद थे.

पल्स पोलियो अभियान को लेकर प्रशिक्षण शिविर आयोजित

कसमार (बोकारो)। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र कसमार के सभागार में आगामी 25 अगस्त से 27 अगस्त तक चलने वाले पल्स पोलियो कार्यक्रम को लेकर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया. इस शिविर में सेविका, सहिया एवं ग्रामीणों को प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ प्रफुल्ल महतो की उपस्थिति में पल्स पोलियो अभियान की विस्तृत जानकारी दी गई. इस दौरान स्वास्थ्य विभाग के एमटीएस शैलेश ठाकुर द्वारा प्रशिक्षण के क्रम में पोलियो बीमारी के विषय में विस्तार से बताया गया. एफएम रौशन कुमार ने सभी कर्मियों को अपने प्रतिदिन के कार्य के विषय में जानकारी देते हुए अभियान को सफल बनाने की अपील की. एमपीडब्ल्यू अविनाश रंजन द्वारा पल्स पोलियो कार्यक्रम के दौरान बूथ के दिन टैली शीट भरने, दवा का उठाव, समय बूथ समय खोलने एवं माइक्रोप्लान अनुसार सही से कार्य करने, हाउस मार्किंग ठीक से करने का निर्देश दिया गया. इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कसमार प्रखंड अंतर्गत विभिन्न गांव की सेविका एवं वोलेन्टियर उपस्थित थे.

78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर भटके हुए नक्सलियों से गिरीडीह पुलिस की अपील

आत्मसमर्पण कर झारखण्ड सरकार की आत्म समर्पण एवं पुनर्वास नीति का लाभ उठाएं मुख्य धारा से जुड़े

1 करोड़			25 लाख			15 लाख		10 लाख	
MISIR BESRA @ BHASKAR @ SUNIRMAL JI @ SAGAR S/O DARPAN BHASKAR VII MADANDIH PS PIRTAND DIST GIRIDIH (PBM)	PRAYAG MANJHI @VIVEK@ FUCHAN@NAG O MANJHI @KARAN D S/O LATE CHARKU MURMU VILL DALLUBEDA, PS-TUNDI, DIST-DHANBAD (CCM)	ANAL DA@ TUFAN@ PATIRAM MANJHI@ RAMESH S/O LENGRA MARANDI @TOTO MARANDI@ CHATTU VILL DIWANDIH, PS PIRTAND, GIRIDIH (CCM)	AJAY@ AJAY MAHTO @TIGER @ BASUDEV @ ANJAN @MOCHHU @SHRIKANT S/O CHANDO LAL MAHTO@ PREM CHAND MAHTO VILL- NAWADIH, PANDEDIH, PS-PIRTAND, GIRIDIH (SAC)	RAGHUNATH HEMBRAM @NIRBHYA JEE@ CHANCHAL@ BIRSEN JEE S/O- BISHU HEMBRAM VILL- JARIDIH, PS-DUMRI, GIRIDIH (SAC)	CHAMAN@ LAMBU@ KARAMCH AND HANSDA S/O MARANG DA VILL BELAYANDI (DONARAB ERA), PS- PIRTAND, GIRIDIH (SAC)	RANVIJAY MAHTO@ RANJAY@ NEPALI S/O DUBLAL MAHTO VILL BAHRATAND, PS-CHANDRA PURA, DIST- BOKARO (RCM)	SANJAY MAHTO @SANTOS BASUDEV@ BASUKO S/O LATE MAHDO MAHTO@ LODHA MAHTO VILL- GAMHRA, PS- KHUKHRA, DIST-GIRIDIH (ZCM)	RAMDAYA L MAHTO @ BACHAN DA S/O GULAB MAHTO VII PIPRADIH PIRTAND DIST GIRIDIH (ZCM)	SAHEBRAM MANJHI S/O PANDU MANJHI VILL KARANDO P.S. PIRTAND DIST GIRIDIH (ZCM)

आत्मसमर्पण नीति :- झारखंड सरकार के प्रत्यर्पण एवं पुनर्वास नीति के तहत आत्मसमर्पित नक्सलियों को निम्नांकित सुविधा दी जाएगी :-
1. पुनर्वास अनुदान श्रेणी ए० (ZCM एवं उससे उपर) को पाँच लाख तथा श्रेणी बी० (SZM एवं उससे नीचे) को दो लाख पचास हजार राशि दी जाएगी
2. पुरस्कार की राशि दी जाएगी
3. जीवन बीमा (प्रत्यार्पित नक्सली को पाँच लाख एवं 05 आश्रित के लिए एक-एक लाख)
4. मकान किराया (जमीन आवंटन नहीं होने पर 10 वर्ष तक 1500/- रूपया प्रतिमाह)
5. शिक्षण शुल्क (आत्मसमर्पित नक्सली/उसके बच्चे को 25000/- रूपया वार्षिक)
6. हथियार के साथ आत्मसमर्पण पर नियमानुसार अलग से राशि
7. गृह निर्माण हेतु 04 डिसमिल जमीन
8. गृह निर्माण हेतु 50000/- रूपया
9. व्यावसायिक शिक्षा
10. न्यायालय संबंधी व्यय
11. नियोजन अथवा सरकारी सेवा

निवेदक : पुलिस अधीक्षक गिरिडीह

इंसाफ की डगर पर

हमारे पास दुनिया का सबसे विशद संविधान है. दुनिया में सांविधानिक परम्पराएं तकरीबन साढ़े तीन सौ साल पुरानी हैं. लिखित संविधान तो और भी बाद के हैं. 1787में अमेरिकी संविधान से इसकी शुरुआत हुई. आस्ट्रियो हंगेरियन संघ ने 1867 में आस्ट्रिया में संविधान लागू किया. ब्रिटिश संविधान तो लिखा ही नहीं गया, परंपराओं से बनता चला गया. लोकतंत्र का दबाव था कि उन्नीसवीं सदी में अनेक सम्राटों एवं राजाओं ने अपने देशों में संविधान की रचना की. भारतीय संविधान की रचना के समय उसके निर्माताओं के सामने नागरिकों के बुनियादी अधिकारों की रक्षा, लोकतंत्र, संघीय और राज्यों के कार्यक्षेत्र की स्पष्ट व्यवस्था, सामाजिक न्याय और इस देश की व्यापक संस्कृति की रक्षा जैसे सवाल थे. सभ्यता पर आरंभ से ही किसी-न-किसी तरह से न्याय का सवाल दबाव में रहा है. साथ ही, यह भी सच है कि अन्याय से बचाव के लिए राज और समाज में, सीमित ही सही, सक्रियता भी रही है. आज की विचित्र स्थिति यह है कि न्याय-वंचित लोगों को वंचना से बाहर निकालने का प्रयास पूरी तरह से निष्क्रिय नहीं हो गया हो, तो भी आपराधिक शिथिलता की चपेट में जरूर पड़ गया है. न्याय-वंचना से बचाव का प्रयास न सिर्फ आपराधिक शिथिलताओं में पड़ गया है, बल्कि न्याय का सवाल उठानेवाले के प्रति नफरत का माहौल भी लगातार बनाया जाता रहा है. माननीय अदालत का काम अन्याय हो जाने के बाद न्याय देने का होता है, अन्याय को होने से रोकना तो समग्र जन-समाज के सतत और सचेत प्रयास से ही संभव हो सकता है. प्रतिभावान लोगों के मन में 'प्रतिभाहीन लोगों' के मानवाधिकार के प्रति पर्याप्त सम्मान के अभाव के चलते अन्याय की प्रवृत्ति की विनाशकारी क्षमता और घटना में कोई कमी नहीं आती है. भारत अपनी आजादी का 'अमृत-महोत्सव' मना रहा है, तो कम-से-कम पिछले दो सौ साल की राजनीतिक पृष्ठभूमि को जरूर याद किया जाना चाहिए. खासकर, इसलिए भी कि आज विश्व-युद्ध की स्थिति न हो तो भी 'विश्वास-युद्ध' का घना माहौल तो है ही. मनुष्य निर्मित बुनियादी संरचना के लाभ तक अंतिम आदमी की पहुंच को सुनिश्चित करना उत्तरदायी लोकतांत्रिक राज-व्यवस्था का मौलिक कर्तव्य होता है. वास्तविक स्थिति यह है कि विश्व-व्यवस्था में लोकतंत्र का यह कर्तव्य-पथ ही बदल गया! सामाजिक समरसता और संसाधनिक संतुलन के बीच के संबंध की अनदेखी नहीं की जा सकती है. कभी-कभी तो सामान्य नागरिकों को ऐसा एहसास होने लगता है कि 'राज'ही 'अराजक'हो गया है या बहुत तेजी से ऐसी स्थिति बनाने में लग गया है.1990 से दुनिया में जो बदलाव आने शुरू हुए, वे निश्चित ही पहले के सारे बदलावों से भिन्न प्रकार के रहे हैं. अद्भुत है कि विश्व-युद्धों के ताप से निकल आई राजनीतिक व्यवस्था की मानसिकता पर आज किसी भी तरह के, किसी खतरे के, डर का कोई भाव ही नहीं बचा है! इस बदलाव में पूंजी और मुनाफा पर ही जोर है, श्रम और मनुष्य सबसे उपेक्षित है. शोषण, अन्याय और उत्पीड़न का ऐसे खेल में लगने का राजनीतिक दुस्साहस 20वीं सदी के अंतिम दो दशक के पहले की राजनीति में नहीं था. 20वीं दशक के अंतिम और 21वीं सदी के आरंभिक दो दशक के बाद अब तो लग रहा कि लोकतंत्र का ढांचा शोषण, अन्याय और उत्पीड़न से होनेवाले विक्षोभ और आंदोलन को रोकने, मोड़ने और नियंत्रित करने के लिए ही खड़ा किया गया था.

> आज की विचित्र स्थिति यह है कि न्याय-वंचित लोगों को वंचना से बाहर निकालने का प्रयास पूरी तरह से निष्क्रिय नहीं हो गया हो, तो भी आपराधिक शिथिलता की चपेट में जरूर पड़ गया है.

सुभाषित

भेदे गणाः विनश्येयुः भिन्नास्तु सुजयाः परैः।
तस्मात् संघातयोगेन प्रयतेरन् गणाः सदा।।

गणराज्य में अगर एकता न हो तो वह नष्ट हो जाता है, क्योंकि एकता न होने पर शत्रु को उसे नष्ट करने मे आसानी होती है. इसलिए गणराज्य में आपसी मतभेदों के बावजूद नागरिकों के बीच हमेशा आंतरिक एकता बनी रहनी चाहिए.

विकसित भारत को चाहिए नई दिशा

विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने के लिए हम आज तैयार हैं, इसमें संशय नहीं. लेकिन यह समझना भी जरूरी है की आगे की यात्रा थोड़ी और दुर्गम होगी. हमें अपने प्रयासों को बढ़ाना होगा, नीतियों को लक्ष्य के अनुरूप उठाना होगा एवं मानव संसाधन का समुचित इस्तेमाल करना होगा. पांच खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए यह निहायत जरूरी है कि हम अपने संसाधनों की उत्पादकता बढ़ाएं.

• देश-काल

प्रमोद पाठक

आज जब हम भारत का 78 वां स्वाधीनता दिवस मना रहे हैं, हमारे लिए, जरूरी है यह मंथन करना कि हम आने वाले वर्षों में अपने देश को कहां पहुंचाना चाहते हैं. वैसे तो हमारा एजेंडा बिल्कुल स्पष्ट है कि हम भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाना चाहते हैं. लेकिन उसके लिए जरूरी है यह जानना कि हमें क्या-क्या तैयारी करनी होगी, क्या-क्या बदलाव लाने होंगे और किस तरह के प्रयास करने की आवश्यकता होगी. इन बातों पर चर्चा करने से पहले हमें भारत के बारे में जो कुछ स्थापित तथ्य है उन पर मनन करने की आवश्यकता है. निश्चित तौर पर यह तथ्य हमें उत्साहित करने वाले हैं और हमको यह विश्वास दिलाते हैं कि हम आने वाले कुछ वर्षों में हम विकसित राष्ट्र बनने का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं. यदि आज के वैश्विक परिपेक्ष में बात करें तो दुनिया भर में तमाम राजनीतिक और आर्थिक उथल-पुथल के बावजूद हमारी स्थिति अन्य बड़ी अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अपेक्षाकृत संतोषजनक है. कहने को तो हम अपने को औरों से बेहतर भी मान सकते हैं, लेकिन उचित यही होगा कि हम बहुत ऊंचा आकलन न करें. आज जब हम दुनिया भर के लोकतांत्रिक देशों से अपनी तुलना करते हैं तो खुद को अच्छी स्थिति में पाते हैं. चाहे पास पड़ोस के बांग्लादेश या नेपाल की बात हो या फिर हम पर 200 वर्षों से ज्यादा शासन करने वाले ब्रिटेन की, हमारी लोकतांत्रिक परंपरा आज भी सुदृढ़ है. पिछले लोकसभा चुनाव के परिणाम इस मामले में ठीक ही रहे कि एक स्वस्थ लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप सत्ता और विपक्ष के बीच एक संतुलन दिखाई दिया, जो लोकतंत्र के स्वस्थ और सफल भविष्य के लिए जरूरी होता है. इतिहास साक्षी है कि जब सत्ता और विपक्ष के बीच की खाई बड़ी होती है और सत्ता पर काबिज लोग प्रचंड बहुमत से चुनकर आते हैं तो लोकतंत्र तानाशाही की दिशा में बढ़ जाता है. लोकतंत्र की मजबूती के लिए विपक्ष की मजबूती भी जरूरी होती है. आज हमारी स्थिति विकास के अन्य मापदंडों पर भी बेहतर ही कही जाएगी. उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार भारत आज दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ने वाले अर्थव्यवस्थाओं में से एक है. सकल घरेलू उत्पाद के पैमाने पर आज हमारा देश एक अच्छी गति से आगे बढ़ रहा है, जो प्रगति के लिए आवश्यक है. राजनैतिक स्थिरता और स्थाई सरकार पर कोई संशय नहीं है और विकास के लिए यह एक आवश्यक शर्त होती है. राष्ट्रीय महत्व के दूरगामी फैसले लेने के लिए यह जरूरी होता है. विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने के लिए हम आज तैयार हैं इसमें संशय नहीं. लेकिन यह समझना भी जरूरी है की आगे की यात्रा थोड़ी और दुर्गम होगी. हमें अपने प्रयासों को बढ़ाना होगा, नीतियों को लक्ष्य के अनुरूप उठाना होगा एवं मानव संसाधन का समुचित इस्तेमाल करना होगा. पांच खरब डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने के लिए यह निहायत जरूरी है कि हम अपने संसाधनों की उत्पादकता बढ़ाएं. यहां यह भी समझ लेना आवश्यक है कि तमाम संसाधनों की उत्पादकता मानव संसाधन की उत्पादकता एवं गुणवत्ता पर निर्भर होती है. आज हमारे देश की सबसे बड़ी शक्ति हमारा युवा वर्ग है, जिसे हम देश की प्रगति के लिए पूरी तरह इस्तेमाल नहीं कर पा रहे. वित्तीय प्रबंधन के साथ-साथ मानव संसाधन प्रबंध भी जरूरी होता है. हमारी मानव संसाधन प्रबंधन नीतियां बड़ा बदलाव खोज रही हैं. विकसित राष्ट्र बनने के लिए देश के सारे प्रदेशों को अपनी क्षमता के अनुरूप आगे बढ़ना होगा. उदाहरण के तौर पर यदि हम केवल झारखंड और पास के प्रदेश बिहार की बात करें तो हम पाएंगे कि इन प्रदेशों की हालत विकास के पैमाने पर काफी कमजोर है. और ऐसा इसलिए नहीं है कि इन प्रदेशों में भौतिक संसाधनों की कमी है. वह तो प्रचुर मात्रा में हैं. कमी है तो विकास मूलक नीतियों की, विकासोन्मुख बुनियादी ढांचे की और विकास प्रेरक संस्कृति की. यह स्थिति और भी कई प्रदेशों की है. इसके लिए आवश्यक होगा केंद्र और प्रदेश की सरकारों का समन्वय एवं तालमेल. दलीय भावना से ऊपर उठकर.

सवाल देश की प्रगति का है, किसी दल या प्रदेश के वाह वाही लूटने का नहीं. आज जरूरत है रोजगार मूलक नीतियां बनाने की, रोजगार को बढ़ावा देने वाले उद्योगों को प्रोत्साहित करने की और श्रम आधारित उद्यम को अधिक से अधिक बढ़ाने की. आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अत्यधिक जोर देने से रोजगार नहीं बढ़ेंगे.यदि ईमानदारी से अवलोकन करें तो यह समझ में आएगा कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बढ़ने से रोजगार का सृजन कम होगा. हम दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाले देश हैं और हमारे लिए हाथों को काम देना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए, ताकि युवा वर्ग भटकाव के रास्ते पर ना चले. एक और बात. हमारी श्रम शक्ति की सबसे बड़ी कमजोरी अकुशल श्रमिक हैं. उन्हें रोजगार मुहैया कराना सबसे बड़ी चुनौती होगी. हम सकल घरेलू उत्पाद बढ़ा सकते हैं, पांच खरब डालर की अर्थव्यवस्था बन सकते हैं, प्रति व्यक्ति आय का आंकड़ा भी बढ़ा सकते हैं, लेकिन हर व्यक्ति को एक न्यूनतम आय चाहिए. उसके लिए सीधे हस्तक्षेप करना होगा. साथ ही विनिर्माण क्षेत्र में हमें चीन या वियतनाम से सीखना होगा. दक्षिण कोरिया, ताइवान या जापान ने भी यही मार्ग अपनाया था.

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

• बोधि-वृक्ष

सुज्ञ

श्रेयस्कर नहीं पूर्वाग्रह

सत्य खोजी को चाहिए, चाहे कैसे भी उसके दृढ और स्थापित पूर्वाग्रह हो. चाहे वे कितने भी यथार्थ प्रतीत होते हो. जिस समय उसका चिंतन सत्य की शोध में सलग्न हो, उस समय मात्र के लिए तो उसे अपने पूर्वाग्रह या कदाग्रह को तत्क्षण त्याग देना चाहिए. अन्यथा वे पूर्वाग्रह, सत्य को बाधित करते रहेंगे. सोचें कि मेरा चिंतन ,मेरी धारणाओं, मेरे आग्रहों से प्रभावित तो नहीं हो रहा? कभी कभी तो हमारी स्वयं की 'मौलिक विचारशीलता' पर ही अहं उत्पन्न हो जाता है. और अहं, यथार्थ जानने के बाद भी स्वयं में, विचार परिवर्तन के अवसर को अवरोधित करता है. सोचें कि कहीं मैं अपनी ही वैचारिकता के मोहजाल में, स्वच्छंद चिंतन में तो नहीं बह रहा? कभी कभी तो अजानते ही हमारे विश्लेषण मताग्रह के अधीन हो जाते है. प्रायः ऐसी स्थिति हमें, सत्य तथ्य से भटका देती है. प्रायः हमारी वैचारिकता पर किसी न किसी विचारधारा का प्रभाव होता है. तथ्यों की परीक्षा-समीक्षा करते हुए, अनायास ही हमारा पलड़ा सत्य विरूद्ध झुक सकता है. और अक्सर हम सत्य के साथ 'वैचारिक पक्षपात' कर बैठते है. इस तरह के पक्षपात के प्रति पूर्ण सावधानी जरूरी है. पूर्व स्थापित निष्कर्षों के प्रति निर्ममता का दृढ भाव चाहिए. सम्यक दृष्टि से निरपेक्ष ध्येय आवश्यक है. ₹यह निश्चित है कि कोई एक 'परम सत्य' अवश्य है. और सत्य 'एक' ही है. सत्य को जानना समझना और स्वीकार करना हमारे लिए नितांत ही आवश्यक है.₹ सत्य पर इस प्रकार की अटल श्रद्धा होना जरूरी है. सत्य के प्रति यही आस्था, सत्य जानने का दृढ मनोबल प्रदान करती है. उसी विश्वास के आधार पर हम अथक परिश्रम पूर्व सत्य मार्ग पर डटे रह सकते है. अन्यथा जरा सी प्रतिकूलता, सत्य संशोधन को विराम दे देती है. परीक्षा करें कि विचार, तर्कसंगत-सुसंगत है अथवा नहीं. वे न्यायोचित है या नहीं. भिन्न दृष्टिकोण होने कारण हम प्रथम दृष्टि में ही विपरित विश्लेषण पर पहुँच जाते है. जैसे सिक्के के दो पहलू होते है. दूसरे पहलू पर भी विचार जरूरी है. जल्द निर्णय का प्रलोभन त्याग कर, कम से कम एक बार तो विपरित दृष्टिकोण से चिंतन करना ही चाहिए. परिक्षक से सदैव तटस्थता की अपेक्षा की जाती है. सत्य सर्वेक्षण में तटस्थ दृष्टि तो आवश्यक ही है. जो वस्तु जैसी है, उसे यथारूप में ही मनन करें और उसे प्रस्तुत भी उसी यथार्थ रूप में करें. न उसका कम आंकलन करें न उसमें अतिश्योक्ति करें न अपवाद मार्ग का अनुसरण करें.

शिक्षा व्यवस्था स्वाधीन राष्ट्र की सच्ची पूंजी

• शिक्षा-व्यवस्था

राजीव थेपड़ा

स्वाधीनता के पश्चात ऐसे बहुत सारे विषय हैं, जिन पर सोचा और बोला तो बहुत कुछ गया है, लेकिन जिनके सुधार के लिए अब तक कुछ भी नहीं किया गया है. किंतु जो देश के जन-जन के हित में है और यह हित न केवल संसाधनों की बचत के रूप में है, बल्कि देश के करोड़ों लोगों के करोड़ों घंटों के बचाव बचत के रूप में भी हैं. इस विषय पर जब भी हम एक विकसित और गर्वित भारत की बात करते हैं, तो उसमें स्वतः ही यह विषय शामिल हो जाता है. क्योंकि जब तक देश के होनहारों को सम्यक शिक्षा नहीं प्राप्त होगी, तब तक देश के बारे में चाहे जो भी कुछ क्यों ने कहा जाए या सोचा जाए, वह अपने आप में तनिक भी सार्थक नहीं होगा. तो सचमुच यदि हम देश को एक विकसित राष्ट्र बनाते हुए इसे सही अर्थों में विश्व का सिरमौर राष्ट्र बनाना चाहते हैं, तो हमें अपने देश की शिक्षा व्यवस्था पर विचार करना ही होगा और इसमें आमूल चूल परिवर्तन करते हुए देश के समस्त होनहारों को एक नई दिशा देनी होगी. सरकारी शिक्षा जिसके लगभग पतन-प्रायः हो जाने के कारण न केवल करोड़ों बच्चे अच्छी एवं स्तरीय शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, अपितु इन तमाम करोड़ों बच्चों के अभिभावकों का अमूल्य समय व धन भी नष्ट होता है. अपने बच्चों के उचित भविष्य निर्धारण के लिए चिंतित और परेशान अभिभावकों को सरकारी शिक्षा की अधोगति की वजह से निजी विद्यालयों में प्रविष्ट करवाना पड़ता है, जिसका परिणाम उन अभिभावकों के खून-पसीने की कमाई का एक अच्छा हिस्सा पढ़ाई के खर्च में चला जाता है. यहां पर एक प्रश्न और भी उठता है कि जब निजी स्कूलों में वही शिक्षक सरकारी स्कूलों के अनुपात में अत्यंत कम मिल रहे वेतन में भी बच्चों की उच्च स्तरीय शिक्षा का प्रबंध देखते हैं, तो फिर वही शिक्षक सरकारी स्कूलों में इतने अराजक क्यों हो जाते हैं? जबकि उन्हें वहां किसी भी अनुपात में बहुत ही अच्छा वेतन मिलता है! देश में लाखों-लाख शिक्षक हैं, जो सरकारी विद्यालयों में पढ़ा रहे हैं, क्या उनके दिल में यह बोध कभी नहीं पनपता कि उन्हें मिल रहे इतने उच्च वेतन के बदले उन्हें बच्चों को एक स्तरीय शिक्षा देनी चाहिए, जो उनका कर्तव्य व दायित्व है और उसी एकमात्र उद्देश्य के लिए उनका चयन उन विद्यालयों में हुआ है. देश के हजारों विद्यालयों सरकारी विद्यालयों में कतिपय शिक्षक ऐसे भी हैं, जो खुद को मिल रहे वेतन का भी बड़ा हिस्सा खर्च करके बच्चों को जी जान लगाकर शिक्षा एवं संस्कार देते हैं. लेकिन सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों का एक बड़ा अनुपात अपने दायित्व बोध से सदा विमुख रहा है, इसके चलते अभिभावकों को अपने बच्चों को ब्रांडेड स्कूलों तक में दाखिला दिलवाना पड़ता है और यहां से शुरू होता है उनके लिए परेशानियों का एक नया दौर. भारी-भरकम स्कूल फीस के अलावा घर से स्कूल तक जाने के प्रबंध के रूप में बसों स्कूल द्वारा की गई बसों की व्यवस्था का खर्च भी उतना ही भारी-भरकम होता है, जो एक आम अभिभावक की क्षमता के बाहर होता है. किंतु उसके बावजूद अपने बच्चों को उचित मुकाम तक पहुंचाने के लिए चिंतित अभिभावकों द्वारा कर्ज लेकर भी उस खर्च को वहन किया जाता है. लेकिन बात सिर्फ इतनी सी नहीं है, ब्रांडेड स्कूलों में बच्चों की भर्ती में स्कूलों द्वारा डोनेशन भी लिए जाते हैं और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि 5 किलोमीटर 10-15 से लेकर 20 किलोमीटर तक दूर अवस्थित इन स्कूलों तक बच्चों के पहुंचने का खर्च और आने-जाने में लगने वाला समय और उस पर पड़ने वाली आर्थिक लागत को यदि जोड़ा जाए तो एक ऐसा हैरान कर देने वाला आंकड़ा सामने आता है, जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते! देश के करोड़ों बच्चे जो दूरदराज के क्षेत्रों में अवस्थित स्कूल जाते हैं, उनको रोज स्कूल जाने आने में ही 2 से 3 घंटे तक भी लग जाते हैं और महीने का खर्च दो से तीन हज़ार के लगभग आता है और यदि अभिभावक उन्हें छोड़ने जाते हैं, तो ये 2 से 3 घंटे उन करोड़ों अभिभावकों के भी बेवजह नष्ट होते हैं. साथ ही उनका भी पेट्रोल का खर्च लगता है. ऐसे में यदि सरकारी स्कूलों में यदि एक जैसी और उच्च स्तरीय पढ़ाई का प्रबंध हो, तो बच्चे अपने घर के निकटतम स्कूलों में पढ़ पाने में सक्षम होंगे और प्रत्येक बच्चा अपने घर के निकटतम स्कूल जाने के लिए पैदल ही अपने स्कूल जा पाने में सक्षम होगा.

> सरकारी शिक्षा जिसके लगभग पतन-प्रायः हो जाने के कारण न केवल करोड़ों बच्चे अच्छी एवं स्तरीय शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, अपितु इन तमाम करोड़ों बच्चों के अभिभावकों का अमूल्य समय व धन भी नष्ट होता है. अपने बच्चों के उचित भविष्य निर्धारण के लिए चिंतित और परेशान अभिभावकों को सरकारी शिक्षा की अधोगति की वजह से निजी विद्यालयों में प्रविष्ट करवाना पड़ता है.

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

मोदी सरकार और हिडनबर्ग का खुलासा

• सियासत

शकील अख्तर

प्रधानमंत्री मोदी कई संकटों में घिरे, मगर बचे रहे. उनके पास मीडिया है जो उनके खिलाफ जाने वाली हर बात को दबा देता है. उनके पक्ष में रोज नई हिंडनबर्ग के नए खुलासे के बाद ऐसा ही लग रहा है कि मोदी जी का कवच बना मीडिया थोड़ा सहमा हुआ है. टीवी चैनलों पर खबर चल रही है. डेढ़ साल पहले जब हिंडनबर्ग का पहला खुलासा आया था तो मोदी जी लोकसभा में 303 सांसदों वाली पार्टी के नेता थे. राहुल ने लोकसभा में सवाल उठाया तो उन्हें लोकसभा से ही निकाल दिया गया था. मगर उसी सत्रहवीं लोकसभा में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें वापस भेजा. कहानियां पेश करता है. जनता को हिन्दू-मुसलमान में उलझाए रखता है. अगर यह सेफ गार्ड एक दिन को भी हट जाए तो मोदी जी के लिए अपना विकेट बचाना मुश्किल होगा. अभी हिंडनबर्ग के नए खुलासे के बाद ऐसा ही लग रहा है कि मोदी जी का कवच बना मीडिया थोड़ा सहमा हुआ है. टीवी चैनलों पर खबर चल रही है. डेढ़ साल पहले जब हिंडनबर्ग का पहला खुलासा आया था तो मोदी जी लोकसभा में 303 सांसदों वाली पार्टी के नेता थे. राहुल ने लोकसभा में सवाल उठाया तो उन्हें लोकसभा से ही निकाल दिया गया था. मगर उसी सत्रहवीं लोकसभा में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें वापस भेजा. और अब 18 वीं लोकसभा में जनता ने उन्हें न केवल दो जगह से जीता कर वापस भेजा, बल्कि मोदी जी की 303 सीटों को 240 भी कर दिया. 240 मतलब अल्पमत! 543 की लोकसभा में साधारण बहुमत के लिए भी 272 सीटें चाहिए. मोदी जी तीसरी बार जरूर प्रधानमंत्री बन गए. नेहरू से बराबरी का खूब प्रचार भी करवा लिया, मगर पिछली दोनों बार की सीटों से बहुत कम ला पाए. 2014 में पहली बार प्रधानमंत्री बनते समय भी 282 सीटें जीते थे. तो इस बार अल्पमत में आते ही डर भी खत्म हो गया. पिछले दस साल खुद भाजपा आरएसएस भी डर में ही रहे. बाकी संवैधानिक इंस्टिट्यूशन और ज्यादा डरे हुए. और मीडिया सबसे ज्यादा डरा हुआ. एक ही आदमी नहीं डरा. पूरा इंस्टिट्यूशन बन गया वह निकल पड़ा सड़कों पर. उस समय 303 सीटों का गुमान था. और 400 पार के ख्वाब थे. तो राहुल के खिलाफ हर कार्रवाई की गई. एसपीजी की सुरक्षा हटाई. 55-56 घंटे ईडी ने पूछताछ की. मगर कुछ नहीं निकला. लोकसभा की सदस्यता छीनी. घर छीना. बीस से ज्यादा मुकदमे चला रखे हैं. जिन्हें एक जगह नहीं कर रहे. सड़क पर गिराया तक गया. जब हाथरस जा रहे थे दलित परिवार से मिलने जिनकी लड़की सामूहिक बलात्कार में मारी गई थी तो पुलिस ने धक्के मारकर गिराया. क्या नहीं किया? किसी एक नेता के खिलाफ आजादी के बाद इतनी कार्रवाइयां करने का और कोई उदाहरण तो बताइए! मगर उसका जवाब इस नेता ने दो तरह से दिया. एक-दो बार पूरा हिन्दुस्तान नाप दिया. दूसरे पूरे हिन्दुस्तान के विपक्षी दलों को एक कर दिया. परिणाम सामने है. मोदी जी अल्पमत में और राहुल पूरे दम के साथ नेता प्रतिपक्ष. बाकी सब इसके फाल आउट हैं. कमजोर का साथ कोई नहीं देता. मोदी जी को अच्छी तरह समझ में आ रहा होगा. जिस मीडिया पर इतना भरोसा था वह भी हिंडनबर्ग की रिपोर्ट पर सवाल कर रहा है. करे भी क्यों नहीं? शेयर बाजार और बैंक इन दोनों चीजों पर झूठ चल नहीं सकता. सारा कारोबार ही इन पर टिका है. मध्यमवर्ग का सारा पैसा इन्हीं दोनों जगह है. बाकी सब जगह झूठ बोलने से आर्थिक नुकसान नहीं होता. मगर यहां अगर शेयर बाजार और बैंकों में कोई बड़ा कांड हुआ तो मध्यम वर्ग तो मिटेगा ही, यह मीडिया भी बच नहीं सकेगा. अभी एक उद्योगपति के चैनल से सैकड़ों लोग नौकरी से निकाले गए. इस उद्योगपति ने चालीस साल पहले भी एक बड़ा अंग्रेजी अख़बार निकाला था. बड़ी-बड़ी तनखाओं पर पत्रकारों को लाया था. मगर जब लगा कि अपना अख़बार चलाने से सस्ता दूसरे अखबारों के जरिए काम करना है तो फिर अचानक सब पत्रकारों और दूसरे स्टाफ को मंझधार में छोड़कर अख़बार बंद कर दिया. अब आधे से ज्यादा मीडिया खरीद लिया है. लेकिन उसके लिए सम्मान या प्रोफेशनल माहौल देने का सवाल ही नहीं. जैसे लाला के यहां लोग काम करते हैं वैसी स्थिति कर दी. उधर मोदी जी तो सम्मान करते नहीं है.

> टीवी चैनलों पर खबर चल रही है. डेढ़ साल पहले जब हिंडनबर्ग का पहला खुलासा आया था तो मोदी जी लोकसभा में 303 सांसदों वाली पार्टी के नेता थे. राहुल ने लोकसभा में सवाल उठाया तो उन्हें लोकसभा से ही निकाल दिया गया था. मगर उसी सत्रहवीं लोकसभा में सुप्रीम कोर्ट ने उन्हें वापस भेजा.

(ये लेखक के निजी विचार हैं)

मीडिया में अन्यत्र

पेरिस ओलिम्पिक का खट्टा-मीठा समापन

फ्रांस की राजधानी पेरिस में 26 जुलाई को प्रारम्भ हुए 33वें ओलिम्पिक खेलों का समापन रविवार को हुआ. 126 पदकों के साथ अमेरिका (40 स्वर्ण) प्रथम, चीन दूसरे तथा जापान तीसरे क्रमांक पर रहा. 140 करोड़ की जनसंख्या वाले भारत ने पिछले टोक्यो ओलिम्पिक में कुल 6 मेडल पाये थे, लेकिन उसमें एक गोल्ड था. इस बार भी उसे कुल जमा 6 ही मिले- एक रजत और 5 कांस्य. उसका क्रमांक 71 रहा. छोटे-बड़े 62 देश ऐसे हैं जिन्हें कम से कम एक स्वर्ण पदक अवश्य मिला है. मनु भाकर एकमेव ऐसी खिलाड़ी रहीं जिन्होंने दो पदक पाये. एकमात्र रजत नीरज चोपड़ा को मिला जिन्होंने पिछली प्रतियोगिता में स्वर्ण जीता था. नीरज इस बार अपने परम्परागत प्रतिस्पर्धी अरशद नदीम (पाकिस्तान) से आगे भाला फेंक नहीं पाये. भारत के प्रदर्शन ने फिर साबित कर दिया कि खेल शक्ति बनने के लिये देश का आकार या जनसंख्या जिम्मेदार नहीं बल्कि सरकारों का रवैया, समाज का नज़रिया, खिलाड़ियों को मिलने वाला समर्थन व सम्मान, संसाधनों व सुविधाओं की उपलब्धता जैसे तथ्य मुख्य कारक होते हैं. पदक तालिका में शीर्ष पर खड़े अमेरिका की जनसंख्या भारत के मध्य वर्ग के बराबर भी नहीं है, तो वहीं दूसरे क्रमांक पर भारत से आकार में काफी छोटा जापान है. चीन तीसरे स्थान पर है जो भारत की ही तरह बड़ी आबादी तथा विशाल भूभाग वाला देश है. जज़्बा- बस यही मायने रखता है. फिर चाहे वह देश का हो या खिलाड़ियों का. भारत में खिलाड़ियों के पास जज़्बा और काबिलियत तो है, लेकिन सरकारें निराश करती है. खेलों को गम्भीरता से लेने वाले राज्यों की संख्या गिनाने के लिये एक हाथ की उंगलियां भी काफी हैं. शेष औपचारिकता निभाते हैं और इस क्षेत्र को भी अपनी सियासत का अखाड़ा मानते हैं. सत्ता से जुड़े लोग खेल संगठनों पर काबिज हैं. जिस संगठन की सरकार से जितनी निकटता होगी वह सरकार से उतना ही अनुदान खींच लाता है शासन से सहूलियतें जुटाई जाती हैं, अध्ययन के नाम पर विदेशी दौरे होते हैं, प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों के अनुपात में बड़ा सा अधिकारियों का दल होता है. टूर्नामेंट के प्रदर्शनों का विश्लेषण नहीं होता, न ही खर्चों की समीक्षा होती है. ओलिम्पिक हों या कोई और स्पर्धा, लौटने पर खराब प्रदर्शन के लिये थोड़ी-बहुत शिकायतें होती हैं या आलोचना होती है, वह भी खिलाड़ियों की. सरकारें, खेल संगठन एवं अधिकारीगण बच निकलते हैं. ऐसे राज्य जो ढंग के दो खिलाड़ी भी पैदा नहीं करते, वे खेल मंत्रालय से करोड़ों रूपये उठा लाते हैं. जिन कथित पिछड़े राज्यों में खिलाड़ियों को विकसित करने की असीम सम्भावना होती है वहां के खिलाड़ी और संगठन पाई-पाई को तरसते हैं.

(देशबंधु)

शब्द चर्चा

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

स्वतंत्रता/स्वच्छंदता

आज हम पूरे उत्साह और उमंग से देश का स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं. यह हम सभी देशवासियों के लिए सौभाग्य और गर्व की बात है, लेकिन इसका दूसरा यह पक्ष यह भी है कि सात दशकों के बाद भी देश की एक बड़ी आबादी आज भी कई प्रकार की पराधीनता झेल रही है, वहीं कुछ लोग कुछ भी करने के लिए स्वच्छंद हो गये. यानी किसी को स्वतंत्रता भी नहीं मिली और किसी को स्वच्छंदता मिल गयी. स्वतंत्रता और स्वच्छंदता दोनों संस्कृत तत्सम संज्ञा स्त्रीलिंग हैं, लेकिन दोनों के बीच पर्याप्त अंतर है. शब्दकोशों के अनुसार स्वतंत्रता का अर्थ है स्वाधीनता, आजादी, मुक्ति, छूट, ढील, बिना किसी बंधन अथवा नियंत्रण के अपनी इच्छानुसार कार्य करने का अधिकार, वहीं स्वच्छंदता का मतलब है अपनी इच्छानुसार आचरण करना, मनमानी, निरंकुशता, अनियंत्रणीय. स्वतंत्रता का भाव सकारात्मक तो स्वच्छंदता का भाव नकारात्मक है. स्वतंत्रता का आशय है बुद्धि-विवेक और राष्ट्रीय-सामाजिक नियमों के प्रति प्रतिबद्धता के साथ अपने ऊपर स्वयं ही शासन. स्वतंत्रता समाज और धर्म के नियमों के अंतर्गत होती है, जबकि स्वच्छंदता समाज और धर्म शास्त्र के नियम के विपरीत चारित्रिक विनाश के लिए होती है. जो नियम कायदों से मुक्त कर दे और किसी भी प्रकार से बंधन में नहीं बांधे, वह स्वच्छंदता है. स्वतंत्रता का अर्थ है हम किसी के अधीन नहीं होंगे, लेकिन किसी कायदे, नियम या कानून को मानेंगे, पालन करेंगे और अपनी स्वतंत्रता को उन नियमों के अंतर्गत ही रखेंगे. स्वतंत्रता और स्वच्छंदता में वही अंतर है, जो संगीत और शोर में होता है. स्वतंत्रता में अनुशासन को मानना जरूरी है और इसके बिना कोई काम किया जाता है तो वह स्वछंदता है. स्वतंत्रता दिवस पर हम सभी देशवासियों को संकल्प लेना चाहिए कि हमें स्वतंत्रता चाहिए, स्वच्छंदता नहीं. स्वतंत्रता नागरिकों को जिम्मेदार बनाती है और स्वच्छंदता अनेक प्रकार के अपराधों की जननी है. हम देश के संविधान, प्रावधान, कानून, सामाजिक-सांस्कृतिक नियमों का सम्मान करते हुए देश को प्रगति के पथ पर अग्रसर करें. जय हिंद!

दमदार लोगों का दमदार देश

• तीर-तुक्का

कुबेर

दमदार लोगों के इस देश को डरपोक और घोंचू लोगों का देश बतानेवाले बांगडुओं के लिए सौ-सौ लानतें. यहां पुलिस से ज्यादा दम अपराधियों में होता है. कहते हैं - दम है तो पकड़ के बता. सरकारी रकम डकारनेवालों के दम का कहीं कोई तोड़ नहीं. कहते हैं - जिसमें दम है, पकड़ ले. बच्चे और जवान सरकारी संपत्तियों को तोड़-फोड़कर आपना दम दिखाते हैं. गरीब और मजदूर पच्चीस-पचास की रोजी कमाकर भी दमदारी से अपनी गृहस्थी खींच ले जाते हैं. मुझे मिलनेवाले लोग तो अक्सर दमदार होते हैं. मित्र भी, सहकर्मी भी, परिचित भी और अपरिचित भी. इनमें से कुछ तो सार्वत्रिक-दमदार होते हैं. ये चाहे उपस्थित रहें, न रहें; इनके दम का प्रभाव सदा और सर्वत्र मौजूद रहता है. उस दिन चौराहे पर ट्रैफिक पुलिस ने तीन की सवारी वाले एक मोटर सायकिल को पकड़ लिया. तीनों नवयुवक थे. अभी-अभी बालिग हुए थे. नवयुवक थे तो मर्जी के मालिक भी थे, चाहे जितने लोंगों की सवारी कर लें. नवयुवक थे तो भीड़ के अंदर भी अच्छी-खासी स्पीड में चल सकते थे. नवयुवक थे तो ड्राइविंग लायसेंस क्या खाक होगी उनके पास. पर थे दमदार. समझदार भी थे, जुर्माना देना स्वीकार था, पुलिसवाले से उलझना नहीं. पुलसवाले को रसीद बुक निकालते देखकर उन्होंने भी अपना बटुवा निकाल लिया. पुलिसवाला अनुभवी था, पर उन नवयुवकों को समझदार समझने के फेर में उसका अनुभव गच्चा खा गया. बिना परिचय पूछे उसने जुर्माने की रसीद बना डाली. आदत थी, अन्य विवरण दर्ज करने के बाद नाम-पता पूछने की, सो वैसा ही किया. युवक ने अपना नाम बताया- 'के कुमार.' नाम सुनते ही पुलिसवाले के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं. पूछा - 'कुमार साहब के लड़के हो?' उसने कहा- 'जी.' यह सुनते ही पुलिसवाले के माथे पर गंगा-जमुना बहने लगी. पसीना पोंछते हुए उसने बड़े प्यार से कहा - 'बेटा! आपने यह पहले क्यों नहीं बताया?' जितने प्यार से उसने यह सवाल पूछा था उतने प्यार से उसने कभी अपने बेटे से भी बात नहीं की होगी. उतने ही प्यार से क कुमार ने छक्का जड़ा - 'आपने पूछा ही कहां अंकल?' वह रसीद बुक से पंखा करके अपने चेहरे के पसीने को सुखाने की कोशिश करता था. पसीना था कि सूखने का नाम ही नहीं लेता था. काफी देर तक यही कोशिश होती रही. बीच-बीच में उनके श्रीहीन मुख से दारुण दुख से भीगा हुआ पश्चातापवाला यह वाक्य निकल पड़ा - 'बताना था न बेटा.' युवक ने नोट को आगे बढ़ते हुए कहा- 'प्लीज, जल्दी कीजिए न अंकल. हॉस्पिटल जाना है, फ्रेण्ड से मिलने. गेट बंद हो जायेगा.' पता नहीं, आगे क्या हुआ. इस ट्रेजिडी-कॉमेडी को देखकर मुझे एंगर हो रहा था. वहां से हटना ही उचित लगा.

स्वतंत्रता दिवस विशेष

देशभक्ति...यह शब्द जितना भावनाओं में पगा है, उतना ही व्यापक अर्थ वाला भी. केवल 15 अगस्त या 26 जनवरी को उत्सव मनाना ही देशभक्ति नहीं, यह बड़ी जिम्मेदारी भी है. आइए युवाओं से जानें कि उनके लिए क्या है देशभक्ति के मायने...

आज के दौर में देश भक्ति के मायने

इशिका सिंह
शिक्षिका

मेरे लिए देशभक्ति का अर्थ है अपने देश की विविधता, समावेशिता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता से प्यार करना और उसे अपनाना. दुनिया को जानते-समझते हुए अपनी विरासत, परंपराओं और पर्यावरण को संरक्षित करना मेरी नजर में देशभक्ति है. मेरी देशभक्ति मुझे राजनीति से ऊपर उठा कर दूसरों से जोड़ती है. सामूहिक कल्याण और राष्ट्रीय एकता पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करती है. यह मेरी देशभक्ति का असर है कि मैं खामियों को स्वीकार करती हूं, गलतियों से सीखती हूं और खुद को बेहतर करती हूं.

आकृति कुमारी सिंह, शिक्षिका

मेरी राय में देशभक्ति का मतलब स्कूल-कॉलेज और सोसाइटी में 15 अगस्त और 26 जनवरी मनाना मात्र नहीं है. देशभक्ति का मतलब है कि आपने देश की विविधता को किस तरह और कितना स्वीकार करते हैं. विविध संस्कृति और धर्मों का कितना सम्मान करते हैं. एक समाज में रहते हुए दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करना और एक अच्छे समाज के निर्माण में मदद करना ही देशभक्ति है.

रेखा सिंह
वाइस प्रिंसिपल

देशभक्ति का अर्थ है अपने देश से प्रेम करना, उसकी सेवा करना, और उसके लिए बलिदान देने के लिए तैयार रहना. यह अपने देश की स्वतंत्रता, संप्रभुता और एकता की रक्षा करने के लिए काम करना है. यह व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठ कर अपने देश के लोगों के कल्याण और सुख के लिए प्रयास करना है. देशभक्ति का अर्थ है अपने देश की संस्कृति, परंपराओं और मूल्यों को संरक्षित करना और बढ़ावा देना. यह अपने देश के प्रति जिम्मेदारी और कर्तव्य की भावना रखना है.

आयुष कु. गोप
बीए, इंग्लिश ऑनर्स

देशभक्ति अपनी मातृभूमि व्यक्ति का प्रेम और समर्पण है. देशभक्ति देश के प्रति प्रेम का एक उत्सव है. अपनी मातृभूमि से प्यार करना, अपनी संस्कृति पर गर्व करना और अपने कर्तव्यों के प्रति प्रतिबद्धता ही देशभक्ति है. यह समाज के बढ़ने और बदलने के साथ विकसित होती है. अपने दैनिक जीवन में देशभक्ति के सिद्धांतों को अपनाकर, हम अपने राष्ट्र की सामूहिक भलाई में योगदान करते हैं, जिससे आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्जवल भविष्य सुनिश्चित होता है.

आभाष नाथ
आयकर विभाग

छोटी उम्र से ही मैं भारतीय सशस्त्र बल में शामिल हो कर मां भारती की सेवा करने, उनके लिए बलिदान करने की ख्वाहिश रखता था. जब मैं इसमें शामिल हुआ तब देश की सीमा को बाहरी खतरों से बचाने में सक्रिय योगदान देते हुए इस ख्वाहिश को संतुष्टि मिली. इंडियन नेवी में अपनी सेवा पूरी करने के बाद जब मैं सिविल लाइफ में लौटा, ऐसा महसूस हुआ की शत्रु केवल बॉर्डर पर और बाहरी ही नहीं है, बल्कि वे देश के भीतर भी पैठ किए हुए हैं जिनका हमें सामना करना है. इस बोध के साथ देशभक्ति की मेरी समझ कहीं अधिक परिपक्व हुई.
अपने परिवेश की स्वच्छता सुनिश्चित करना, जरूरतमंद लोगों की मदद करना, भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने का साहस रखना, महामारी के दौरान प्रधान मंत्री राहत कोष में योगदान देना, बुजुर्गों का सम्मान करना और अंततः, देश की प्रगति और गर्व के लिए खुद निरंतर प्रयास और समर्पण करना ही देशभक्ति है.

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झंडा ऊंचा रहे हमारा

वतन के जां-निसार हैं वतन के काम आएंगे/ हम इस ज़मीं को एक रोज़ आसमां बनाएंगे...जी हां, फ़िजा में जश्न का माहौल है. देशभक्ति की भावनाएं उफान पर हैं. इस मौके पर हमारे साथ लोगों ने साझा किए क्या हैं उनके लिए देशभक्ति के मायने. साथ ही यह भी कि कब विदेश की जमीं पर अपनी संस्कृति, अपने देश के प्रति मन गर्व से भर उठा और तब मां भारती के लिए सम्मान प्यार की भावना उमड़ पड़ी...

जब मैन्चेस्टर में लहरायी हमारी साड़ी

रीता गुप्ता

इस वर्ष मई के महीने में मैन्चेस्टर, यूके में इंटरनेशनल इनर व्हील कंवेंशन था. अपने देश से भी बड़ी संख्या में सदस्यों ने वहां अपनी उपस्थिति दर्ज कराई. अपने प्रदेश से मैं भी गई थी, ये मेरी पहली यूरोप की यात्रा थी.
एक खास दिन अपने अपने देश के पारंपरिक पोशाक में आने का दिन था. हम भारतीय महिलाओं का थीम ड्रेस पिंक/पीच रंग की साड़ी थी. साथ ही हमारी एसोसिएशन प्रेसीडेंट यानि हमारी इंडिया चीफ प्रीति गुगलानी जी ने हमें बेहद सुंदर रेशमी फुलकारी की हुई स्टोल भी भेंट किया था जिसे हमें वहां हर दिन पहनना था. उस दिन गुलाबी साड़ी पर ख़ूबसूरत स्टोल पहनी हर भारतीय डेलिगेट कंवेंशन हॉल में न सिर्फ़ गजब ही व्यक्तित्व से दमक रही थी बल्कि सभी का ध्यान भी आकर्षित कर रही थी. चूंकि वहां चलना बहुत पड़ता था, ज़्यादातर पैरों में सैंडिल की जगह जूते ही पहने हुए थीं. हम संख्या में भी अधिक भी थे सो सच कहा जाए तो "हम बस वहां छा गए".
मेरा अनुभव बहुत बढ़िया रहा, महिलाएं (जिनसे मैं मिली) वे सब भारत के प्रति अपनी सकारात्मक दृष्टिकोण और उत्सुकता तो प्रदर्शित कर ही रही थी साथ ही साथ हमारी साड़ी को ले कर भी अनेक जिज्ञासाएं थीं उन्हें मसलन,
"ठंड में क्या आप वुलन साड़ी पहनती हैं?"
"इतने बड़े कपड़े को आप लपेट कर चलती कैसे हैं?
"आप इसे फोल्ड एंड होल्ड कैसे करती हैं?"
"आपके पति साड़ी में आपके अंग प्रदर्शन पर बुरा नहीं मानते हैं?"
चकरा गए इन सवालों पर? एक पल को मैं भी ठिठक कर सोचने लगी कि हमारे देश में इस से बढ़ कर शालीन कोई ड्रेस ही नहीं, फिर ध्यान आया खुशवंत सिंह की एक कथन की,
"साड़ी ऐसा परिधान है जिसमें औरत चाहे तो सब छिपा ले या उघाड़ ले."
सबसे मज़ेदार अनुभव तब हुआ जब हम चौदह - पंद्रह मेम्बर होटल जाने के लिए मेट्रो पकड़ने हेतु सड़क पर तेजी से चलते जा रहे थे और रास्ते में लोग हमारा वीडियो बना रहे थे और विस्फारित हो कर ब्यूटीफुल, गॉर्जियस जैसे संबोधन भी बोल रहे थे. तो मैन्चेस्टर में हमारी प्यारी परिधान साड़ी ने झंडा तो गाड़ ही दिया.

हिंदुस्तानी होने का गर्वबोध

नूपुर अशोक

हम हिंदुस्तानियों की ये विशेषता होती है कि जब हमारे साथ कुछ अच्छा होता है तो हम उसे अपने पूरे परिवार के साथ साझा करना चाहते हैं. सालों पहले जब मेरे जेठ पहली बार विदेश में बसने गए तो उनकी इच्छा थी कि बाकी सारा परिवार भी विदेश आकर वहां की सुख-सुविधा देखे. उनके आग्रह पर आखिरकार हम सब का भी विदेश जाने का प्रोग्राम बना. मेरे सास-ससुर के साथ हम लोग वहां पहुंचे. वाकई सब कुछ हमारे लिए काफी अनोखा था. उस समय भारत में शॉपिंग मॉल का चलन भी शुरू नहीं हुआ था तो वह भी हमें काफी आकर्षक लगता था. लिफ्ट, एस्केलेटर, डिश वाशर - सब कुछ हम रोमांचित होकर देखते थे.
एक दिन ऐसे ही किसी मॉल में एस्केलेटर पर चढ़ते हुए मेरे सास का संतुलन थोड़ा गड़बड़ाया और पैर में मोच आ गई. डॉक्टर को दिखाने पर उसने बताया कि कुछ समय लगेगा पर यह अपने आप ठीक हो जाएगा. चलने-फिरने से परहेज कहा. पर घूमना तो था क्योंकि हम घूमने ही तो आए थे. लिहाजा व्हीलचेयर का इंतज़ाम किया गया ताकि हम सब का घूमना जारी रहे.
एक दिन हम सब घूम रहे थे. मेरी सास व्हील चेयर पर थीं और मेरा भतीजा उसे चला रहा था. जाहिर है व्हीलचेयर की गति धीमी थी और हम बाकी लोगों से थोड़ा पीछे चल रहे थे। तभी एक विदेशी महिला ने मेरी सास से पूछा – आर यू फ्रॉम इंडिया? उनकी साड़ी से ये अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं था. उन्होंने हां में सिर हिलाया और मुस्करा दीं. फिर उस विदेशी महिला ने मेरे भतीजे की ओर इशारा करके पूछा कि ये कौन है. मेरे भतीजे ने उत्तर दिया कि वह उनका पोता है और अपनी दादी को घुमा रहा है. उस विदेशी महिला के चेहरे पर आश्चर्य और प्रसन्नता के मिले-जुले भाव आए – यू आर सो लकी! वह मेरी सास का हाथ पकड़ कर देर तक अङ्ग्रेज़ी में बोलती रही कि उसे यह देखकर कितनी खुशी हो रही है कि एक पोता अपनी दादी को व्हीलचेयर में घुमा रहा है, और उनके बेटे ने उन्हें वहां बुलाया है. वह कहती जा रही थी – काश मेरे बेटे और पोते ऐसे होते. यहां तो हमें या तो खुद अपनी व्हीलचेयर चलानी होती है या किसी को पैसे देने पड़ते हैं कि वह हमें ले चले. अभी तक हम वहां के बाज़ारों की चमक-दमक से चकाचौंध थे लेकिन उस महिला की बातें सुनने के बाद ऐसा लगा कि सारी चमक कहीं विलीन हो गई हो और हम सब, एक भारतीय परिवार, उस आकाश के सबसे चमकते हुए सितारे हों.

जब वर्जीनिया में सुनाई स्वरचित देशभक्ति कविता

सारिका भूषण

विदेश की ज़मीन, विदेशी माहौल, विदेशी लोग और इस माहौल में अगर अपने देश की माटी की खुशबू का अहसास हो जाए तो इसकी ख़ुशी का अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता.
बात उन दिनों की है जब मैं रांची से ब्लैक्सबर्ग (वर्जीनिया) बेटी के कंप्यूटर इंजीनियरिंग के कनवोकेशन में गई थी. चार वर्षों की पढ़ाई में हमलोग पहली बार जा रहे थे. ग्रेजुएशन सेरमोनी के बाद सारे अभिभावक अपने-अपने बच्चों के साथ यूनिवर्सिटी कैंपस में तस्वीरें खिंचवा रहे थे. बेटी को कुछ स्पेशल मेडल भी मिले थे. हम ख़ुद को बहुत गर्वान्वित महसूस कर रहे थे.
तभी कुछ अमेरिकन अभिभावक बच्चों के साथ हमारे पास आये और हमारी बातें होने लगी. वे सभी अपने-अपने बारे में भी बताने लगे. वहां लगभग सभी, स्त्री हो या पुरुष, स्वावलंबी होते हैं और मिलकर अपना घर चलाते हैं. अधिकतर बच्चे भी बहुत कम उम्र से छुट्टियों में काम करके अपने स्कूल/कॉलेज की फ़ीस जमा करते हैं. उस समय मुझे अंदर से थोड़ा ख़राब महसूस हो रहा था कि मैं आर्थिक रूप से तो आत्मनिर्भर नहीं ही हूं. वैसे भी सिर्फ लेखन से घर चलाना बहुत हो मुश्किल है. आख़िर में अपना परिचय देने की मेरी बारी आई. मैंने एक गहरी सांस लेकर अपना परिचय दिया कि मैं एक कवि और लेखक हूं और बहुत छोटी उम्र से अपनी मातृभाषा हिन्दी में लिखती हूं. सभी एकदम से चुप हो गये और क्लैप करने लगे. शुरू में मैं घबराई पर जब वे मेरी तारीफ़ करने लगे तो मेरी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा. उन्होंने हिन्दी में मुझसे एक देशभक्ति की कविता सुनी. मुझे नहीं मालूम वे कुछ भी समझ पाये या नहीं पर उनके चेहरों के भाव में पढ़ सकती थी. उस समय मुझे अपने देश, भाषा और लेखन पर सचमुच बहुत गर्व हो रहा था. एक अमेरिकन प्रोफेसर ने यहां तक कहा कि आपके देश के बहुत सारे बच्चे आज अमेरिका के टॉप यूनिवर्सिटीस (आई वी लीग के कॉलेज) में पहुंच जाते हैं जहां पढ़ने का सपना हर अमेरिकन बच्चा भी देखता है. फिर मैंने अपनी कविताओं की एक पुस्तक वहां की लाइब्रेरी में भेंट भी की.
सच ! यही तो ख़ासियत है चाणक्य, आर्यभट्ट, कलाम के देश की मिट्टी में.

इजिप्ट में गूंजी राष्ट्रभाषा हिंदी ने किया गौरवांन्वित

वीना श्रीवास्तव

यूं तो विदेश कई बार जाना हुआ लेकिन कोई भी कार्य जब पहली बार होता है उसका अपना आनंद होता है. उस आनंद को मापा नहीं जा सकता. उसके बाद होने वाले कार्य से मिलने वाली खुशी ज्यादा या कम हो सकती हैं लेकिन वह सुख जो पहली बार होता है, वो अलग ही होता है. मैंने जर्मनी, आस्ट्रिया, हंगरी, चैक रिपब्लिक, इंडोनेशिया, बाली, रूस और कई जगह की यात्रा की लेकिन पहली बार जिस विदेशी धरती पर कदम रखा वह प्राचीनतम सभ्यताओं में से है. हमने बचपन में पढ़ा था मिस्र की सभ्यता, इजिप्ट के पिरामिड व ममीज के बारे में. मन में कौतुहल था.
मैं 2016 में ग्यारहवें अंतरराष्ट्रीय हिन्दी सम्मेलन में इजिप्ट गई थी जिसके अध्यक्ष सुप्रसिद्ध आलोचक स्व. श्री खगेंद्र ठाकुर थे. हालांकि पहली यात्रा में वो नहीं गए थे. इंडोनेशिया यात्रा के समय दस दिन खगेंद्र दादा साथ थे और उनसे बहुत कुछ सीखा, गुना और बुना भी. वहां आयोजित कार्यक्रम में हिन्दुस्तानी साहित्यकारों के अलावा वहां के भी साहित्यकार थे. कई ज्ञानवर्धक सत्र हुए जिसमें मैंने भी पेपर पढ़ा. सबसे रोमांचक पल वह था जब विदेशी धरती पर मुझे मेरी लम्बी कविताओं के संकलन 'लड़कियां' पर मुझे पहला सम्मान 'प्रमोद वर्मा युवा सम्मान' मिला. तालियां बजीं. जिसको याद कर आज भी रोमांचित होती हूं. उस संकलन की कई कविताएं खासी चर्चित रही थीं और उसकी खास बात यह थी कि उसका आवरण चित्र प्रख्यात चित्रकार और कवि स्व. इमरोज़ जी ने बनाया था और प्रख्यात गीतकार पद्मविभूषण स्व. डॉ. गोपाल दास नीरज जी ने कविताओं पर टिप्पणी की थी. विदेश की जमीं पर अपनी भाषा-संस्कृति पर गर्व के वे पल अनमोल हैं.

जब हमारी भक्ति धारा में सराबोर हुए विदेशी

कल्याणी झा कनक

अमेरिका के इंडियाना शहर में जन्माष्टमी में हम अपनी पोती को राधा बनाकर मंदिर ले गए थे. मंदिर में हम चार साल बाद जा रहे थे. बच्चों के फ्रेंड्स (भारतीय) को देखकर सुखद एहसास हो रहा था. इसलिए क्योंकि बच्चे अमेरिका में जन्म व परवरिश के बाद भी भारतीय संस्कृति के निकट थे और अपने भारतीय त्यौहार मना रहे थे. छोटे-छोटे बच्चे राधा-कृष्ण बने इधर- उधर घूम रहे थे. ऊपर बड़े से हाल में लड्डू गोपाल का झूला लगा था. सर पर मुकुट और मोर पंख, बदन पर पीताम्बरी और नीला पटका, इसके साथ झूले पर फूलों की सजावट देखकर मन भाव विभोर हो रहा था. नीचे दरी पर श्रद्धालु हारमोनियम और तबला पर कृष्ण भजन स्वर लहरी में आकंठ डूबे हुए थे. एक विदेशी जोड़ा बहुत देर से आंखें मूंदकर झाल बजाते हुए, कृष्ण की मूर्ति के सामने बैठा था. भक्ति की पराकाष्ठा में उनकी आंखों से अश्रु अविरल बह रहे थे. अचानक उस जोड़े ने भजन गाना शुरू कर सबका मन मोह लिया. तब अपनी संस्कृति पर वाकई बहुत गर्व हुआ जिससे विदेशी भी प्रभावित हैं. अंत में मुझे भी भजन गाने का अवसर मिला. अपना स्वरचित भजन "मनमोहना मुरलीधर बंसी बजैया सांवरा" मैंने गाया. उपस्थित भक्तगणों को जब मैंने अवगत कराया कि मेरा स्वरचित भजन है, तो मुझे बहुत सराहना मिली. विदेश की धरती पर जब भी गई, भारत और भारतीयता पर गर्व के मौके मिलते रहे.

संयोजन : चेतना झा, डिजाइनिंग - खुशबू कुमारी

हॉकी इंडिया का फैसला : श्रीजेश को मिली जूनियर कोच की जिम्मेवारी

श्रीजेश की 16 नंबर की जर्सी हुई रिटायर

भाषा। नयी दिल्ली

हॉकी इंडिया ने बुधवार को दिग्गज गोलकीपर पीआर श्रीजेश की जर्सी नंबर 16 को रिटायर करने का फैसला किया. श्रीजेश ने हाल ही में संपन्न पेरिस खेलों में देश को लगातार दूसरा ओलंपिक कांस्य पदक दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के बाद खेल को अलविदा कह दिया. हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह ने कहा कि भविष्य में किसी भी सीनियर टीम के खिलाड़ी को 16 नंबर की जर्सी नहीं दी जाएगी, हालांकि जूनियर स्तर पर यह जर्सी मिलेगी. भोला नाथ ने यह भी घोषणा की कि लगभग दो दशक देश का प्रतिनिधित्व करने वाले 36 वर्षीय श्रीजेश जूनियर राष्ट्रीय कोच की भूमिका निभाएंगे. भोला नाथ ने श्रीजेश के सम्मान में आयोजित समारोह में कहा, श्रीजेश अब जूनियर टीम के कोच बनने जा रहे हैं और हम सीनियर टीम के लिए 16 नंबर की जर्सी रिटायर कर रहे हैं. हम जूनियर टीम के लिए 16 नंबर की जर्सी को रिटायर नहीं कर रहे. उन्होंने कहा, श्रीजेश दूसरे श्रीजेश को जूनियर टीम में तैयार करेगा (श्रीजेश जूनियर टीम में अपने जैसे किसी खिलाड़ी को तैयार करेगा जो 16 नंबर की जर्सी पहनेगा). केरल के इस अनुभवी खिलाड़ी के सम्मान में समारोह में उपस्थित खिलाड़ियों ने एक जैसी लाल जर्सी पहनी हुई थी, जिसके पीछे श्रीजेश का नाम लिखा हुआ था.

ओलंपिक में आखिरी चार मैचों में मुझे श्रीजेश-श्रीजेश सुनाई दिया तो मुझे सचिन तेंदुलरक की क्रिकेट से विदाई याद आ गई

'टोक्यो कांस्य पदक का महत्व अधिक'

पेरिस में स्वर्ण पदक जीतना था : श्रीजेश

भाषा। नयी दिल्ली

लगातार दो ओलंपिक पदक जीतने वाले भारतीय हॉकी स्टार पीआर श्रीजेश ने कहा कि टोक्यो में जीता गया कांस्य पदक पेरिस में जीते गए पदक से ज्यादा उनके दिल के करीब है, क्योंकि तीन साल पहले ऐसा लगा कि दशकों तक सुनने के बाद कोई पौराणिक कहानी सच हो गई. पेरिस में भारत के अभियान के अंत के साथ अपने अंतरराष्ट्रीय करियर को अलविदा कहने वाले 36 वर्षीय गोलकीपर श्रीजेश इस बार पदक के रंग से थोड़े निराश हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि टीम को बेहतर प्रदर्शन करना चाहिए था.

मंगलवार को यहां 'पीटीआई' मुख्यालय में श्रीजेश से जब यह मुश्किल फैसला करने के लिए कहा गया तो उन्होंने संपादकों से कहा, निश्चित रूप से टोक्यो क्योंकि हमने लंबे समय के बाद ओलंपिक पदक जीता था. पहले हम सुनते थे कि ओलंपिक पदक का क्या मतलब होता है क्योंकि हॉकी में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक का समृद्ध इतिहास रहा है, लेकिन यह कभी हमारे हाथ में नहीं आया. इसलिए जब हमने इसे पहली बार जीता तो वह एक शानदार पल था. उन्होंने अंतर स्पष्ट करते हुए कहा, उस समय हम पदक जीतने को लेकर सुनिश्चित नहीं थे लेकिन इस बार हम शीर्ष छह में थे और किसी भी टीम को हराने में सक्षम थे, लेकिन (टोक्यो में) पदक विजेता बनना एक सपना था. टोक्यो खेलों के लिए जाने से पहले भारत की हॉकी टीम ने 41 वर्षों में कोई ओलंपिक पदक नहीं जीता था. पेरिस में टीम के शीर्ष दो में रहने की उम्मीद थी जिसके कारण टीम के तीसरे स्थान पर रहते हुए कांस्य पदक जीतने के बावजूद थोड़ी निराशा हुई और श्रीजेश इससे सहमत थे. श्रीजेश ने कहा, इस बार हमें उम्मीद थी कि हम नंबर वन होंगे. मुझे लगता है कि यह एक बड़ी निराशा है (स्वर्ण नहीं जीतना), यह स्वर्ण पदक होना चाहिए था. बड़ा अंतर यह है कि वहां (टोक्यो में) मैं खुश था लेकिन यहां मैं ऐसा था...'' श्रीजेश ने कंधे उचकाते हुए कहा क्योंकि वह पेरिस में प्रदर्शन को लेकर अपनी भावनाओं को सही शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ थे. वह पेरिस ओलंपिक के समापन समारोह में भारतीय दल के ध्वजवाहक भी बने.

पेरिस खेलों का कांस्य भारत का हॉकी में 13वां ओलंपिक पदक है. 1972 के बाद यह पहला मौका था जब देश ने हॉकी में लगातार दो पदक जीते. करिश्माई गोलकीपर श्रीजेश पेरिस ओलंपिक में पूरे समय अपनी भूमिका को लेकर दृढ़ थे और उन्हें यादगार विदाई मिली. श्रीजेश ने उन पलों को भी याद किया जब वह पदक जीतने के बाद गोलपोस्ट पर बैठे थे और उनके साथी उनके आगे झुक रहे थे और फिर कप्तान हरमनप्रीत सिंह उन्हें कंधे पर उठाकर मैदान में घूमे. भारत के लिए 336 अंतरराष्ट्रीय मैच खेलने वाले श्रीजेश अपने साथियों द्वारा दी गई विदाई से अभिभूत थे और फ्रांस की राजधानी में टीम के पोडियम पर पहुंचने के बाद उनकी आंखों में आंसू थे.

अपनी विदाई देखकर श्रीजेश को आई सचिन की याद

नयी दिल्ली। बचपन से हम सचिन तेंदुलकर का नाम ही सुनते आये हैं और मैदान में सचिन सचिन का शोर सुना है, जब ओलंपिक में आखिरी चार मैचों में मुझे श्रीजेश श्रीजेश सुनाई दिया तो मुझे उनकी क्रिकेट से विदाई याद आ गई, यह कहना है भारतीय हॉकी के महान गोलकीपर पी आर श्रीजेश का. टोक्यो के बाद पेरिस ओलंपिक में भी कांस्य पदक जीतकर श्रीजेश ने हॉकी को अलविदा कह दिया. यह पूछने पर कि रिटायर होने के बाद सबसे ज्यादा क्या 'मिस' करेंगे, श्रीजेश ने अपने सम्मान समारोह के बाद भाषा से कहा, जैसे सचिन ने कहा था कि मैदान में सचिन-सचिन का शोर वह कभी भुला नहीं पायेंगे तो ओलंपिक में आखिरी चार मैचों से मुझे भी यह सुनाई दे रहा था श्रीजेश-श्रीजेश. मैं मैदान में उतरते समय पैड पहनना मिस करूंगा. लोग पहले दाहिना पैर रखते हैं लेकिन मैं बायां पैर पहले रखता था. भारत के लिए 336 मैच खेल चुके इस दिग्गज ने कहा,हॉकी में वॉर्मअप, रूम, मीटिंग, खिलाड़ियों को मैदान पर गालियां देना, साथ में खाना सब कुछ मिस करूंगा.

रोहित शर्मा वनडे रैंकिंग में बाबर आजम के बाद दूसरे स्थान पर

भाषा। दुबई

भारतीय कप्तान रोहित शर्मा हाल में श्रीलंका के खिलाफ समाप्त हुई वनडे श्रृंखला में शानदार प्रदर्शन के बूते बुधवार को ताजा जारी आईसीसी वनडे रैंकिंग में बल्लेबाजों की सूची में एक पायदान के फायदे से दूसरे स्थान पर पहुंच गये. भारत हालांकि इस तीन मैच की श्रृंखला में 0-2 से हार गया था लेकिन रोहित ने दो अर्धशतकों से 52.33 के औसत से 157 रन बनाये थे. श्रृंखला का पहला मैच टाई रहा था. वहीं शुभमन गिल एक पायदान खिसककर तीसरे स्थान पर आ गये जबकि विराट कोहली अपने चौथे स्थान पर बरकरार हैं.

पाकिस्तान के बाबर आजम इस समय 824 रेटिंग अंक से सूची में शीर्ष पर काबिज हैं जबकि रोहित के 765 अंक हैं. शीर्ष 20 में शामिल अन्य भारतीयों में श्रेयस अय्यर 16वें स्थान पर जबकि केएल राहुल एक पायदान खिसककर 21वें स्थान पर पहुंच गये. बायें हाथ के कलाई के स्पिनर कुलदीप यादव गेंदबाजों की सूची में चौथे स्थान से भारतीयों में रैंकिंग में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर हैं. वह शीर्ष पर काबिज दक्षिण अफ्रीका के स्पिनर केशव महाराज, आस्ट्रेलिया के जोश हेजलवुड और एडम जम्पा से पीछे हैं. ये तीनों शीर्ष तीन स्थान पर बने हुए हैं. तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह आठवें स्थान पर बरकरार हैं जबकि मोहम्मद सिराज पांच पायदान के नुकसान से न्यूजीलैंड के ट्रेंट बोल्ट के साथ संयुक्त रूप से नौवें स्थान पर बने हुए हैं. सीनियर तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी 12वें स्थान पर काबिज हैं. यह 33 साल का गेंदबाज टखने की चोट के बाद इस समय बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में 'रिहैबिलिटेशन' की प्रक्रिया से गुजर रहा है और उनके बांग्लादेश के खिलाफ अगले महीने होने वाली दो टेस्ट मैच की श्रृंखला में वापसी की उम्मीद है. श्रीलंका के खिलाफ वनडे श्रृंखला में (तीन मैच में पांच विकेट) भारत के लिए सर्वाधिक विकेट झटकने वाले वाशिंगटन सुंदर 10 पायदान के फायदे से 87वें स्थान पर पहुंच गये हैं. वहीं आल राउंडर सूची में रविंद्र जडेजा 16वें नंबर से भारतीयों में सर्वश्रेष्ठ स्थान पर काबिज हरफनमौला हैं.

ईशान किशन और कुमार कुशाग्र ने दलीप ट्रॉफी टूर्नामेंट में बनाई जगह

संवाददाता। रांची

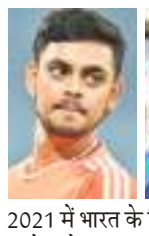

झारखंड राज्य क्रिकेट एसोसिएशन (जेएससीए) के दो प्रतिभाशाली खिलाड़ियों, ईशान किशन और कुमार कुशाग्र को प्रतिष्ठित दलीप ट्रॉफी टूर्नामेंट में खेलने के लिए चुना गया है. धाकड़ विकेटकीपर बल्लेबाज ईशान किशन को इंडिया डी टीम में जगह दी गई है. अपने प्रभावशाली बल्लेबाजी कौशल और तेजी से रन बनाने की क्षमता के साथ ईशान जेएससीए टीम के लिए एक मूल्यवान संपत्ति रहे हैं. उन्होंने 2021 में भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण किया और अपनी आक्रामक बल्लेबाजी शैली से क्रिकेट जगत में तहलका मचा रहे हैं. होनहार युवा बल्लेबाज कुमार कुशाग्र का चयन इंडिया ए टीम के लिए हुआ है. अपनी ठोस तकनीक और घरेलू क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन से कुमार ने चयनकर्ताओं का ध्यान खींचा है. वह जेएससीए के लिए लगातार अच्छा प्रदर्शन करने वाले रहे हैं और उन्होंने विकास की जबरदस्त संभावनाएं दिखाई हैं. एसोसिएशन को दोनों खिलाड़ियों पर बेहद गर्व है और वह उन्हें टूर्नामेंट के लिए शुभकामनाएं दी है. उनका चयन प्रतिभा को निखारने और अपने खिलाड़ियों को चमकने के अवसर प्रदान करने की एसोसिएशन की प्रतिबद्धता का प्रमाण हैं.

मोर्ने मोर्कल भारत के गेंदबाजी कोच नियुक्त

नयी दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व दिग्गज तेज गेंदबाज मोर्ने मोर्कल को भारतीय पुरुष क्रिकेट टीम का नया गेंदबाजी कोच नियुक्त किया गया है. भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव जय शाह ने बुधवार को इसकी पुष्टि की. शाह ने पीटीआई से कहा, ''हां, मोर्ने मोर्कल को सीनियर भारतीय पुरुष टीम का गेंदबाजी कोच नियुक्त किया गया है. दक्षिण अफ्रीका के 39 साल के मोर्कल नए मुख्य कोच गौतम गंभीर की पहली पसंद थे.

नार्थम्पटनशर में वनडे कप और काउंटी मैच में खेलेंगे युजवेंद्र चहल

लंदन। भारतीय लेग स्पिनर युजवेंद्र चहल काउंटी चैम्पियनशिप डिवीजन टू में बचे हुए पांच मैच और वनडे कप के अंतिम मुकाबलों में खेलने के लिए नार्थम्पटनशर से जुड़ गये हैं. 34 साल के चहल ने अभी तक भारत के लिए 72 वनडे और 80 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और दोनों ही प्रारूपों में 217 विकेट झटके हैं. नार्थम्पटनशर ने अपनी वेबसाइट पर कहा कि भारत के लिए टी20 विश्व कप के विजयी अभियान में भूमिका निभाने वाले चहल केंट के खिलाफ मैच के लिए कैंटरबरी की यात्रा से पहले बुधवार को टीम से जुड़ेंगे.

अमन सहरावत को खेल मंत्री ने दिया कैश प्राइज

नयी दिल्ली। पेरिस ओलंपिक में भारत को कुश्ती में एकमात्र मेडल दिलाने वाले अमन सहरावत को खेल मंत्री मनसुख मंडाविया ने सम्मानित किया. इस मौके पर उन्होंने ब्रॉन्ज मेडलिस्ट अमन सहरावत को 30 लाख रुपये का कैश प्राइज भी दिया.

ऑस्ट्रेलिया 'ए' से हारा भारत 'ए'

- राघवी और तेजल के अर्धशतक के बावजूद मिली हार

भाषा। मैकॉय (ऑस्ट्रेलिया)

मध्य क्रम की बल्लेबाजों राघवी बिष्ट और तेजल हसब्निस के अर्धशतक के बावजूद भारत 'ए' महिला क्रिकेट टीम को बुधवार को यहां पहले एकदिवसीय में ऑस्ट्रेलिया 'ए' के खिलाफ चार विकेट से शिकस्त का सामना करना पड़ा. भारत 'ए' के 250 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए ऑस्ट्रेलिया 'ए' ने केटी मैक (129 रन, 126 गेंद, 11 चौके) के शतक और कप्तान ताहिला मैकग्रा (56) के अर्धशतक से 47 ओवर में छह विकेट पर 250 रन बनाकर जीत दर्ज की. केटी ने साथी सलामी बल्लेबाज मैडी डार्क (27) और चार्ली नॉट (26) के साथ अर्धशतकीय जबकि कप्तान ताहिला के साथ शतकीय साझेदारी करके मेजबान टीम की जीत की राह आसान की. भारत ने इससे पहले राघवी की 102 गेंद में छह चौकों से 82 और तेजल की 67 गेंद में सात चौकों से 53 रन की पारी से नौ विकेट पर 249 रन का सम्मानजनक स्कोर खड़ा किया.

मैंने डेविस कप कोच पद से इस्तीफा दे दिया : जीशान अली

भाषा। नयी दिल्ली

जीशान अली ने बुधवार को घोषणा की कि उन्होंने स्टॉकहोम में स्वीडन के खिलाफ भारतीय टीम के अगले मुकाबले से पहले राष्ट्रीय डेविस कप टीम के कोच पद से इस्तीफा दे दिया है. जीशान अली ने पीटीआई से कहा, मैंने डेविस कप टीम के कोच पद से इस्तीफा दे दिया है. जीशान (54 वर्ष) 2013 में नयी दिल्ली में दक्षिण कोरिया के खिलाफ मुकाबले से पहले नंदन बाल की जगह टीम के कोच बने थे. उन्होंने कहा, मैं 11 साल से डेविस कप टीम का कोच रहा हूं. सबसे बड़ी बात मैं इस साल के शुरू में पाकिस्तान में पाकिस्तान के खिलाफ खेले गये ऐतिहासिक मुकाबले में डेविस कप कप्तान भी था.

शास्त्री ने कहा | ऑस्ट्रेलिया में होगी पांच टेस्ट मैच की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी

ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट श्रृंखला जीतने की हैट्रिक बना सकता है भारत

भाषा। दुबई

पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री को लगता है कि भारत अपने बेहतरीन गेंदबाजी स्तर तथा रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे मजबूत बल्लेबाजी लाइन अप को देखते हुए ऑस्ट्रेलिया में टेस्ट श्रृंखलाओं की जीत की हैट्रिक लगाने में सक्षम है. भारत ने ऑस्ट्रेलिया में पिछली दो टेस्ट श्रृंखला जीतकर प्रतिष्ठित बॉर्डर-गावस्कर ट्रापी पर कब्जा बना रखा है, जबकि ऑस्ट्रेलिया ने 2015 के शुरू में घरेलू श्रृंखला में 2-0 से जीत हासिल की थी. शास्त्री ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) से कहा, जसप्रीत बुमराह फिट हैं, मोहम्मद शमी फिट हैं, आपके पास मोहम्मद सिराज भी है. आपके पास रविचंद्रन अश्विन और रविंद्र जडेजा जैसे खिलाड़ी और कुछ अच्छी 'बेंच स्ट्रेंथ' भी है. इस श्रृंखला के शुरू होने के लिए बेताब हैं और मुझे लगता है कि भारतीय टीम आस्ट्रेलिया में श्रृंखलाओं की जीत की हैट्रिक लगा सकती है. ऑस्ट्रेलिया के महान क्रिकेटर रिकी पोंटिंग ने हाल में भविष्यवाणी की थी कि उनका देश यह श्रृंखला 3-1 से जीतेगा, लेकिन शास्त्री ने कहा कि भारतीय गेंदबाज अपना काम बखूबी कर सकते हैं बशर्ते उनके बल्लेबाज चुनौती के लिए तैयार रहें.

शास्त्री ने कहा, यह एक बेहतरीन श्रृंखला होने जा रही है और भारत के पास हैट्रिक बनाने का पूरा मौका है, क्योंकि उनके गेंदबाज फिट हैं और अगर वे अच्छी बल्लेबाजी कर सकते हैं तो वे ऑस्ट्रेलिया को एक बार फिर हरा सकते हैं. भारत इस साल ऑस्ट्रेलिया में पांच मैचों की श्रृंखला खेलेगा, जिसकी शुरुआत पर्थ में टेस्ट मैच से होगी. पैट कमिंस की अगुआई वाली ऑस्ट्रेलियाई टीम पिछले साल 'द ओवल' में विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप फाइनल के दौरान रोहित शर्मा की टीम से बदला लेने के बाद इस श्रृंखला के लिए उत्साहित है और शास्त्री को लगता है कि घरेलू टीम बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को फिर हासिल करने के लिए बेताब होगी.

उन्होंने कहा, ऑस्ट्रेलिया में पांच टेस्ट मैच की बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी एक रोमांचक मुकाबला होने जा रहा है.

डोडा गणेश कीनिया क्रिकेट टीम के मुख्य कोच बने

भाषा। नैरोबी

पूर्व भारतीय ऑलराउंडर डोडा गणेश को 2026 टी20 विश्व कप के अफ्रीका क्वालीफायर से पहले कीनिया की पुरुष क्रिकेट टीम का मुख्य कोच नियुक्त किया गया है. भारत के लिए चार टेस्ट और एक एकदिवसीय मैच खेलने वाले 51 वर्षीय गणेश ने प्रथम श्रेणी क्रिकेट में कर्नाटक के लिए 2000 से अधिक रन बनाए और 365 विकेट लिए. उनके सामने कीनियाई क्रिकेट के उन गौरवशाली दिनों को वापस लाने की कठिन चुनौती है जब टीम ने 1996 और 2011 के बीच पांच विश्व कप में भाग लिया. अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के इस एसोसिएट सदस्य देश का अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2003 में रहा था, जब वे संदीप पाटिल के रूप में एक भारतीय मुख्य कोच की मौजूदगी में दक्षिण अफ्रीका में हुए एकदिवसीय विश्व कप के सेमीफाइनल में पहुंचे थे. कीनिया ने टी20 विश्व कप के सिर्फ एक टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई किया है जो 2007 में हुआ था. तब से कीनियाई क्रिकेट का ग्राफ लगातार गिरता चला गया. सितंबर में आईसीसी डिविजन दो चैलेंज लीग में वे पापुआ न्यू गिनी, कतर, डेनमार्क और जर्सी से भिड़ेंगे और अक्टूबर में टी20 विश्व कप अफ्रीका क्वालीफायर खेलेंगे.

प्राकृतिक आपदा पीड़ितों के लिए चैरिटी मैच कराएगा एआईएफएफ

नयी दिल्ली। अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) प्राकृतिक आपदाओं की तबाही का सामना करने वाले केरल और हिमाचल प्रदेश में राहत कार्य के लिए धन जुटाने हेतु दो चैरिटी फुटबॉल मैचों का आयोजन करेगा. एआईएफएफ पहला चैरिटी मैच 30 अगस्त को केरल के मलप्पुरम में कोलकाता की टीम मोहम्मद स्पोर्टिंग क्लब और एक सुपर लीग केरल एकादश के बीच कराने का प्रयास कर रहा है. एआईएफएफ ने दूसरा चैरिटी मैच दो सितंबर को लखनऊ में कराने का प्रस्ताव रखा है. देश में खेल की संचालन संस्था इस मुकाबले को लेकर संभावित क्लबों के संपर्क में है. एआईएफएफ अध्यक्ष कल्याण चौबे ने कहा, मुझे खुशी है कि मोहम्मडन स्पोर्टिंग ने मानवता के लिए हमारे प्रस्ताव पर तुरंत सहमति जता दी.

मंत्री ने युवाओं को दिये ऑफर लेटर

विशेष संवाददाता। रांची/चाईबासा

टाटा स्टील फाउंडेशन द्वारा संचालित स्किल डेवलपमेंट सेंटर चाईबासा से प्रशिक्षण प्राप्त कर चुके युवक युवतियों के बीच बुधवार को ऑफर लेटर का आदिवासी कल्याण मंत्री दीपक बिरूआ ने सौंपा. इस अवसर पर आदिवासी कल्याण मंत्री दीपक बिरुवा ने युवाओं को शुभकामना देते हुए अच्छे से कार्य करते हुए आगे बढ़ने की बात कही. उन्होंने टाटा स्टील फाउंडेशन से आग्रह करते हुए कहा यहां माइनिंग क्षेत्र होने के नाते इससे संबंधित युवाओं को प्रशिक्षण देते हुए यहीं रोजगार उपलब्ध कराया जाए. झारखंड सरकार भी इसको लेकर काफी प्रयासरत है. उन्होंने कहा कि इस तकनीकी युग में यह आवश्यक है कि हर एक हाथ को हुनरमंद बनाया जाए, जिससे युवाओं के भविष्य की जिंदगी की राह को आसान बनाया जा सके. इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर युवाओं को स्वावलंबी बनाने की महत्वाकांक्षी कार्यक्रम के क्रियान्वयन को लिए टाटा स्टील फाउंडेशन प्रयासरत है. जिले में युवक-युवतियों को उनके रुचि के ट्रेड में हुनरमंद बनाकर आत्मनिर्भर बनाने का कार्य जारी है. उपायुक्त कुलदीप चौधरी ने कहा कि हर युवाओं के हाथ में हुनर हो, सभी कुशल बने ताकि अपनी जीविका को चला सके.

उत्साहित दिखे युवा : इस मौके पर युवाओं को ऑफर लेटर मिलने पर युवा आत्मविश्वास से लबरेज दिखे. वहीं कौशल विकास केंद्र से प्रशिक्षण प्राप्त कर हुनरमंद बने युवक-युवतियों के चेहरे पर आज आत्मनिर्भरता की मुस्कान बिखर रही है. टाटा स्टील फाउंडेशन के पदाधिकारियों ने बताया कि युवक-युवतियों को प्लेसमेंट के आधार पर रोजगार का अवसर उपलब्ध करवाया गया है. आगे भी प्रशिक्षण देते हुए रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा.

रेलवे स्टेशनों की बदलेगी तस्वीर

प्रमुख संवाददाता। रांची

झारखंड के रेलवे स्टेशनों की तस्वीर बदलेगी. रेलवे स्टेशनों का विकास अमृत भारत योजना के तहत किया जाएगा. इसके लिए केंद्रीय रेलवे मंत्रालय ने झारखंड को 7,302 करोड़ रुपये की राशि दी है. इस साल रेलवे से बुनियादी ढ़ांचा के विकास में फोकस करने के साथ लोकोमोटिव और कोच के निर्माण के साथ नई तकनीक पर भी फोकस किया है. यात्रियों की सुविधा के लिए दस हजार जनरल कोच भी बनाए जाएंगे.

इन योजनाओं के लिए राशि आवंटित : बंडामुंडा(ओडिशा) - रांची दोहरीकरण लाइन के निर्माण, रांची और हटिया स्टेशन का पुनर्विकास, झालिदा, सुईसा और तुलिन स्टेशन का विकास

इन रेलवे स्टेशनों की बदलेगी तस्वीर : गंगाघाट, गढ़वा रोड, गढ़वा टाउन, घाटशिला, गिरिडीह, गोड्डा, गोविंदपुर रोड, हैदर नगर, हटिया, हज़ारीबाग रोड, जामताड़ा, जपला, जसीडीह जंक्शन, कतरासगढ़, कोडरमा जंक्शन, कुमारडुबी, लातेहार, लोहरदगा, मधुपुर जंक्शन, मनोहरपुर, मुहम्मद गंज, मुरी जंक्शन, एनएससीबी. जंक्शन गोमो, नगर उंटारी, नामकोम, ओरगा, पाकुड़, पारसनाथ, पिस्का, राजखरसवां, राजमहल, रामगढ़ कैंट, रांची जंक्शन, साहिबगंज, शंकरपुर, सिल्ली, सिनी, टाटानगर, टाटीसिल्वे, विद्यासागर बालसिरिंग, बानो, बड़ाजामदा जंक्शन, बरकाकाना, बासुकीनाथ, भागा, बोकारो स्टील सिटी चाईबासा, चक्रधरपुर, चांडिल, चंद्रपुरा, डालटनगंज, डांगोआपोसी, देवघर, धनबाद, दुमका और गम्हरिया शामिल हैं.

झारखंड को मिली और एक नयी ट्रेन की सौगात

रांची। केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ की पहल पर एक और नयी ट्रेन की सौगात रांची लोकसभा को मिली है. टाटा से जयनगर तक चलने वाली साप्ताहिक ट्रेन नंबर 18119 जो टाटानगर से शुक्रवार को संध्या 6.50 पर शाम को चलेगी, जो दूसरे दिन 11.30 बजे जयनगर पहुंचेगी टाटा से यह चलने वाली ट्रेन चांडिल, मुरी, कोटसिला, राजाबेरा, धनबाद, मधुपुर, जसीडीह, झाझा, किउल, बरौनी, समस्तीपुर, दरभंगा, मधुबनी होते हुए जयनगर पहुंचेगी. वहीं जयनगर से टाटा ट्रेन नंबर 18120 दिन शनिवार को चलेगी. केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ ने इस नई ट्रेन की सौगात के लिए केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव के प्रति आभार जताया है.

नैतिक मूल्यों का पालन न करने पर थाईलैंड के प्रधानमंत्री पदमुक्त

- अदालत के आदेश ने थाई राजनीति में मचाई हलचल
- कैबिनेट सदस्य की नियुक्ति को लेकर दोषी ठहराए गए

एजेंसी। बैंकॉक

थाईलैंड की एक अदालत ने नैतिक मूल्यों का पालन न करने के आरोप में बुधवार को प्रधानमंत्री श्रेथा थाविसिन को पद से हटा दिया. इससे एक सप्ताह पहले अदालत ने मुख्य विपक्षी दल को भंग कर दिया था. अदालत के आदेश ने थाई राजनीति में हलचल मचा दी है. संवैधानिक न्यायालय ने श्रेथा को एक कैबिनेट सदस्य की नियुक्ति को लेकर दोषी ठहराया जिसे अदालत के एक अधिकारी को रिश्वत देने के मामले में जेल की सजा हुई थी. अदालत ने श्रेथा के खिलाफ 5:4 के बहुमत से फैसला दिया. संसद जब तक नए प्रधानमंत्री की नियुक्ति नहीं करती तब तक कैबिनेट कार्यवाहक आधार पर बनी रहेगी. संसद को इस पद पर नियुक्ति के लिए कोई समयसीमा नहीं दी गई है. श्रेथा ने अप्रैल में कैबिनेट फेरबदल में पिचित चुएनबान को प्रधानमंत्री कार्यालय के मंत्री के रूप में नियुक्त किया था. पिचित को 2008 में अदालत की अवमानना के मामले में तब छह महीने की जेल हुई थी जब उन्होंने कथित तौर पर पूर्व प्रधानमंत्री थाकसिन शिनवात्रा से जुड़े एक मामले में एक न्यायाधीश को 20 लाख बाहत (55 हजार अमेरिकी डॉलर) की रिश्वत देने की कोशिश की थी. इस घटना पर जब विवाद फिर से शुरू हुआ तो नियुक्ति के कुछ सप्ताह बाद पिचित ने पद से इस्तीफा दे दिया. अदालत ने कहा कि हालांकि पिचित पहले ही जेल की सजा काट चुके हैं, लेकिन उच्चतम न्यायालय

किशिदा पार्टी अध्यक्ष पद का चुनाव नहीं लड़ेंगे,नया पीएम मिलेगा जापान को

टोक्यो। जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा ने बुधवार को कहा कि वह सितंबर में प्रस्तावित सत्तारूढ़ लिबरल डेमोक्रेटिक पार्टी (एलडीपी) के अध्यक्ष पद के चुनाव में किस्मत नहीं आजमाएंगे. किशिदा सितंबर 2021 में एलडीपी के अध्यक्ष चुने गए थे. उनका तीन साल का कार्यकाल इस साल सितंबर में खत्म हो रहा है. किशिदा के एलडीपी अध्यक्ष पद की दौड़ से बाहर होने का मतलब यह है कि पार्टी प्रमुख निर्वाचित होने वाला अगला नेता देश के प्रधानमंत्री के रूप में उनकी जगह लेगा, क्योंकि एलडीपी को संसद के दोनों सदनों में बहुमत हासिल है. किशिदा के कार्यकाल में उनकी पार्टी के कई नेताओं पर भ्रष्टाचार और घोटालों में शामिल होने के आरोप लगे हैं.

हाई कोर्ट ने तमिलनाडु में भाजपा की तिरंगा रैली को मंजूरी दी

चेन्नई। मद्रास उच्च न्यायालय ने बुधवार को राज्य में भाजपा की 'तिरंगा रैली' को मंजूरी दी और साथ ही तमिलनाडु सरकार को स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रीय ध्वज लेकर मोटरसाइकिल तथा साइकिल से रैली निकालने अथवा पैदल मार्च करने जैसी किसी भी गतिविधि पर रोक नहीं लगाने का निर्देश दिया. अदालत ने प्रस्तावित कार्यक्रम के आयोजन के लिए कई शर्तें भी रखीं जिनमें राष्ट्रीय ध्वज का उचित सम्मान सुनिश्चित करना भी शामिल है. अदालत ने कोवई उत्तर के पुलिस उपायुक्त के उस आदेश को रद्द करने का अनुरोध किया गया था जिसमें याचिकाकर्ता को 15 अगस्त को शहर में चार स्थानों पर लगभग 200 दोपहिया वाहनों के साथ राष्ट्रीय ध्वज रैली करने की अनुमति देने से मना कर दिया था.

पाकिस्तान में ईशनिंदा के दोषी को 25 साल कठोर कारावास

कराची। पाकिस्तान की एक अदालत ने खुद को पैगंबर घोषित करने के आरोप में एक व्यक्ति को ईशनिंदा के लिए 25 साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई है. सिंध प्रांत में हैदराबाद में केंद्रीय कारागार में सुनवाई के बाद एक अतिरिक्त जिला न्यायाधीश ने मंगलवार को आरोपी को सजा सुनाई. आरोपी के नाम या धर्म का खुलासा नहीं किया गया. न्यायाधीश ने दोषी ठहराए गए व्यक्ति पर पांच लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया. न्यायाधीश ने कहा कि उसे मौत की सजा देने के लिए कोई ठोस सबूत नहीं मिला. आरोपी को तब ईशनिंदा कानून के तहत गिरफ्तार किया गया था, जब महबूब अली नाम के एक व्यक्ति ने मीरपुर सकरो पुलिस थाने में उसके खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी.

ट्रेनी डॉक्टर हत्याकांड की जांच सीबीआई ने अपने हाथ में लिया

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में आरजी कर मेडिकल कॉलेज एंड अस्पताल में ट्रेनी महिला डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और उसकी हत्या की घटना की जांच का जिम्मा सीबीआई ने अपने हाथ में ले लिया है. सीबीआई के वरिष्ठ अधिकारियों की टीम बुधवार की सुबह कोलकाता पहुंची. टीम में स्वास्थ्य और फॉरेंसिक विशेषज्ञ भी शामिल हैं. पश्चिम बंगाल पुलिस ने वारदात से जुड़े सभी दस्तावेज सीबीआई को सौंप दिये हैं. बुधवार को कोलकाता के सीओजी कॉम्प्लेक्स स्थित सीबीआई दफ्तर में सभी सबूत लाए गए. इस मामले में गिरफ्तार किये गये आरोपी संजय रॉय को भी पुलिस ने सीबीआई को सौंप दिया है. इस बीच, ट्रेनी महिला डॉक्टर से दुष्कर्म के बाद हत्या के विरोध में देशभर में जारी डॉक्टरों का आंदोलन बुधवार को भी जारी रहा.

वायनाड त्रासदी: मृतकों के परिजनों को मिलेगा 6-6 लाख मुआवजा

एजेंसी। तिरुवनंतपुरम

केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने वायनाड जिले में हाल में हुए भीषण भूस्खलन में मारे गए लोगों के परिजनों को छह लाख रुपये का मुआवजा देने की बुधवार को घोषणा की. इस भूस्खलन में 200 से अधिक लोगों की जान चली गई थी.

विजयन ने कहा कि छह लाख रुपये में से चार लाख रुपये राज्य आपदा राहत कोष से और शेष मुख्यमंत्री आपदा राहत कोष से दिए जाएंगे. उन्होंने यह भी ऐलान किया कि भूस्खलन में जिन लोगों ने आंखें और अंग खो दिए हैं या जो 60 प्रतिशत तक दिव्यांग हो गए हैं, उन्हें सीएमडीआरएफ से 75,000 रुपये दिए जाएंगे. आपदा में 40 से 60 प्रतिशत तक दिव्यांग होने वाले या गंभीर रूप से घायल होने वाले लोगों को 50,000 रुपये की आर्थिक सहायता दी जाएगी. इसके अलावा, जो पीड़ित किराए के मकान या अपने रिश्तेदारों के साथ रहने का विकल्प चुनेंगे, उन्हें पुनर्वास के तहत किराए के रूप में 6,000 रुपये प्रति माह मिलेंगे. हालांकि, यह राशि उन लोगों को उपलब्ध नहीं होगी जिन्हें किराया-मुक्त या पूरी तरह से प्रायोजित आवास मिलेगा. विजयन ने यह भी कहा कि 30 जुलाई को वायनाड के कुछ हिस्सों में हुए बड़े पैमाने पर भूस्खलन के बाद अब तक 231 शव और शरीर के 206 अंग बरामद किए गए हैं. उन्होंने बताया कि शवों और शरीर के अंगों के कुल 401 नमूनों का डीएनए परीक्षण किया गया और उनमें से 349 नमूने 248 व्यक्तियों के पाए गए, जिनमें 121 पुरुष और 127 महिलाएं थीं.

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राईवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा राजकमल प्लाजा, रूम नंबर 102 जयप्रकाश नगर, डीनोवली स्कूल रोड बरटांड़, धनबाद-826001 झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - **सुरजीत सिंह**, स्थानीय संपादक - **दीपक कुमार अम्बष्ठ***. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - **JHAHIN/2023/84487** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)

78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

शुभम संदेश

परिशिष्ट

एक राज्य - एक अखबार

धनबाद, गुरुवार 15 अगस्त 2024 ● श्रावण शुक्ल पक्ष 11 संवत 2081 ● पृष्ठ : 12 ● मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 2, अंक : 128 ● आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

S & P

General Supplier
and Lorry Broker

आपको 78 वें स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएं

DHANBAD

झरिया भी था बोला, माई रंग दे बसंती चोला...

आफताब आलम :

अंग्रेजों का अत्याचार चरम पर था, फिरंगी हाथों की चाबुक जब देशवासियों के जिस्म की चमड़ियों को उधेड़ कर उसमें अहंकार का नमक डाल रहे थे. तब तड़पते देश के हर कोने से मुखालफत की आवाज उठी. इस आवाज को और बुलंद करने का बीड़ा झरिया ने भी अपने कंधे पर उठाया था. जंग-ए-आजादी से जुड़ी झरिया की दास्तानें आज भी यहां सुनी-सुनाई जाती हैं, जो रगों में दौड़ते खून को उबाल देने के लिए काफी हैं. आइए जानते हैं झरिया की दिलेरी की उन दास्तानों को.

राम जस अग्रवाल का घर

झरिया स्टेशन

रेल गोदाम लूटा, डाकखाना में लगाई आग, बवाल के बाद कर्फ्यू

बात 09 अगस्त 1942 की है. अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान झरिया का हर लब माई रंग से बसंती चोला गुनगुना रहा था. खुद को देश पर न्योछावर करने वालों की यहां भी लंबी कतार थी. आजादी के मतवालों ने अंग्रेजों को झरिया से बड़ा संदेश देने का मन बना लिया था. ऐसे में यहां से भी कुछ बड़ा करना था. फिर वहां हुआ भी बड़ा. झरिया रेलवे स्टेशन के मालगोदाम को लूट लिया गया, यहां के डाकघर जला दिया, अंग्रेजों के खिलाफ पोस्टर लगाए गए. बवाल इतना हुआ कि दूसरे ही दिन यहां कर्फ्यू लगानी पड़ी थी. झरिया के क्रांतिकारी निखिल चंद्र गुप्ता, किशोरी लाल लोरिया, शिवराज प्रसाद, बद्रीनाथ केसरी, केदारनाथ केसरी समेत अनेक क्रांतिकारियों ने उक्त आंदोलन की मशाल जलाई. इनका जनता ने भी बखूबी साथ दिया. तब क्रांतिकारियों ने सबसे पहले झरिया की संचार व्यवस्था ध्वस्त कर दी थी. इसके बाद झरिया रेलवे स्टेशन के गोदाम पर हमला बोल दिया. यहां तैनात कर्मियों को पीट कर भगा दिया और फिर वहां से मिट्टी के तेल का पूरा स्टॉक लूट लिया. इसके बाद क्रांतिकारियों ने झरिया डाकघर में आग लगा दी थी. अंग्रेजी शासन को डाकघर जलाकर बड़ी चुनौती दी गई. यह सीधा संदेश था कि अंग्रेजों भारत छोड़ दो. झरिया में हुए बवाल की खबर पाकर मानभूम के एसडीओ मिस्टर पिल्लई भी यहां पहुंचे. उन्होंने शिवराज प्रसाद, किशोरी लाल व अन्य क्रांतिकारियों को गिरफ्तार किया. दूसरे दिन 10 अगस्त 1942 को झरिया में कर्फ्यू भी लगा दिया गया. इस तरह झरिया से जंग-ए-आजादी की आवाज को यहां से और

महात्मा गांधी के सामने रखा था ब्लैंक चेक

झरिया को वैसे ही कोल राजधानी का खिताब हासिल नहीं है. इस काली धरती के वीरों ने न सिर्फ उस आवाज से अंग्रेजों को हिलाए रखा था बल्कि आजादी की लड़ाई में धन से भी सहयोग किया था. आजादी को लेकर झरिया के जुनून को देखते हुए आजादी के नायक महात्मा गांधी भी यहां तीन बार आ चुके हैं. इनमें से एक वाकया तो पूरे देश भर प्रसिद्ध है. यहां के बड़े कारोबारी रामजस अग्रवाल और उनके ब्लैंक चेक का. बात कुछ यूं है कि एक बार महात्मा गांधी यहां आए थे. झरिया लाल बाजार के रहने वाले रामजस बाबू के घर पर. रस्मी बातचीत के बाद महात्मा गांधी से रामजस अग्रवाल के समक्ष आर्थिक रूप से सहयोग की बात कही. सामने महात्मा गांधी और उनकी जुबान से निकली बात की कदर रामजस बाबू ने ऐसी रखी कि उनके सामने ब्लैंक चेक रख दिया और कहा आप जितनी रकम डाल लें. उस दौर में पचास हजार रुपये का सहयोग झरिया के सिर्फ एक कारोबारी ने जंग आजादी में किया था. कई अन्य कारोबारी भी गांधी जी की बात पर अपना धन न्योछावर कर दिए थे. इसके बाद भी दो बार महात्मा गांधी झरिया आए थे.

राष्ट्रीय सम्मान से वंचित हैं अमर शहीद जगदीश प्रसाद वत्स!

श्रीगोपाल नारसन

उत्तराखंड व उत्तर प्रदेश के स्वाधीनता संघर्ष के संयुक्त नायक अमर शहीद जगदीश प्रसाद वत्स जिन्होंने शहादत हरिद्वार में दी तो जन्म सहारनपुर जनपद के गांव खजूरी अकबरपुर में लिया था,को केंद्र व प्रदेश सरकारों द्वारा वह सम्मान नहीं मिल पाया,जिसके वह हकदार हैं। मात्र 17 वर्ष की अल्पायु में 14 अगस्त सन 1942 में हरिद्वार की सड़कों पर तिरंगे फैहराते हुए शहीद हुए मेरे मामा अमर शहीद जगदीश प्रसाद वत्स के बलिदान दिवस पर हरिद्वार जिला प्रशासन प्रतिवर्ष 14 अगस्त को एक कार्यक्रम तो हरिद्वार के भल्ला पार्क में आयोजित करता है.लेकिन उसमें शहीद के प्रति सम्मान का भाव कम और औपचारिकता अधिक अपनाई जाती है।जिसमें अधिकृत रूप से शहीद जगदीश प्रसाद वत्स के परिजनों तक को आमंत्रित नहीं किया जाता।अमर शहीद जगदीश प्रसाद वत्स की प्रतिमा के रखरखाव की जिम्मेदारी नगर निगम या फिर जिला प्रशासन की है लेकिन उनकी प्रतिमा वर्ष भर धूल व गन्दगी ही नहीं ,आस पास के दुकानदारों द्वारा किया गया अतिक्रमण भी झेलती है।आजादी से पहले ब्रिटिश हुकूमत का प्रतिबंध था और आजादी के 75 वर्ष बाद भी लोकतांत्रिक रूप में चुनी गई उत्तराखंड सरकार और उसके जिला प्रशासन की मनमानी का शिकार आजादी के इन दीवानों व उनके परिवारों को झेलना पड़ रहा है। अमर शहीद जगदीश वत्स के नाम से हरिद्वार में स्वाधीनता सेनानी सदन बनाने की एक साल पहले मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की घोषणा को भी सत्तारूढ़ पार्टी के शीर्ष नेता व अधिकारी पलीता लगा रहे हैं।क्या शहीद जगदीश वत्स के साथ हो रहे इस अन्याय का प्रतिवाद नहीं होना चाहिए? भला हो शहीदों के प्रति सम्मान अभिव्यक्त करने वाले सन्त ब्रह्मस्वरूप ब्रह्मचारी का,जिन्होंने स्वयं के खर्च से हरिद्वार के भल्ला पार्क में 17 वर्षीय शहीद जगदीश की प्रतिमा कुछ दशक पहले लगवा दी थी और जिला प्रशासन को प्रेरित कर सरकारी स्तर पर 14 अगस्त को श्रद्धांजलि कार्यक्रम परम्परा शुरू कराई।लेकिन समय के साथ जहां उक्त स्वाधीनता सेनानी पार्क आस पास के दुकानदारों द्वारा अतिक्रमण का शिकार है,वहीं जिला प्रशासन भी श्रद्धांजलि कार्यक्रम के नाम पर सिर्फ औपचारिकता निभाकर स्वतंत्रता सेनानी व उनके परिवारों की भावनाओं को आहत कर रहा है। प्रति वर्ष उनके श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शहीद जगदीश वत्स की जीवनी पाठ्यक्रम में शामिल करने व उनकी स्मृति में सरकारी स्तर पर एक पुरस्कार शुरू करने की मांग उठती रही है।मेरे प्रस्ताव पर तत्कालीन मुख्यमंत्री हरीश रावत ने शहीद जगदीश वत्स की जीवनी पाठ्यक्रम में शामिल करने का निर्णय लेकर अपर मुख्य सचिव को लिखित निर्देश भी दिया था,लेकिन उक्त पत्रावली सरकार बदलते ही कहीं लुप्त हो गई है।अलबत्ता शहीद वत्स के परिवार ने स्वयं के संसाधनों से शहीद जगदीश वत्स के गांव खजूरी अकबरपुर में उनकी स्मृति में खोले गए जगदीश प्रसाद स्मारक जूनियर हाईस्कूल परिसर में उनकी प्रतिमा लगा दी है। ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज हरिद्वार ने भी अपने इस छात्र शहीद जगदीश वत्स के नाम से वालीबाल टूर्नामेंट कराकर और कॉलेज परिसर में उनकी मूर्ति लगवाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी है।इसी प्रक्रिया में हरिद्वार में प्रस्तावित स्वाधीनता सेनानी सदन भी शहीद जगदीश वत्स के नाम से बने इसके लिए स्वतंत्रता सेनानी उत्तराधिकारी संगठन पुरजोर कोशिश में लगा है।लेकिन सरकार व प्रशासनिक स्तर पर इस बाबत बरती जा रही शिथिलता व नगर निगम की बेरुखी के चलते उक्त बाबत जमीन तक उपलब्ध नहीं कराई जा सकी है। 17 वर्षीय जगदीश प्रसाद वत्स में बचपन से ही एक कवि के भी गुण थे ,जब वे कक्षा 10 के छात्र थे तो उन्होंने अपने तत्कालीन गुरु आचार्यश्री रामदेव के निधन से आहत होकर उन्हें जो काव्यांजलि प्रस्तुत की थी ,उस काव्यांजलि रूपी कविता को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश पुस्तक में स्थान दिया है।इस कविता की खोज मेरे मित्र फिल्म निर्देशक डा सुभाष अग्रवाल ने टंकारा, गुजरात प्रवास के दौरान की।सचमुच हमारे लिए यह गौरवपूर्ण उपलब्धि है।अमर शहीद जगदीश प्रसाद वत्स को भी वही सम्मान मिले, जो शहीद भगत सिंह को मिलता है। शहीदों के बीच कोई भेदभाव नहीं होना चाहिए ।जिसने भी देश के लिए प्राण न्योछावर किये, वही नमन किये जाने योग्य है। हरिद्वार में 17 वर्षीय जगदीश प्रसाद वत्स ने सन 1942 में ऋषिकुल आयुर्वेदिक कालेज में पढ़ते हुए आजादी का बिगुल बजाया था। कालेज के छात्रों का नेतृत्व करते हुए 17 वर्षीय जगदीश प्रसाद वत्स ने तिरंगे झण्डे हाथ में लेकर अंग्रेज पुलिस को चुनौती देने का साहस किया था। 13 अगस्त सन 1942 की रात्रि में छात्रावास में हुई छात्रों की एक बैठक में 14 अगस्त को तिरंगे फैहराने के लिए सड़कों पर निकलने और भारत माता की जय,इंकलाब जिन्दाबाद के नारे लगाने के लिए, लिए गए निर्णय को अमलीजामा पहनाते हुए छात्रों का दल 14 अगस्त को सवेरे ही हरिद्वार की सड़कों पर निकल पड़ा था। पुलिस की छावनी के बीच भी जब छात्र जगदीश प्रसाद वत्स ने सुभाष घाट पर पहला तिरंगा फैहराया तो अंग्रेज पुलिस की एक गोली उनके बाजू को चीरती हुई निकल गई । घायल जगदीश ने धोती को फाड़कर घाव पर बांध लिया और फिर दूसरा तिरंगा फैहराने के लिए डाकघर की तरफ दौड़ लगा दी। पुलिस की गोली चलने से बाकी छात्र तो तितर बितर हो गए थे ,लेकिन 17 वर्षीय जगदीश तिरंगे फैहराने की जिद पर अडिग रहा और उसने दौड़ते हुए जाकर दूसरा तिरंगा डाकघर पर फैहरा दिया। यहां भी पुलिस ने गोली चलाई जो जगदीश के पैर में लगी। जगदीश ने फिर पट्टी बांधी और रेलवे लाइन के रास्ते हरिद्वार के रेलवेस्टेशन पर पहुंचकर पाइप के रास्ते ऊपर चढ़कर तीसरा तिरंगा फैहरा दिया। जैसे ही जगदीश तिरंगा फैहराकर नीचे उतरा तो राजकीय रेलवे पुलिस के इन्सपैक्टर प्रेम शंकर श्रीवास्तव ने उन्हे घेर लिया। जगदीश ने ताव में आकर एक थप्पड़ इन्सपैक्टर श्रीवास्तव को रसीद कर दिया, जिससे वह नीचे गिर पड़ा। इन्सपैक्टर ने नीचे पड़े पड़े ही एक गोली जगदीश को मार दी जो उनके सीने में लगी। तीसरी गोली लगते ही जगदीश मूर्छित हो गया। जिन्हें इलाज के लिए देहरादून सेना अस्पताल ले जाया गया। बताते हैं कि वहां जगदीश को एक बार होश आया था और उनसे माफी मांगने को कहा गया था परन्तु माफी न मांगने पर उन्हें कथित रूप में जहर का इंजेक्शन देकर उनकी हत्या कर दी गई। सहारनपुर जिले के ग्राम खजूरी अकबरपुर निवासी जगदीश वत्स का शव भी पुलिस ने उनके पिता पंडित कदन सिंह शर्मा को नहीं दिया था। उल्टे दुस्साहसी अंग्रेजों ने जगदीश वत्स को गोली मारने वाले पुलिस इन्स्पैक्टर प्रेम शंकर श्रीवास्तव को पुलिस मैडल प्रदान किया था।

78 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
स्व दुर्गा सोरेन अमर रहे, विधायक सीता सोरेन जिंदाबाद
सुनील पासी केन्द्रीय अध्यक्ष दुर्गा सोरेन सेना (युवा मोर्चा)
आवास मोदीडीह तेतुलमारी (बाघमारा धनबाद) निवेदक : रौनक गुप्ता, राहुल नौनिया

स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
सतपाल सिंह (बिट्टू)
सिख वेलफेयर सोसाइटी के प्रदेश सचिव, धनबाद

स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
राजेन्द्र यादव व बद्री प्रसाद
भाजपा कार्यकर्ता झरिया (धनबाद)

स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
देवपूजन कौशल
जामाडोबा डुमरी नम्बर - 4 झरिया - धनबाद

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
विक्रम कुमार महतो
(ज्येष्ठ पुत्र स्व राजेन्द्र महतो)
केंद्रीय अध्यक्ष, जन संघर्ष मोर्चा धर्मशाला मोड़, चास बोकारो

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद राहुल गांधी जिंदाबाद
राजेश राम
कांग्रेस नेता सह जिला परिषद सदस्य प्रतिनिधि

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
राहुल गांधी जिंदाबाद मल्लिकार्जुन खड़गे जिंदाबाद
मासूम खान
पार्षद प्रतिनिधि सह कांग्रेस नेता छाताबाद (कतरास)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
डा प्रभाकर कुमार
कार्यक्रम पदाधिकारी, राष्ट्रीय सेवा योजना, के बी कॉलेज बेरमो सह मनोवैज्ञानिक, बोकारो

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
राज कुमार मंडल
बिमला फाउंडेशन संस्थापक सह श्रमिक नेता

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
सांसद ढुल्लू महतो जिंदाबाद शत्रुघ्न महतो जिंदाबाद
गणेश महतो
भाजपा नेता सह मुखिया प्रतिनिधि झींझीपहाड़ी बाघमारा
प्रेमलता कुमारी
मुखिया झींझीपहाड़ी पंचायत

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
मनोज कुमार सिंह
प्राचार्य
नेहरू महिला+2विद्यालय चंद्रौर तेतुलमारी सिजुआ (धनबाद)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
स्वतंत्रता संग्राम के सभी सेनानियों को शत शत नमन
बिजय कुमार झा, पूर्व अध्यक्ष बियाडा
डॉ शिवानी झा
श्री कृष्णा मातृ सदन कतरास

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
सुरज महतो
सुप्रीमो
जन शक्ति दल सह भावी विधायक प्रत्याशी बाघमारा विधानसभा

78 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
प्रो० दीपनारायण शर्मा सचिव
प्रो सिकन्दर रवानी प्राचार्य
शासी निकाय (जीबी) महुदा महाविद्यालय महुदा

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
राहुल सोनिया गांधी जिंदाबाद कांग्रेस पार्टी जिंदाबाद
शेख गुड्डू
कांग्रेस नेता खरखरी बाघमारा
भावी विधायक बाघमारा विधानसभा

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
राहुल सोनिया गांधी जिंदाबाद स्व ओपी लाल अमर रहे
अशोक प्रकाश लाल
उपाध्यक्ष
कांग्रेस धनबाद जिला कमिटी सह भावी विधायक प्रत्याशी बाघमारा विधानसभा
निवेदक : शौकत खान, पवन यादव, मो प्रिंस, प्रवीण राय

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
आदविका सिंह
निचितपुर कतरास

78वें स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

धनबाद, गुरुवार 15 अगस्त 2024 ● श्रावण शुक्ल पक्ष 11 संवत 2081 | पृष्ठ : 12 ● मूल्य : ₹ 6 ● वर्ष : 2, अंक : 128 | आमंत्रण मूल्य : ₹ 3 मात्र

भारत की विकास यात्रा की एक नई कहानी

हम सब देश की आजादी के 77वें वर्ष में पहुंच गए हैं। पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक हमारा प्यारा तिरंगा बड़े ही गर्व के साथ लहरा रहा है। इस अवसर पर हम सब देशवासी यह गर्व से कह सकते हैं कि भारत की विकास यात्रा एक नई कहानी गढ़ती नजर आ रही है। ब्रिटिश हुकूमत की कूटनीति के कारण 15 अगस्त 1947 को देश को खंडित आजादी मिली थी। देश की आजादी के साथ ही भारत दो टुकड़ों में बंटा था। तब देश 565 रियासतों में विखंडित हुआ था। अंग्रेजी हुकूमत जाते-जाते देश के समक्ष कई चुनौतियां छोड़ गए थे। 16 वीं सदी तक भारत एक सोने की चिड़िया के रूप में विश्व भर में जाना जाता था। भारत एक कृषि प्रधान देश होने के साथ ही विश्व की अर्थव्यवस्था में इसका योगदान सबसे ऊपर था। माल निर्यात के मामले में पूरी दुनिया में अग्रणी था। तब ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था भारत की अर्थव्यवस्था के सामने बहुत कम थी। आजादी मिलने के साथ ही देशवासियों ने अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गई इस चुनौती को सहर्ष स्वीकार किया और भारत की विकास यात्रा की एक नई कहानी गढ़नी शुरू कर दी। देश के प्रथम गृह मंत्री लौहपुरुष वल्लभभाई पटेल ने 565 रियासतों को एक भारत संघ में शामिल कर अंग्रेजों को करारा जवाब दिया था। उनके इस अवदान को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। अंग्रेज जब भारत छोड़कर गए थे, तब भारत का विश्व की अर्थव्यवस्था में मात्र दो प्रतिशत योगदान था, लेकिन आज भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका है। चंद्रयान 2 और आदित्य एल वन की सफलता ने विज्ञान के क्षेत्र में भारत का नाम सबसे ऊपर कर दिया है। एक ओर भारत की जनता विकास यात्रा की नई कहानी गढ़ रहे होते हैं, वहीं दूसरी ओर हर दिन देश की एकता और अखंडता को खंडित करने के लिए विश्वव्यापी साजिशें भी रची जा रही हैं। इसके बावजूद हिंदुस्तान बिखरा नहीं रहा है बल्कि देशवासी एक राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के नीचे सभी चंदन रत हैं। भारत की विविध संस्कृति, भाषा, रीति रिवाज और रहन सहन एक साथ प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यह विविधता हम सबों को एक सूत्र में बांध रखा है। बीते 77 वर्षों के सफर पर गौर करें तो भारत की यह विकास यात्रा समस्त देशवासियों की मेहनत, त्याग और समर्पण की एक नई कहानी गढ़ती नजर आती है। आज भारत विश्व क्षितिज पर एक नई पहचान बनाने में सफल हुआ है। आज भारत को एक मजबूत और शांतिप्रिय देश के रूप में जाना जा रहा है। कोरोना जैसी विश्वव्यापी महामारी को देशवासियों ने मिलजुल कर परास्त किया। भारत के वैज्ञानिकों ने कोरोना का अचूक वैक्सीन आविष्कार कर एक मिसाल काम किया। भारत ने पूरी दुनिया को कोरोना जैसी महामारी से मुकाबला करने का पाठ भी पढ़ाया था। इस कालखंड में भारत ने विश्व के कई देशों को राहत सामग्री के साथ दवाइयां भी पहुंचाई थी। आज देशवासियों को यह जानना चाहिए कि ब्रिटिश हुकूमत ने गुलाम भारत की एक ऐसी तस्वीर विश्व पटल पर रखी थी, जिससे भारत के गौरवशाली इतिहास पर ही प्रश्नचिन्ह लग गया था। फलस्वरूप भारत को एक अशांति, गरीबी और रोगों के देश के रूप में जाना जाने लगा था। समय के साथ आए बदलाव और देशवासियों के बीच स्वराज की कामना और भारत की आजादी ने ब्रिटिश हुकूमत के झूठे छल छंद को तोड़कर ही रख दिया है। आज की बदली परिस्थिति में विश्व भर के देशों की निगाह भारत पर टिकी हुई है। रूस - यूक्रेन के बीच जारी युद्ध के समाधान के लिए भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक शांति दूत बनकर यूक्रेन की यात्रा पर जा रहा है। भारत विज्ञान, प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, शिक्षा, सैनिक क्षमता आदि विभिन्न क्षेत्रों में एक नई ऊंचाई को छूता चला जा रहा है। ब्रिटिश हुकूमत, भारत में दो सौ वर्षों के लंबे शासन में जितना लूट सकती थी, भारत को लूटी थी। ब्रिटिश हुकूमत यहां की बेशकीमती संपत्तियां ब्रिटेन ले गई थी। सिर्फ एक खाली खजाने के साथ सत्ता सौंपी गई थी। तब आजाद भारत एक ऐसे मुकाम पर खड़ा था, जहां गुलामी के दंश के अलावा कुछ भी न था। आजादी के तुरंत बाद पाकिस्तान से युद्ध झेलना पड़ा था। भारत के लिए यह बहुत ही कठिनाइयों का दौर रहा था। अंग्रेज भारत से जाकर भी उनकी कूटनीतिक चालें कभी बंद नहीं हुई थीं। अंग्रेज, भारत को कई टुकड़ों में बंटा देखना चाहते थे। इस विषम परिस्थिति को अनुकूल बनाने में हमारे राजनेताओं ने बेमिसाल धैर्य और साहस का परिचय दिया था। उनके इस दूरदर्शी कदम की जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम है। उनके कुशल नेतृत्व के चलते ही भारत इस मुकाम तक पहुंच पाया है। अंग्रेजी हुकूमत की कूटनीति और हमारे प्रथम हुक्मरान जवाहरलाल नेहरू से कुछ राजनीतिक भूलें भी हुई थी। फलस्वरूप जम्मू कश्मीर जैसे एक प्रांत में दो विधान की परंपरा कायम रह गई थी। इस परंपरा को पांच वर्ष वर्ष पूर्व दुरुस्त किया गया। धारा 370 और 35 ए जैसे कानून को सदा सदा के लिए समाप्त कर भारतीय संसद ने एक नया इतिहास रच दिया। आज जम्मू कश्मीर देश की मुख्य धारा से जुड़ चुका है। जम्मू कश्मीर दिन-ब-दिन तरक्की की ऊंचाइयों को छूता चला जा रहा है। एक समय भारत इसी जम्मू कश्मीर के मुद्दे को लेकर न्याय पाने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ गया था। 77 वर्षों बाद आज उसी संयुक्त राष्ट्र संघ की अध्यक्षता देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी करते नजर आ रहे हैं। देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने भारत की छवि को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक मजबूत देश के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। उन्होंने देश में कई नई परियोजनाओं का शिलान्यास किया था। फलस्वरूप भारत की पहचान एक मजबूत राष्ट्र के रूप में हो पाई। इसी दौरान पड़ोसी देश चीन ने हिंदी चीनी भाई भाई कह कर भारत पर आक्रमण कर दिया था। हमारी तैयारी उस स्तर की ना होने के कारण भारत को पराजय का भी मुंह देखना पड़ा था। हमारी हजारों मिल जमीनें चीन के कब्जे में चली गई। इस पराजय से सबक लेकर देश में विज्ञान, तकनीकी और औद्योगिक क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने के लिए देश में कई उद्योगों की शुरुआत की गई थी। संपूर्ण देश में उद्योगों का जाल बिछा दिया था। देश में विद्यमान खनिज संपदा आधारित बड़े बड़े उद्योगों का देश की ही भूमि शुरुआत की गई थी। देश में बड़े-बड़े बांध बनाए गए। संपूर्ण देश में सिंचाई की बेहतर व्यवस्था की जा रही है। दुर्गम से दुर्गम स्थानों तक जाने के लिए बड़े बड़े पुलों का निर्माण किया जा रहा है। भारत अपने गौरव को प्राप्त करने के लिए खून पसीना एक कर दिया था।

देश के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने देश को खाद्यान्न और रक्षा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर व मजबूती प्रदान करने के लिए 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया था। उन्होंने दोनों क्षेत्रों में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया। फलस्वरूप देश में हरित क्रांति आई और भारत अनाज के मामले में आत्मनिर्भर बन पाया। रक्षा क्षेत्र में भी कई नई परियोजनाओं का शुभारंभ किया गया था। भारत को अंतर्राष्ट्रीय क्षितिज पर एक नई पहचान बनाने के लिए देश की युवा शक्ति ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। फलस्वरूप आज भारत हर क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ता जा रहा। पहले खेल के क्षेत्र में भारत बमुश्किल एक दो अंतरराष्ट्रीय स्वर्ण पदक प्राप्त कर पाता था, लेकिन आज परिस्थितियां बिल्कुल पलट गई हैं।

अब अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं में भारत एक नई पहचान बनाने में सफल हुआ है।

इसरो के शोध ने अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान के क्षेत्र में एक नई पहचान बनाई है। आज भारतीय मूल के लोग विश्व के किसी भी देश में रह रहे हैं। वे, भारत का नाम अपनी मेहनत से रोशन कर रहे हैं। एक समय था, जब अंग्रेज भारत पर राज करते थे, वहीं एक भारतीय मूल का एक व्यक्ति इंग्लैंड के प्रधानमंत्री तक बना।

कल और आज के भारत की विकास यात्रा में आमूल चूल परिवर्तन नजर आ रहा है। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो की धर्म सभा में जो शंखनाद किया था, आज वह जमीन पर उतरता नजर आ रहा है। आज भारत एक नए युग में प्रवेश कर चुका है। समस्त देशवासियों को एक सुदृढ़, मजबूत और नए भारत निर्माण का संकल्प लेने की जरूरत है।

प्रस्तुति- विजय केसरी

फँसरी टुँगरी

ब्रिटिश शासन को औकात दिखलानेवाले अनगिन, ज्ञात-अज्ञात वीर शहीदों से झारखंड चमचमा रहा है। उनकी वीरता ने अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे। अनेक महावीरों ने प्रथम सिपाही विद्रोह अर्थात गदर से पूर्व ही क्रांति का बिगुल बजाया था। उनमें से कुछ के नाम ज्ञात हैं, जैसे - सिद्धो-कान्हो, चाँद-भैरव मुर्मू भाइयों और उनकी बहनें फूलो-झानो, बिरसा मुण्डा, विश्वनाथ शाहदेव, नीलाम्बर-पीताम्बर, शेख भिखारी, टिकैत उमराव सिंह, जयपाल सिंह, पाण्डेय गणपत राय, नादिर अली-जयमंगल पाण्डेय आदि अनेक। कुछेक अदम्य साहस के धनी वीर गुमनामी के अँधेरे में गुम गए।

चुटिया नागपुर के अपभ्रंश छोटानागपुर के इस जीवंत, ऐतिहासिक शहर राँची के मध्य में रिची बुरु है अर्थात राँची पहाड़ी। वनवासी पहाड़ को बुरु कहते हैं।

कभी की रिची, रंची, आर्ची नाम से प्रसिद्ध झारखंड की राजधानी राँची बाद में किसुनपुर कहलाई। फिर कालांतर में राँची।

राँची नगरी के बीचोंबीच स्थित एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल पहाड़ी मंदिर है। उस पर भगवान शिव का मंदिर काफी प्राचीन है। देश की आजादी से पहले यह अंग्रेजों के कब्जे में था। वे आततायी अंग्रेज स्वतंत्रता सेनानियों या विद्रोह करनेवालों को हर तरह से प्रताड़ित करते थे। सर पर कफन बाँधकर निकले आजादी के दीवानों को इसकी परवाह न थी। क्रूर अंग्रेजों ने पहाड़ी के ऊपर फैले घने वृक्षों पर ऐसे साहसी सपूतों को फाँसी पर लटका दिया था। हालांकि अब वे वृक्ष बचे नहीं, फिर भी वहाँ के गाछों पर कभी टाँग दिए गए थे आजादी के परवाने...जिन्दा या मुर्दा। आम लोगों को सीख देने का यह उनका क्रूरतम तरीका था।

यहाँ फाँसी पर लटकाए गए किसी शहीद का नाम अब तक पता नहीं चल पाया है लेकिन राँची पहाड़ी के वृक्षों पर क्रांतिवीरों को थोक में फाँसी दी गई थी। इसीलिए राँची पहाड़ी को कहते हैं फँसरी टुँगरी! अहिंसक स्वतंत्रता सेनानी, गाँधी जी के परम भक्त, शहीद जतरा भगत के अनुयायी टाना भगतों ने इसका नामकरण किया था। और यह बेवजह नहीं था। पहाड़ी को टुँगरी भी तो कहते हैं वनवासी।

1947 की अर्द्धरात्रि को आजादी मिलते ही रात बारह बजे पहली बार राँची में शहीद स्वतंत्रता सेनानियों की याद और सम्मान में पहला तिरंगा झंडा शिव मंदिर के झंडे संग राँची पहाड़ी या रिची बुरु की चोटी पर ही फहराया गया था। इसे राँची के एक स्वतंत्रता सेनानी कृष्ण चंद्र दास ने फहराया था। उस समय से हर साल स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर यहाँ ध्वजारोहण होता है।

पहाड़ी के ऊपर एक पत्थर है, जिस पर देश की आजादी का संदेश 14 और 15 अगस्त, 1947 की आधी रात को लिखा गया है। सर पर कफन बाँधकर चलनेवाले गुमनाम क्रांतिकारियों की शहादत को जीवित रखने के लिए यह छोटा सा प्रयास था।

शहर की छाती पर सदियों से शान से खड़ी राँची पहाड़ी देश का इकलौता देवालय है, जहाँ ईश आराधना के साथ आन-बान-शान से राष्ट्रीय ध्वज भी लहराता है, राष्ट्रीय गान की धुन से गूँज उठती है पहाड़ी। हर राष्ट्रीय पर्व पर पुरखों का वह अप्रतिम अबोला सा गुम बलिदान याद किया जाता है। फिर भुला भी दिया जाता है।

कालांतर में इस पहाड़ी पर शहादत को याद रखने के लिए देश का सबसे ऊँचा तिरंगा झंडा लगाया गया। कुछ दिनों तक यह बड़ा ध्वज लोगों को आकर्षित करता रहा लेकिन अब सिर्फ पोल है, तिरंगा गायब! अतिक्रमण और प्रदूषण की मार झेलता ढहता हुआ रिची बुरु उस विशाल तिरंगे को साथ ना झेल सका, उसे हटाना पड़ा।

यह मंदिर समुद्र तल से 2140 फीट और जमीन से 350 फीट ऊपर स्थित है। मुख्य मंदिर तक पहुँचने के लिए 468 सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।

प्रत्येक सावन में भगवाधारी काँवरियों की भीड़ देखते बनती थी, है। हर बोल बम्ह के नारों से पट जाती हैं सारी सड़कें। रिची बुरु के दूसरे छोर पर स्थित स्वर्णरेखा नदी से जल लाकर काँवड़िए पहाड़ी मंदिर में शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। शिवरात्रि और सावन के महीने में शिव भक्तों की एक बड़ी भीड़ यहाँ आती है। आदिवासी यहाँ रहनेवाले नाग की पूजा पहले करते हैं फिर शिव की क्योंकि नागवंशी राजाओं की गढ़ रही है राँची।

यहाँ से पूरी राँची का विहंगम दृश्य नजर आता है। पार्श्व में स्थित 1842 में ब्रिटिश नेशनल कर्नल ओसले के द्वारा निर्मित काफी शांत और तीन टापुओंवाली बड़ी राँची झील (बड़का तालाब) भी। शहर के हर इलाके से फँसरी टुँगरी आसानी से पहुँचा जा सकता है। अब बड़ा सा भव्य गेट बन गया है और कई अन्य मंदिर। इसकी सीढ़ियों पर लगे शेड के कारण अब वृक्षादि कम नजर आते हैं। पहले खुले वातावरण में चोटी पर एक ही श्वेत रंग का मंदिर था और चारों तरफ गाछों से आच्छादित सोपान।

लेकिन राँची पहाड़ी मात्र भक्ति का केंद्र नहीं, राष्ट्र भक्ति का भी केंद्र बिंदु है, युवा-किशोर फँसरी टुँगरी या फाँसीगढ़ी की इस सच्चाई को नहीं जानते, समझते। कड़वा सच है कि झारखण्ड के बहुत से गुमनाम शहीदों के बारे में आज के अधिकांश युवा को एकदम जानकारी नहीं है।

स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपने राज्य के कितने जाँबाजों ने कुर्बानी दी, न जाने किन-किन जगहों पर कदंब, आम आदि के पेड़ों पर उन्हें लटका दिया गया है, इसे बताने के लिए, उनके बलिदान को याद रखने के लिए उन बच्चों, किशोरों, युवाओं के बीच इतिहास बाँचने की जरूरत है। इस दिशा में कुछ कदम पूर्व में बढ़ाए गए थे, कुछ अभी कोशिशें की जा रही हैं। उनमें राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का नवीन प्रयास सराहनीय है।

ब्रिटिश काल में 'हैंगिंग गैरी' में बदल गई रिची बुरु राँची का हृदय है। इसे बचाए-बिसाए रखने की आज बेहद आवश्यकता है।

अनिता रश्मि

कुछ तो बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी !

हिमकर श्याम

15 अगस्त 1947 के पहले राजनीतिक दृष्टिकोण से भारतीय साम्राज्य भारत की प्राकृतिक सीमाओं से बाहर कई स्थानों में फैला हुआ था। उसमें न केवल किरथर पर्वतमाला के उस पार बलूचिस्तान भी सम्मिलित था, बल्कि बंगाल की खाड़ी में स्थित कुछ छिटपुट छोटे-छोटे भूभाग भी थे। भारत की संस्कृति और परम्पराओं का प्रभाव पड़ोसी देशों एवं अन्य देशों की सभ्यता पर भी दृष्टिगोचर होता है। चीन, बर्मा, थाईलैंड, सुमात्रा, कम्बोडिया, श्रीलंका आदि कई देशों की सभ्यता पर भारत की संस्कृति की झलक मिलती है।

अखंड भारत या वृहत्तर भारत, प्राचीन समय के भारत के अविभाजित स्वरूप को कहा जाता है। अखंड या वृहत्तर भारत देश की भौगोलिक एकता का ही परिचायक नहीं अपितु जीवन के भी भारतीय दृष्टिकोण का परिचायक है, जो अनेकता में एकता का दर्शन कराता है।

महाकाव्यों तथा पुराणों में सम्पूर्ण देश का नाम भारतवर्ष दिया गया है। इसके निवासियों को भारती संतति कहा गया है। इंडिया, हिन्दू, हिंदुस्तान, भारत, अजनाभवर्ष आदि नामों से पुकारे जानेवाले देश का एक नाम कुमारिकाद्वीप भी था। पुराणों में तो स्पष्टतः इसे कुमारिकाद्वीप कहा गया है, और शेष वृहत्तर भारत को अर्थात वर्तमान हिंदेशिया, मलय, वियतनाम, कम्पूचिया, सियाम और बर्मा तथा शेष पूर्वोद्वीप समूह को द्वीपांतर कहा गया है। ये द्वीप परस्पर सिंधु मार्ग से जुड़े हैं। द्वीपांतर भारत के आठ द्वीप इन्द्रद्वीप(अंडमान), ताम्रपर्णी(लंका), नागद्वीप(मलय), सौम्य(सुमात्रा), वारुण(कम्बोडिया), गान्धर्व(बाली), भगिन और गर्भस्तिमान(सूर्यद्वीप) हैं। सिन्धु नदी के दोनों तटों पर गांधार जनपद था। इसके दो मुख्य नगर तक्षशिला (जिला रावलपिंडी में) और पुष्कलावती (पेशावर का चारसद्दा) थे। विष्णुपुराण कहता है कि समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में जो वर्ष स्थित है उसका नाम भारत है और उसकी सन्तान को भारतीय कहते हैं।

ऐसा कहा जाता है कि भारतवर्ष जम्बूद्वीप का एक भाग है। जम्बूद्वीप सात संकेन्द्र महाद्वीपों का अंतरतम भाग है। जम्बूद्वीप के प्रथम राजा मनु थे। बाद में उनके पुत्र राजा प्रियव्रत इसके शासक बने। मौर्य सम्राट अशोक सम्पूर्ण जम्बूद्वीप के राजा थे। आज भी हमारे संकल्प मन्त्र में जम्बूद्वीपे, भरतखंडे, भारतवर्षे, आर्यावर्ते जैसे नामों का जिक्र होता है। बौद्धों ने भारत शब्द का प्रयोग अत्यल्प किया है और जम्बूद्वीप का ज्यादा। बौद्ध दृष्टि अंतर्राष्ट्रीय भी थी और वे गांधार, सिंहल, रत्नद्वीप(बर्मा), सुवर्णद्वीप (मलय), महाचीन (तिब्बत और भूटान) को भी स्वदेश ही मानते थे और इसीसे भारत के लिए जम्बूद्वीप शब्द का प्रयोग करते थे। पांचवीं शती तक भारतीय राष्ट्रीयता को भौगोलिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक आधार प्राप्त हो चुका था। बौद्ध धर्म के माध्यम से भारतीय लिपि तथा भाषा का मध्य एशिया में प्रवेश हुआ। ब्राह्मी लिपि को वहीं के राज्यों ने अपनाया तथा कुलीन वर्ग के लोगों ने संस्कृत भाषा को ग्रहण किया। विभिन्न स्थानों से संस्कृत में लिखी हुई बौद्ध रचनाओं की प्रतिलिपियाँ भी प्राप्त होती हैं।

अखंड या वृहत्तर भारत : पुराणों में भारत की सीमाओं की निश्चित व्याख्या, उसके आकार का वर्णन, उसकी नदियां, पर्वतों एवं जनपदों की सूचियाँ दी गई हैं। अखंड या वृहत्तर भारत से तात्पर्य भारत से बाहर उस विस्तृत भूखण्ड से है जहाँ भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ तथा जिसमें प्राचीन भारतीयों ने अपने उपनिवेशों की स्थापना की। पाश्चात्य विश्व के साथ भारत का सम्पर्क मुख्यतः व्यापार-परक था किन्तु उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व के देशों में न केवल भारतीय सभ्यता का पूर्ण प्रचार हुआ, अपितु उनमें से अनेक में प्राचीन भारतीयों ने अपने राज्य भी स्थापित कर लिये थे। इस प्रकार वृहत्तर भारत का जन्म हुआ।

प्राचीन भारत में 16 महाजनपद : प्राचीन भारत में 16 महाजनपद थे। इन महाजनपदों का समयकाल 600 ईसा पूर्व से लेकर 325 ईसा पूर्व तक माना जाता है। यह महाजनपद भारत में बिहार से लेकर अफ़गानिस्तान तक फैले हुए थे। बौद्ध और जैन धर्म के प्रारम्भिक ग्रंथों में महाजनपद नाम के सोलह राज्यों का विवरण मिलता है। मल्ला, वज्जि, कम्बोज और कुरु गणतांत्रिक राज्य थे जबकि मगध, कोशल, वत्स, अवन्ती, अंग, काशी, गंधार, शूरसेन, चेदि और मत्स्य स्वभाव से एकतांत्रिक थे। गांधार की राजधानी तक्षशिला थी। गांधार में पाकिस्तान के पश्चिमी भाग और पूर्वी अफ़गानिस्तान भी सम्मिलित थे। कम्बोज (कदाचित आधुनिक अफ़गानिस्तान) की राजधानी आधुनिक कश्मीर के राजपुरा में थी। इस राज्य में हिंदुकुश समाविष्ट था। वृहत्तर भारत के देशों का विभाजन दो भागों में कर सकते हैं। प्रथम भाग में मध्य एशिया, तिब्बत तथा चीन को रखा जा सकता है जबकि द्वितीय भाग के अन्तर्गत हिन्द-चीन तथा पूर्व द्वीप-समूहों की गणना की जा सकती है। मध्य एशिया के उत्तर में कूचा तथा दक्षिण में खोतान भारतीय संस्कृति के प्रमुख केन्द्र थे जहां से इसका व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ। मध्य एशिया के दक्षिणी राज्यों तथा भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग के बीच व्यापारिक सम्पर्क होने के कारण वहाँ भारतीय उपनिवेशों की स्थापना हुई। शीघ्र ही व्यापार का स्थान धर्म-प्रचार ने ग्रहण कर लिया। मौर्य शासक अशोक के धर्म-प्रचार ने भारतीय संस्कृति को मध्य एशिया में फैला दिया। उत्तरी-पश्चिमी सीमा से हिन्दूकुश पारकर अनेक भारतीय बौद्ध प्रचारक मध्य एशिया में जा पहुँचे। गुप्तकाल के प्रारम्भ तक बौद्ध धर्म मध्य एशिया के सभी भागों में पूरी तरह प्रतिष्ठित हो गया था।

सिकुड़ती गई सीमा : इतिहासकारों ने माना है कि 15 अगस्त, 1947 का विभाजन पहला और अंतिम विभाजन नहीं है। भारतीय सीमाओं का संकुचन उसके काफी पहले शुरू हो चुका था। प्राचीन काल में भारत बहुत विस्तृत था जिसमें अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, बर्मा, थाइलैंड आदि शामिल थे। कुछ देश जहाँ बहुत पहले के समय में अलग हो चुके थे वहीं पाकिस्तान (बांग्लादेश सहित) अंग्रेजों से स्वतन्त्रता के काल में अलग हुए। 1857 से 1947 के बीच अंग्रेजों ने भारत को सात बार विभाजित किया। 1857 में भारत का क्षेत्रफल 83 लाख वर्ग किमी था। वर्तमान भारत का क्षेत्रफल 33 लाख वर्ग किमी है। तिब्बत को वेद और पुराणों में त्रिविष्टप कहा है जहां सबसे प्राचीन मानव रहते थे। प्राचीनकाल में तो तिब्बत सांस्कृतिक भारत या तत्कालीन हिंदू राष्ट्र का अंग था। तिब्बत स्थित कैलाश मान सरोवर भारत के अभिन्न अंग रहे हैं। तिब्बती साहित्य में भारतीय शासकों की एक लम्बी सूची मिलती है। भूटान सभ्यता की दृष्टि से भारत का ही अंग है। पाणिनि, गांधारों के समय अफ़गानिस्तान भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग था। यह गुप्त वंश, मौर्य वंश, कनिष्क, लगभग संपूर्ण मुगलकाल, और महाराजा रणजीत सिंह के समय भारत का अंग भी रह चुका है। अंग्रेजों के समय में सिख राज्य की समाप्ति के बाद अफ़गानिस्तान राजनीतिक रूप से भारत से अलग हो गया।

बर्मा भी भारत का हिस्सा रहा है। बर्मा को 'म्यांमार' के नाम से जाना जाता है। 1937 तक यानी भारत की आजादी के दस साल पहले तक ब्रिटिश भारत का हिस्सा था और भारत की आजादी के चार महीने पहले तक भारत का रिजर्व बैंक ही बर्मा का केन्द्रीय बैंक था। 1937 से, ब्रिटिश लोग बर्मा को भारत से अलग करके एक अलग उपनिवेश के रूप में शासन करने लगे। बर्मा ने 1948 में एक गणतंत्र के रूप में स्वतंत्रता प्राप्त की।

पाक अधिकृत कश्मीर : देश के बंटवारे के समय ही पाकिस्तानी सेना ने कबायलियों के साथ मिलकर हमला कर दिया। उन्होंने जम्मू-कश्मीर के बड़े भू-भाग पर कब्जा कर लिया। लगभग आधे कश्मीर पर आज भी पाकिस्तान का कब्जा है। इसे पाक अधिकृत कश्मीर (पीओके) कहते हैं। कश्मीर का क्षेत्रफल 36,315 वर्ग किमी है, जबकि, इसके 13,297 वर्ग किमी का इलाका पाकिस्तान के कब्जे में है। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार जम्मू को डुग्गर प्रदेश कहा जाता था।

अक्साई चीन : अक्साई चीन, जम्मू-कश्मीर का उत्तर-पूर्वी हिस्सा है और पूरे प्रदेश के क्षेत्रफल का करीब 20 प्रतिशत भाग है। यह क्षेत्र 1950 से चीन के कब्जे में है। चीन ने इसे प्रशासनिक रूप से शिनजियांग प्रांत के काशगर विभाग के कार्गिलिक जिले का हिस्सा बनाया है। इसका क्षेत्रफल 37,244 वर्ग किलोमीटर है, जो स्विट्जरलैंड के बराबर है। लद्दाख का हिस्सा रहे ट्रांस-काराकोरम ट्रैक्ट पर भी चीन ने कब्जा कर रखा है।

भारत के लम्बे इतिहास के अंदर, भारत ऐसा देश बन गया जिसके दरवाजे सबके लिए खुले रहे। यहाँ अनेकानेक मानव-प्रजातियों का संगम हुआ। प्राक आर्य, भारतीय आर्य, यूनानी, शक, हूण और तुर्क आदि अनेक प्रजातियों ने भारत को अपना घर बनाया। भौगोलिक सीमाओं के सिकुड़ने के बावजूद भारत ही एक ऐसा देश है, जिसका अतीत कभी मरा नहीं। इस देश का अतीत कल भी जीवित था, आज भी जीवित है और कदाचित आगे भी जीवित रहेगा। शताब्दियाँ बीत गईं, पर हमारी पहचान अक्षुण्ण रही। परिस्थितियों के झंझावात हमें कभी धूमिल नहीं कर सके, न कभी कर सकेंगे। कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी !

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
तेज नारायण राम
सोदपुर एरियाजेसी मेम्बर्स
कोलियरी मजदूर कांग्रेस(एच एम एस)
रानीपुर कोलियरी,नारायणपुर, पुरुलिया

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
रविशंकर भुइयां
रानीपुर ,कोलियरी मजदूर कांग्रेस(एच एम एस) के सदस्य सह भुइयां समाजउथान समिति के सदस्यजिला पुरुलिया
स्वतंत्रता दिवस

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
सुभाष पंडित
केंद्रीय उपाध्यक्ष झारखंड एकता किसान मजदूर यूनियन, प्रखंड डुमरी जिला. गिरिडीह झारखंड

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
मनोज कुमार सिंह
प्रधानाचार्य, उत्क्रमित उच्च विद्यालय सेरुआ, प्रखंड–गावां जिला–गिरिडीह

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
मृत्युंजय सिंह
महामंत्री सह कल्याण बोर्ड सदस्य खान श्रमिक कांग्रेस (भारतीय मजदूर संघ) ईसीएल
स्वतंत्रता दिवस

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
नागेश्वर मोदी
कोलियरी मजदूर कांग्रेस (एच एम एस) रानीपुर, नारायणपुर, पुरुलिया

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
ब्रजेश पांडेय
(प्रभारी प्रधानाचार्य प्लस टू हाई स्कूल गावां प्रखंड–गावां जिला–गिरिडीह)

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
गुरुसहाय रविदास
मुखिया, पंचायत–सेरुआ प्रखंड–गावां, जिला– गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
महेंद्र राजवंशी
प्रधानाचार्य, उत्क्रमित प्राथमिक विद्यालय, शाहपुर रजवरिया, प्रखंड-गावां जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
शशिभूषण राम
प्रधानाचार्य, उत्क्रमित मध्य विद्यालय ,बेन्द्रो प्रखंड–गावां जिला–गिरिडीह

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
उपाध्यक्ष रामा शंकर सिंह। पुरुलिया जिला होलसेल कंज्यूमर्स को ऑपरेटिवमृत्युंजय सिंह
महामंत्री सह कल्याण बोर्ड सदस्य
खान श्रमिक कांग्रेस (भारतीय मजदूर संघ) ,ईसीएल सोसायटी।
स्वतंत्रता दिवस

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं
राजेश सिन्हा
प्रवक्ता आसनसोल जिला भाजपा

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
चुन्नुकांत
प्रदेश कार्यसमिति सदस्य भारतीय जनता पार्टी, झारखंड प्रदेश, निवास-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
अजय कुमार सिन्हा
प्रदेश सचिव, कांग्रेस कमिटी झारखंड प्रदेश, निवास-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
रामेश्वर महतो
प्रदेश अध्यक्ष, अभिभावक एकता मंच झारखंड, निवास-ईसरी बाजार प्रखंड-डुमरी, जिला-गिरिडीह

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
यशोदा देवी
मुखिया सह उपाध्यक्ष मुखिया संघ, गांडेय, पंचायत-तागाटांड प्रखंड-गांडेय, जिला-गिरिडीह

77 वें स्वतंत्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

CAROLINES BAKERS
The Cake Shop

अखंड भारत ही बनेगा विश्व गुरु

सुरेश हिन्दुस्थानी

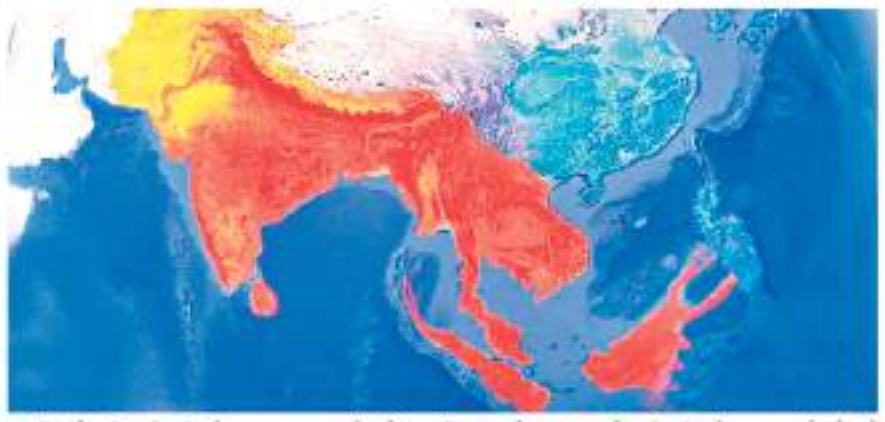

वर्तमान में जब कहीं से भी देश को तोड़ने की बात आती है तो स्वाभाविक रूप से उसका प्रतिकार भी जबरदस्त तरीके से होता है। यह प्रतिकार निश्चित रूप से उस राष्ट्रभक्ति का परिचायक है, जो इस भारत देश को देवभूमि भारत के रूप में प्रतिस्थापित करने का प्रमाण प्रस्तुत करने का अतुलनीय सामर्थ्य रखती है। यह आज के समय की बात है, लेकिन हम उस काल खंड का अध्ययन करें, जब भारत के विभाजन हुए। उस समय के भारतीयों के मन में विभाजन का असहनीय दर्द हुआ। जो असहनीय पीड़ा के रूप में उनके जीवन में प्रदर्शित होता रहा और देश को जगाते जगाते वे परलोक गमन कर गए। अभी तक भारत देश के सात विभाजन हो चुके हैं। जरा कल्पना कीजिए कि अगर आज भारत अखंड होता तो यह दुनिया की महाशक्ति होता। उसके पास मानव के रूप में जनशक्ति का प्रवाह होता। लेकिन विदेशी शक्तियों ने भारत के कुछ महत्वाकांक्षी शासकों को प्रलोभन देकर भारत पर एकाधिकार किया और योजना पूर्वक भारत को कमजोर करने का प्रयास किया। आज जिस भारत की तस्वीर हम देखते हैं, वह अंग्रेजों और उन जैसी मानसिकता रखने वाले लालची भारतीयों द्वारा किए गए कुकृत्यों का परिणाम ही है, लेकिन आज भी भारत में एक वर्ग ऐसा भी है, जिनकी आंखों में अखंड भारत का सपना है। उनके मन में अखंड भारत बनाने का संकल्प है। इसी संकल्प के आधार पर वे सभी इस दिशा में सार्थक प्रयास भी कर रहे हैं।

भारत के मनीषी और राष्ट्र के साथ एकात्म भाव रखने वाले महर्षि अरविंद ने विभाजन के असहनीय दर्द को आम जन की दृष्टि से देखने का आध्यात्मिक प्रयास किया। तब उनकी आंखों के सामने अखंड भारत का स्वरूप दिखाई दिया। योगीराज महर्षि अरविंद ने 67 वर्ष पूर्व 1957 में कहा था कि देर कितनी भी हो जाए, पाकिस्तान का विघटन और उसका भारत में विलय होना निश्चित है। राष्ट्र के प्रति इसी प्रकार का एकात्म भाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वितीय सरसंघचालक माधव सदाशिव गोलवलकर उपाख्य श्रीगुरुजी के जीवन में भी दृष्टव्य होता रहा। वे अपने शरीर को भारत देश की प्रतिकृति ही मानते थे। जब भी देश पर कोई संकट आता था, तब उनके शरीर में वैसा ही कष्ट होता था। इसलिए कहा जा सकता है कि उनको राष्ट्र की समस्याओं का पूर्व आभास भी होता था। जहां तक अखंड भारत की बात है तो यह मात्र कहने भर के लिए ही नहीं, बल्कि एक शाश्वत विचार है, जो आज भी भारत की हवाओं में गुंजायमान होता रहता है।

विचार करने वाली बात यह भी है कि जब भारत देश के टुकड़े नहीं हुए थे, तब हमारा देश पूरे विश्व में ज्ञान का आलोक प्रवाहित कर रहा था। विश्व का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान भारत के संत मनीषियों के पास विद्यमान था। इसलिए भारत के सिद्ध संत केवल भारत के संत न होकर जगद्गुरु के नाम से विख्यात हुए। उनकी दृष्टि में पूरा विश्व एक परिवार की तरह ही था। लेकिन ऐसा क्या हुआ कि भारत कई बार विभाजित होता रहा और आज जो भारत दिखाई देता है, वह भारत का एक टुकड़ा भर है।

भारत के विभाजन का अध्ययन किया जाए तो हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि यह विखंडन भारत की भूमि के टुकड़े करके ही हुए हैं। जिस भारत को हम माता के स्वरूप में पूजते आए हैं, उसे कम से कम वे लोग तो स्वीकार नहीं कर सकते, जो भारत की भक्ति में लीन हैं। इतिहास का अध्ययन करने से पता चलता है कि महाभारत कालीन गांधार देश वाली आज का अफगानिस्तान वर्ष 1747 में भारत से अलग हो गया। इसी प्रकार 1768 से पूर्व नेपाल भी भारत का अंग ही था। 1907 में भारत से अलग होकर भूटान देश बना। 1947 में पाकिस्तान का निर्माण हुआ। 1948 में श्रीलंका अस्तित्व में आया। इसी प्रकार पाकिस्तान के खास अलग हुए बांगलादेश 1971 में एक अलग देश के रूप में स्थापित हुआ। जरा विचार कीजिए ये सभी देश आज भारत का हिस्सा होते तो भारत की शक्ति कितनी होती? आज कोई अखंड भारत की बात करता है तो कई लोग इसे असंभव कहने में संकोच नहीं करते। यहां पहली बात तो यह है कि हम किसी देश को छीनने की बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि अपने देश के विभाजित भाग को भारत में मिलाने की ही बात कर रहे हैं। कभी भारत के हिस्से रहे देश को भारत में मिलाने की बात करना असंभव नहीं माना जा सकता। आज धीरे ही सही, लेकिन भारत उस दिशा की ओर प्रवृत हुआ है। जबकि जो देश भारत से अलग हुए हैं, उनमें से अधिकांश देश बहुत बुरे दौर से गुजर रहे हैं। श्रीलंका की स्थिति सबके सामने आ चुकी है। पाकिस्तान भी उसी राह पर बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। बांगलादेश में भुखमरी के हालात हैं। अफगानिस्तान खौफ के वातावरण में जी रहा है। सवाल यह उठता है कि इन देशों को भारत से अलग होने के बाद क्या मिला? कुछ नहीं।

वर्तमान में भारत में राष्ट्रीय एकता का भाव भी है तो भारत की संस्कृति का प्रवाह भी। भारतीय संस्कृति सबको जोड़ने का प्रयास करती है, जबकि अन्य संस्कृति में विश्व बंधुत्व का भाव नहीं है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के माध्यम से पूरे विश्व को एक ऐसी दिशा का बोध कराया जा सकता है, जहां शांति भी है और प्रगति के रास्ते भी हैं। अब इस दिशा में और अधिक तेजी से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए अब समय अनुकूल है। इसलिए सभी भारतीय नागरिक इस दिशा में आगे आकर उस प्रवाह में शामिल होने का प्रयास करें, जो भारत को अखंड बनाने के लिए प्रयास कर रहे हैं। अखंड भारत की संकल्पना जहां भारत को ठोस आधार प्रदान करने में सहायक होगा, वहीं यही आधार भारत को पुनः विश्व गुरु के सिंहासन पर आसीन करेगा, यह तय है।

स्वतंत्रता दिवस और आदिवासी महिलाएं -विकास की चुनौतियां

पद्मा मिश्रा (जमशेदपुर)

आज पूरा देश अपनी स्वतंत्रता का महान उत्सव मना रहा है ।वर्षों पूर्व मिली आजादी और जीत के प्रतीकात्मक सपनों में एक और सपना जुड़ गया है --अच्छे दिनों के आगमन का ,,,ये सुंदर सपना झारखंड प्रदेश की भूमि सुताओं के रोम रोम में उत्साह बन हिलोरें ले रहा है --क्या अच्छे दिन आएंगे ?-इन अच्छे दिनों की कल्पना आज जनमत की पुकार है ,शोषित पीड़ित आदिवासी बालाओं के अंतःकरण की आवाज है ।स्वतंत्रता दिवस -इस बार अनेक चुनौतियां लेकर आया है , जिसके साथ आशाओं -उम्मीदों का एक लम्बा कारवां भी है । स्वतंत्रता दिवस ,देश की अस्मिता गौरव और सम्मान का एक बहुमूल्य उत्सव - जिसकी आत्मा में समाहित है ,हमारे देश और प्रदेश की वो तमाम महिलाएं -जिन्होंने स्वतंत्रता के संघर्ष को राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर एक नया मोड़ दिया था। हमारे झारखण्ड की वीरांगनाएँ आदिवासी महिलाओं ने भी आजादी के सिपाहियों के साथ कदम से कदम मिलाकर -अपना बलिदान दिया और स्वतन्त्र भारत के स्वप्न को साकार किया था । लेकिन अच्छे दिन तब भी नहीं आये थे । देश को पूर्ण स्वराज्य मिला,सत्ता तो मिली लेकिन वे महिलाएं जो आजादी की लड़ाई में कहीं पीछे छूट गईं ,अपने उत्सर्ग का, का दाय भी न मिला जिन्हें । उन महान आदिवासी झारखंडी महिलाओं के त्याग व् संघर्ष को कभी भुलाया नहीं जा सकता , परन्तु आजादी के 75 साल बाद भी हमारे झारखंड की महिलाएं अपने अस्तित्व की लड़ाई आज भी लड़ रही है,वह आज भी अपनी कैद से मुक्त नहीं हो पाई - रूढ़ियों -परम्पराओं की बेड़ियाँ आज भी उसे विवश बनाती हैं ।गरीबी और रोजी रोटी की जद्दोजहद से गुजरती - अपने अस्तित्व व् अस्मिता की लड़ाई

वे आज भी लड़ रही हैं सामाजिक, आर्थिक शोषण की शिकार ,घर-परिवार की क्षुधा शांत करने हेतु उन्हें पशुओं की तरह खरीदा बेचा जाता है ।,शिक्षा,सभ्यता से कोसों दूर रह केवल भूख और गरीबी का अंकगणित पढ़ने -जानने के लिए मजबूर हैं , ।

ऐसा नहीं है कि उनमे पढ़ने-लिखने की ललक नहीं या वह दुनियां के और-छोर देखना नहीं चाहतीं,,या विकास की मुख्य धारा से जुड़ना नहीं चाहतीं ,लेकिन उनके विकास की गंगा न जाने किन घाटियों में विलीन हो जाती है।,उनके मूक सपने को ग्रहण लग जाता है क्योंकि उनके उत्थान के सारे

प्रयत्न,,सहायता राशि शून्य में या कागजों में ही अंकित होकर रह जाती है, उन्हें नहीं मिल पाती ,,,एक साधन संपन्न ,खनिज सम्पदाओं का धनी प्रदेश अपनी भूमि -सुताओं के साथ न्याय नहीं कर पाया है,--वे नहीं जानतीं कि स्वतंत्रता का अर्थ क्या है ?,उनके अधिकार क्या हैं ?,क्यों वे शिक्षा, रोजी,रोटी,या विकास से महरूम हैं ?,

वे भी प्रतिभा सम्पन्न हैं,ऊंचाइयों को छू पाने और अच्छे दिनों के आने का सपना उन्होंने भी देखा है। उचित मार्गदर्शन मिलने पर अपनी उपलब्धियों के द्वारा हर चुनौती को पार कर दिखाया है । विगत दस वर्षों में हमारे प्रदेश झारखण्ड की महिलाओं ने सफलता के नये नये कीर्तिमान स्थापित कर क्षितिज की ऊंचाइयों को छुआ है -अपने सपनों को नई उड़ान दी है,बहुभाषा भाषी ,बहुधर्मा -संस्कृति बहुल प्रदेश में सपने अगर सजते हैं तो संवरते भी हैं

-और आकाश छूते शिखरों की ऊंचाई से लेकर-रत्नगर्भा धरती के कोने कोने पर इन महिलाओं ने विजय पाई है,महिला उपलब्धियों का आकाश ऊँचा है,इन आदिवासी और गरीब महिलाओं को पंख मिले तो वे खारे संसार को अपनी मुट्ठी में कैद कर पाने की क्षमता रखते हैं ।अपने सुख-दुःख को भूल -अपने संघर्ष के बल पर ये निरंतर आगे बढ़ रही है। इस प्रदेश की यह भी विशिष्टता रही की पहली बार आपेक्षित नगर निकाय के चुनावों में महिलाओं की ,प्रधानता थी और पहली बार घर-आंगन की सीमा लाँघ कर उन्होंने समाज के विकास की दिशा में अपनी भूमिका सशक्त ढंग से निभाने की और अपना कदम बढ़ाया,,,यह सरकार की ओर से उठाया गया एक सर्वश्रेष्ठ कदम था,जिन्होंने महिलाओं को आत्म सम्मान देकर उन्हें स्वावलम्बी भी बनाया है,दीपिका,बचेंद्री पाल,प्रेमलता अग्रवाल,जैसी महिलाओं पर झारखंड को नाज है,क्योंकि हमारे प्रदेश में यदि

संवेदना,मानवता,कर्मठता -ममता जीवित है तो इन विजयिनी -सशक्त मनोबल वाली कर्मठ महिलाओं की ही बदौलत --जो कलम भी चलाती हैं और उद्योग भी,सृजनकर्ता भी हैं और विघ्नहर्ता भी,-हम जूझ रहे हैं साथ लिए ,

सपनों के सुंदर ताजमहल

श्रम संघर्षों की आवाज उठी -

-क्या अच्छे दिन आएंगे ?"लेकिन जो भूमि सुताये विकास की धारा से कोसों दूर पीछे छूट गईं है,अशिक्षा ,,गरीबी ,अन्धविश्वास और रूढ़िवादिता की बेड़ियों में अकड़ी हुई

है ,,उनका उत्थान -विकास ज्यादा जरूरी है,-स्वतंत्रता की पहचान ,,उसका उद्देश्य ,अर्थ क्या है,,,उनके लिए यह जानना भी जरूरी है,उनके जीवन यापन के लिए खेती योग्य भूमि प्रदान करना,,कृषि के नए आधुनिक तरीकों से परिचित करवाना , उनकी शिक्षा की उचित व्यवस्था ,, उन्हें सामाजिक और क़ानूनी सुरक्षा देना,भी सरकार का ही कार्य है,--

तभी झारखण्ड की नारी अपने मनोबल को ऊँचा रख कर अपने प्रदेश ,-परिवार और समाज की सेवा कर पाएगी ,,हाँ ,,चुनौतियां बड़ी हैं ,पीढ़ियों की सोच को बदलने के लिए बहुत कुछ अभी किया जाना बाकी है, प्रयास करते रहना है कि हम उनके साथ न्याय कर सकें,,उनको स्वतंत्रता के वास्तविक अर्थ को समझाने की जरूरत है

,,स्वतंत्रतासबके हित में हो

,,वर्ग,लिंग,जाति की विभिन्नताओं से परे हो .,तभी अच्छे दिन आ पाएंगे --लेकिन महिलाओं की स्वतंत्रता का अर्थ उन्मुक्तता नहीं , बल्कि व्यक्तित्व के विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना हो तभी वह अपना आसमान खुद बना पायेगी-

,,-- ये वीर महिलाएं हमारे समाज का गौरव हैं,परिवार की धुरी हैं जहाँ संस्कारों के बीजमंत्र पनपते हैं --

प्रदेश के विकास के लिए इनका विकास ,ज्यादा जरूरी है,तभी हमारी स्वतंत्रता का सार्थक रूप साकार हो पायेगा -और वो स्वतंत्रता जहाँ हिंसा,गरीबी,आतंक,अशिक्षा ,रूढ़ियों को कोई जगह नहीं होगी --वहीं खिलेगा हमारी उम्मीदों का सूरज--

।,,अच्छे दिन जरूर आएंगे -।

शहीद की चित्कार

पंजाब एवं बंग आगे, कट चुके हैं अंग आगे
बहुत लड़नी जंग आगे, और होंगे तंग आगे
हर गली तो बंद आगे, बोलिए, है क्या उपाय ??
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !
सदियाँ ढलती हुई हैं, चोटियाँ गलती हुई हैं
गर्मियां बढ़ती हुई हैं, वादियाँ जलती हुई हैं
गोलियां चलती हुई हैं, हर तरफ आतंक छाये --
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !

सब दिशाएँ लड़ रही हैं, मूर्खताएं बढ़ रही हैं
नियत नीति को बिगाड़े, भ्रष्टता भी समय ताड़े
विषमतायें नित उभारे, खेत को ही मेड़ खाए
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !
मंदिरों में बंद ताला, हर हृदय है कुटिल-काला
चाटते दीमक-घुटाला, झूठ का ही बोलबाला
जापते हैं पवित्र माला, बस पराया माल आये--
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !
हम फिरंगी से लड़े थे, नजरबंदी से लड़े थे
बालिकाएं मिट रही हैं, गली-घर में लुट रही हैं
होलिका बचकर निकलती, जान से प्रह्लाद जाये --
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !
बेबस, गरीबी रो रही है, भूखा, प्यासी सो रही है
युवा पहले से पढ़ा पर, ज्ञान माथे पर चढ़ाकर
धर्म खुद आगे बढ़ा पर, खो चुका संवेदनाएं
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !
है दोस्तों से यूँ घिरा, न पा सका उलझा सिरा,
पी रहा वो मस्त मदिरा, चादकर के सिर-फिरा
गिर गया कहकर गिरा, भाड़ में ये देश जाए
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !
त्याग जीवन के सुखों को, भूल माता के दुखों को
प्रेम-यौवन से विमुख हो, मातृभू हो स्वतन्त्र-सुख हो
क्रान्ति की लौ ये जलाए, गीत आजादी के गाये
व्यर्थ हमने सिर कटाए,
बहुत ही अफसोस, हाय !

दिनेश रविकर
401- सिल्व इन्क्लेव
धैया, धनबाद

तिरंगा के आगे शीश झुकाना सीख लो.........

थोड़ा यूँ बुदबुदाना सीख लो,
वक्त से गुनगुनाना सीख लो, सिर उठा कर जीना सीख लो,
खुद में खुद को हँसाना सीख लो,
हो चाहे बवंडर उसमें मुस्कुराना सीख लो,
अविश्वास में विश्वास करना सीख लो,
घात और विश्वासघात को भी सीख लो,
जिंदगी के उसूलों को बदलकर बंदगी की भीख लो, न रहा सहारा, न कोई तुम्हारा फिर भी जीना सीख लो, हर तरफ कोहराम में भी, खिलखिलाना सीख लो,
सल्तनत शियासत में खुद को बिछाना सीख लो, कामयाबी के सफर में खुद को मिटाना सीख लो, अंधकारों से लड़कर दीप जलाना सीख लो, है अभी कुछ और वक्त आग बुझाना सीख लो, कौम की रक्षा की खातिर मिटना- मिटाना सीख लो ,
देश के तिरंगे के आगे शीश झुकाना सीख लो !!

आचार्य संजय सिंह चंदन
7978814929

पैगाम

मेरा ये पैगाम सुन लो,
देशभक्ति का मान रख लो,
अपने अपने कर्तव्यों का,
दिल में अपने भान रख लो,
कितनी विपदा आएंगी,
तेरी राह भुलायेगी,
राहों के हर काटों से,
बचा के अपनी जान रख लो,,
मेरा ये पैगाम सुन लो,
देशभक्ति का मान रख लो... !
खुली हवा के नए परिंदे,
जो बन बैठे आज दरिंदे,
बिन जाने समझे और बूझे,
अपनी हस्ती खुद ही लूटे,
सौंप विरासत उनके हाथों,
अपनेपन से उनको बांधो,
सभ्यता को आज बचाकर ,
ऊँचा स्वाभिमान रख लो,
मेरा ये पैगाम सुन लो,
देशभक्ति का मान रख लो... !!
नई नई आशाओं को,
सभी धर्म भाषाओं को,
चुनने दो फिर नए ठिकाने,
हों स्वच्छंद जिनकी उड़ानें,
सरगम की लय पर उनको,
गाने दो फिर नए तराने,
विश्व पटल के केंद्र बिंदु में,
हिन्द का गौरवगान रख लो,
मेरा ये पैगाम सुन लो,
देशभक्ति का मान रख लो... !!!

मंजू शरण मंजुल (शिक्षिका सह कवयित्री) धनबाद

छंद आधारित गीत

वन्देमातरम्। वंदेमातरम्
।वंदेमातरम्। वंदेमातरम्
आज हमें करना है मिलकर,
आजादी का गान है ।
सबसे प्यारा देश हमारा,अपना हिंदुस्तान है।
विश्व पटल पर छाया देखो,ध्वज भारत का नाज यह।
जोश तिरंगे भर के
उड़ता,जन,गण,मन में आज यह।
कण-कण इसका है अति सुंदर,सजा हुआ उद्यान है।
सबसे प्यारा देश हमारा,अपना हिंदुस्तान है।
वन्देमातरम्। वंदेमातरम्
।वंदेमातरम्। वंदेमातरम्।
बोलो भारत माता की जय,जय जयकार है नारा,
गंगा यमुना ब्रह्मपुत्र से, मिलती है अमृत धारा ।
राम कृष्ण की धरती है यह, पावन वेद पुराण है।
सबसे प्यारा देश हमारा, अपना हिंदुस्तान है।
वन्देमातरम्।वंदेमातरम्
।वंदेमातरम्। वंदेमातरम्।
आजादी का खास हमारा,मनता है त्योहार भी,
समता का सुंदर नारा पर, झूमा यह संसार भी।
सारे जग में अतुलित अपना,भारत देश महान है।
सबसे प्यारा देश हमारा,अपना हिंदुस्तान है।
वन्देमातरम्।वंदेमातरम्
वंदेमातरम्।वंदेमातरम्।
नमन करें हम भारतवासी,अपने प्यारे देश को।
ईश्वर से सौगात मिली है,अतुलनीय परिवेश को,
शान हमारी मान हमारा,भारत शिव वरदान है
सबसे प्यारा देश हमारा,अपना हिंदुस्तान है।
वन्देमातरम्।वंदेमातरम्
।वंदेमातरम्। वंदेमातरम्।

प्रमिला श्री 'तिवारी'धनबाद
(झारखण्ड)

अंग्रेजी हुक्मरानों को चुनौती देकर आजादी से पांच वर्ष पूर्व कतरास के जांबाजों ने थाने में फहराया था तिरंगा

10अगस्त 1942 को कतरास थाना पहली बार स्वतंत्रता सेनानी रामानंद खेतान, वीपी सिन्हा ने राष्ट्रीय ध्वज लहराया था

रामानंद खेतान

वीपी सिन्हा

राम कुमार पाण्डेय

देश भक्ति से लबरेज कतरास के जांबाजों ने स्वतंत्रता सेनानी रामानंद खेतान के नेतृत्व मे आजादी के पांच वर्ष पूर्व ही 10 अगस्त 1942 को कतरास थाना मे पहली बार राष्ट्रीय ध्वज फहराया था. अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ वर्ष 1942 में देशव्यापी आंदोलन मे कतरास के आमजनो की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी. 9 अगस्त 1942 को अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ वीपी सिंह ,रामानंद खेतान के नेतृत्व में कतरास थाना चौक के सामने हजारो लोगो की उपस्थिति मे भव्य आजादी सभा आयोजित हुई थी.यह पहला मौका था जब कतरास के लोगो ने अंग्रेजी हुक्मरानो के खिलाफ आवाज बुलंद की थी , आजादी सभा को संबोधित करते हुए वीपी सिन्हा ने लोगो के दिलो मे देशभक्ति की भावना की चिंगारी जलाई थी जिसका परिणाम था कि उत्साहित लोगो ने सभा के दूसरे दिन ही रामानंद खेतान और हरिनंद के नेतृत्व मे 10 अगस्त 1942 को कतरास थाना मे भारतीय झंडा लहरा दिया.जानकार बताते हैं कि स्वतंत्रता सेनानी रामानंद खेतान स्वयं कतरास थाना की छत पर चढ़कर भारतीय झंडा गाड़ दिया था.

भारतीय झंडा फहराने की खबर लगते ही बौखलाई अंग्रेज हुकूमत की पुलिस ने वीपी सिन्हा और रामानंद खेतान सहित अन्य को तत्काल गिरफ्तार कर लिया. गिरफ्तार लोगों को थाने मे प्रताड़ित किया जाने लगा. गिरफ्तारी की खबर पाते ही कतरासवासी के दिल मे सुलग रही आजादी की चिंगारी ज्वाला बनकर भड़क उठी . हजारों की संख्या मे लोग थाना पहुंचकर थाना का घेराव कर दिया. देखते ही देखते आक्रोशित लोगो ने थाने पर पथराव शुरू कर दिया , पत्थर बाजी की घटना मे जिला कलेक्टर से लेकर कई अधिकारी घायल हो गए.आक्रोशित लोगो से खौफजदा अंग्रेजी शासन की पुलिस ने गिरफ्तार लोगो को चुपचुप तरीके से धनबाद भेज दिया.सिजुआ क्लब मे अंग्रेजी हुक्मरान रहा करते थे.उन दिनो वीपी सिन्हा सिजुआ मे ही रहा करते थे.वीपी सिन्हा,रामानंद खेतान, सहित अन्य की गिरफ्तारी से लोगो मे उबाल था घटना के दूसरे दिन ही रामाधारी शर्मा के नेतृत्व मे लोगो ने सिजुआ क्लब पर चढ़ाई कर अंग्रेजो के वाहनों मे तोड़फोड़ कर दी. आक्रोशित लोगों के आगे अंग्रेजी पुलिस बेबस दिख रही थी . हजारो की संख्या मे लोग जुलूस की शक्ल मे कतरास स्टेशन को उड़ाने के लिए सिजुआ से कतरास की ओर निकल पड़े . माहौल पूरी तरह अनियंत्रित हो गया . हालांकि अंग्रेजो को लोगों की योजना की जानकारी लोगों के स्टेशन पहुंचने से पहले लग गई थी.आनन फानन मे स्टेशन परिसर पुलिस छावनी मे तब्दील हो गई .भारी संख्या मे पुलिस की तैनाती देख लोग आजादी के नारे लगाते हुए कतरास थाना चौक की तरफ कूच कर गए, जहां पुलिस ने भीड़ को नियंत्रित करने के लिए फायरिंग कर दी,बावजूद लोगो ने पीठ नहीं दिखाई और थाना की तरफ बढ़ने लगे पुलिस

लोगो पर बर्बरता पूर्वक लाठियां बरसाने लगी कई लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया।

रामानंद खेतान ने स्वतंत्रता सेनानी को मिलने वाला पेंशन कभी नहीं लिया.. राजेंद्र प्रसाद राजा

रामानंद खेतान के नजदीकी रहे झामुमो नेता राजेश प्रसाद राजा बताते हैं कि स्वाधीनता सेनानी श्रद्धेय रामानंद खेतान कतरास की पहचान हैं,जब स्वाधीनता आंदोलन की चर्चा होती है तो रामानंद खेतान का नाम सबसे पहले कतरास वासियो की जुबान पर आता है। राजेन्द्र प्रसाद श्री खेतान की जुबानी बताते हैं कि

9 अगस्त 1942 ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ जब अंग्रेजो भारत छोड़ो आंदोलन शुरू हुआ तो कतरास में रामानंद खेतान एवं उनके साथियो ने कई सभाएं की।

कतरास का गौरव भारतीय क्लब की स्थापना रामानंद खेतान ने की,क्लब मे आज 13000 तेरह हजार से अधिक किताबें हैं.

देश के कई महापुरुष एवं साहित्यकार भारतीय क्लब आ चुके हैं.

धनबाद के उपायुक्त रहे व्यासजी भारतीय क्लब से किताबें लेजाकर पढ़ते थे,आज क्लब का संचालन साहित्यकार एवं लेखक डॉ मृणाल कर रहे हैं.

विचार क्रांति लाने की जरूरत

हम भारतीय नागरिक के लिए, पन्द्रह अगस्त सबसे महत्वपूर्ण दिन है। पन्द्रह अगस्त 1947 के दिन हमारा भारत देश ब्रिटिश शासन के चंगुल से आजाद हुआ था।

बड़े धूम धाम और पूरे उत्साह के साथ हम देशवासी इस राष्ट्रीय पर्व को मनाते हैं, आजादी के जश्न के रूप मे।

देश के स्वतंत्रता सेनानियों ने आजादी को पाने के लिए लंबा संघर्ष किया। अपना पूरा जीवन पूरी जवानी माँ भारती के चरणो मे झोंक दी। राजगुरु , सुखदेव, मंगल पाण्डेय, बालगंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, सुभाषचंद बोस जैसे कई क्रांतिकारियों और स्वतंत्रता सेनानियों का अहम योगदान रहा।

भारत माँ के इन सच्चे सपूतों के लंबे संघर्ष के कारण ही स्वतंत्रता का सपना साकार हुआ।

स्वतंत्रता आंदोलन मे हमारे प्यारे बापू गाँधी जी एवं चाचा नेहरू का योगदान विशेष महत्व रखता है। विज्ञान व तकनीक से लेकर खेल, कला संस्कृति हर क्षेत्र मे भारत का डंका दुनिया भर मे बोल रहा है। पर, इन सबके बावजूद अभी भी, बहुत कुछ हासिल करना बाकी है। इसके लिए प्रगतिशील रणनीति और स्वास्थ्य विचार क्रांति लाने की आवश्यकता है, जिससे समस्याओं से उबरा जा सके।

ऐसा भी नहीं है कि, हमने तरक्की नहीं की है, हम आज विकासशील देशो मे गिने जाते हैं। पर, यह भी कहना गलत न होगा कि हमारा भारत संक्रमण काल से गुजर रहा है। और अंत मे कहा जाए तो सही मायने मे हमारी मानसिकता ही गुलामी से ग्रस्त है, इसके लिए एक बार फिर कहूँगी देश के सही निर्माण मे, पहले समाज की मानसिकता को स्वस्थ विचार क्रांति लाने की आवश्यकता है तभी हम पूर्ण रूप से स्वतंत्र होंगे एव हमारे तिरंगे की शान बढ़ेगी।

रत्ना वर्मा राज
धनबाद -झारखंड

15 अगस्त 1947 की सुबह और बंटवारे का दंश

सनत जैन

भारत 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्र हुआ था। अंग्रेजों ने भारत से पहले 14 अगस्त को पाकिस्तान को स्वतंत्रता दी थी। मोहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान मे शपथ ली। उसके बाद भारत के पास और कोई विकल्प नहीं बचा था। वह अंग्रेजों द्वारा दी गई स्वतंत्रता को अस्वीकार कर दे। कांग्रेस के प्रमुख नेता और स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े आंदोलनकारी धार्मिक आधार पर बंटवारे का विरोध कर रहे थे। मुस्लिम लीग और हिंदू महासभा ने पश्चिम बंगाल की विधानसभा से धार्मिक आधार पर बंटवारे की मांग 1945 में की थी। यह प्रस्ताव अंग्रेजों के लिए मुफीद साबित हुआ। अंग्रेजो ने मोहम्मद अली जिन्ना को पाकिस्तान का राष्ट्राध्यक्ष बनाने के लिए तैयार किया। जिन्ना ने समझौते पर हस्ताक्षर किये। मोहम्मद अली जिन्ना उन दिनों टीबी की बीमारी से पीड़ित थे। उनकी जान कभी भी जा सकती थी। उन्होंने पाकिस्तान का राष्ट्राध्यक्ष बनना स्वीकार किया। 14 अगस्त को अंग्रेजों ने पाकिस्तान को स्वतंत्र राष्ट्र घोषित कर जिन्ना को शपथ दिला दी। उसके बाद भारत को अंग्रेजों का प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा। अंग्रेजों और कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व में जवाहरलाल नेहरू के नाम पर सहमति बनी। वह भारत के पहिले प्रधानमंत्री बने। 15 अगस्त को बटवारे पर तीव्र प्रतिक्रिया हुई। अविभाजित भारत के दोनों हिस्सों में हिंसा का एक नया दौर शुरू हो गया। भारत के हिंदूवादी संगठन मुसलमानो को पाकिस्तान जाने के लिए विवश करने लगे। वहीं पाकिस्तान के मुस्लिम संगठन वहां से हिंदुओं को भारत जाने के लिए विवश करने लगे। उग्रवादी संगठनों ने आजादी का जश्न मनाने के स्थान पर दंगे शुरू कर दिए। अल्पसंख्यक समुदाय की संपत्तियों को लूटा गया। पाकिस्तान में कट्टर मुसलमानो द्वारा हिंदुओं का उत्पीड़न शुरू हुआ। बंटवारे के समय अविभाजित भारत में रहने वाले हिंदू और मुस्लिम दोनों ही हिंसा के शिकार हुए। उन सबका चैन, जान-माल, अस्मत सब लूटी जा रही थी। गली गली मे टोलियां बनाकर लुटेरे और उग्रवादी तत्व लूटमार कर रहे थे। ऐसे समय पर भारत में महात्मा गांधी ने दंगा ग्रस्त इलाकों में जाकर अनशन शुरू किया। लोगों से शांति की अपील की। बंटवारे के समय भारत और पाकिस्तान मे जो ट्रेन चल रही थीं। उसमे जिंदा और मुर्दा दोनों ही एक देश से दूसरे देश में भेजे जा रहे थे। यह स्वतंत्रता का वीभत्स स्वरूप था। भारत ने इसमें बहुत जल्दी काबू पाया। 1948 में जब महात्मा गांधी की हत्या उग्रवादी हिंदू संगठनों द्वारा की गई। इसके बाद जनता में तीव्र प्रतिक्रिया हुई। उसके बाद भारत में हिंसा का दौर एक तरह से शांत हुआ। 1950 में भारत का संविधान लागू होने के बाद से पिछले कुछ वर्षों तक भारत में धार्मिक उन्माद की स्थिति देखने को नहीं मिली। भारतीय संविधान और लोकतांत्रिक व्यवस्था मे सभी धर्म और संप्रदाय के लोगों ने आपस में रहना सीख लिया था।

एक दूसरे के ऊपर भरोसा था। आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से सभी वर्ग आगे बढ़ रहे थे। पिछले कुछ वर्षों से धार्मिक उन्माद एक बार फिर अपनी जड़ों को फैला रहा है। हाल ही में बांग्लादेश में सत्ता में बने रहने के लिए शेख हसीना द्वारा जिस तरह की तानाशाही की। उसके दुष्परिणाम आज सभी को देखने मिल रहे हैं। 1947 के पहले हम आजादी से रहना नहीं जानते थे। कोई हिंदू राष्ट्र कभी नहीं रहा। हमेशा राजा महाराजाओं के राज रहे हैं। सबके अपने-अपने धर्म थे। पहले राजे रजवाड़े और जागीरदारों का शासन था। जो आम जनता को मनमाने तरीके से लूटते और प्रताड़ित करते थे। उसके बाद आक्रांता आए, उन्होंने राजाओं को लूटा। आम जनता ने कभी राजाओं का साथ नहीं दिया। मुट्ठी भर आक्रांताओं ने राजे राजवाड़े और जागीरदारों के महलों पर कब्जा करके अपना शासन स्थापित किया। जनता ने उनका कोई विरोध नहीं किया। धीरे-धीरे करके आक्रांता अपना साम्राज्य स्थापित करते चले गए। सत्ता के अहंकार में सत्ता के मद में आक्रांताओं ने भी जनता के साथ गुलामों जैसा व्यवहार किया। जो भी शासन आया, उसने आम जनता को गुलामों की तरह रखा। अंग्रेज आए, उन्होंने राजाओं के ऊपर अधिकार जमाया। आम जनता अंग्रेजों और राजे रजवाणे की जब दोहरी मार से प्रताड़ित हुई। उसकी परिणति जलियांवाला बाग, 1857 जैसी घटनाएं हुई। स्वतंत्रता के लिए आम जनता मे पहली बार विद्रोह हुआ। उसके बाद अंग्रेजों को भारत छोड़कर जाना पड़ा। जब वह भारत से जाने लगे। तब उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच धार्मिक आधार पर बंटवारे का खेल खेल। अंग्रेजों ने भारत और पाकिस्तान की सीमाएं बना दी। राजाओं को स्वतंत्रता दी, कि वह जिस देश से मिलना चाहते हैं, उससे मिल जाएं। भोपाल रियासत का पाकिस्तान से दूर-दूर तक का कोई वास्ता नहीं था। उसके बाद भी भोपाल के नवाब धार्मिक आधार पर पाकिस्तान के साथ जाने की मांग पर अड़े रहे। भारत में सबसे बाद में भोपाल स्टेट के नवाबों को स्वतंत्रता मिली, यह एक ध्रुव सत्य है। अभी कहा जाने लगा है, कांग्रेस ने बटवारा किया था। यह पूरी तरह से गलत है। अंग्रेज भारत को बांटकर गए थे। उन्हें लगता था, दोनों आपस में लड़ेंगे भिड़ेंगे।

जोड़ापोखर के बृजनंदन शर्मा ने आजादी की लड़ाई में दिया था नेताजी का साथ

धनबाद : देश की आजादी के लिये मर मिटने वाले दीवानों की सूची में स्वतंत्रता सेनानी बृजनंदन शर्मा का नाम सबसे ऊपर है. देश की दासता से दुखी और अंग्रेजों से भिड़ने की मंशा से शर्माजी बचपन में ही अपना गांव छोड़ धनबाद आ गए. यहां आते ही सुभाष चंद्र बोस के भाषणों से प्रभावित होकर वह उनके गर्म दल में शामिल हो गए. अंग्रेजों के दमन के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की.

नेताजी जब गोमो से लाहौर जाने लगे तो धुलगढ़िया तक उनके साथ गए. इसके बाद धनबाद में चल रहे अलग अलग आंदोलनों में सक्रिय रहे. घर में बम रखने के आरोप में अंग्रेजों ने उन्हें हजारीबाग जेल में डाल दिया. जेल में भी अंग्रेजों के जुल्म का सामना करना पड़ा. महीनों जेल में रहने के बाद जब बाहर आये तो पुनः आंदोलन में सक्रिय हो गए. आजादी की लड़ाई में उन्हें बनारस, गया और इलाहाबाद (प्रयागराज) जेल में भी सजा काटनी पड़ी थी.

आजादी के बाद भी गरीब और शोषितों की आवाज बने

स्वतंत्रता सेनानी के द्वितीय पुत्र प्रेम कुमार शर्मा ने बताया कि देश की आजादी के बाद पिताजी को टाटा कोलियरी में एक बड़े पदाधिकारी की जिम्मेवारी मिली. वहां उनसे मजदूरों का शोषण देखा नहीं गया. नौकरी छोड़ दी और कांग्रेस मजदूर संगठन बनाया. मजदूरों की लड़ाई लड़ी. बाद में सूर्यदेव सिंह के जनता मजदूर संघ में शामिल हो गए. जनरल सेक्रेटरी के रूप में काम किया. इसके बाद कोयला-इस्पात मजदूर पंचायत से भी जुड़कर मजदूरों और शोषितों की लड़ाई लड़ी. 1974 के जेपी आंदोलन में भी शामिल रहे थे. पूरी जिंदगी उन्होंने दूसरों के लिये कुछ करने-धरने में बिता दी. अपने लिये जोड़ापोखर के छोटे से भूखंड पर सिर्फ एक घर बनाया था.

बिहार के नालंदा से आये थे धनबाद

स्वतंत्रता सेनानी के पुत्र ने बताया कि पिताजी नालंदा जिले के दबोल गांव के रहने वाले थे. लेकिन 10 साल की उम्र में ही गांव से धनबाद आ गए थे. पूरा जीवन यहीं बिताया और वर्ष 2005 में अंतिम सांस भी ली. 70 के दशक में उन्हें पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने सम्मानित किया था. ट्रेन में फ्रस्ट ऐसी का पास और पेंशन की सुविधा मिली. उनके निधन के बाद यह सुविधा मां को मिली. अब मां भी इस दुनिया में नहीं है. स्थानीय प्रशासन भी अलग अलग आयोजनों में उन्हें बुलाता था और सम्मानित भी करता था.

स्वतंत्रता सेनानी के परिवार को कोई पूछने वाला नहीं

स्वतंत्रता सेनानी के पुत्र ने बताया कि माता-पिता के जाने के बाद अब हमें देखने वाला कोई नहीं है. तीन भाई और दो बहन अब मुफलिसी में जीवन गुजार रहे हैं. दोनों बहनों की अब तक शादी नहीं हुई है. मदद के लिये केंद्र से राज्य सरकार तक गुहार लगा चुके हैं. काफी पैसे भी खर्च कर दिए, परंतु किसी तरह की कोई मदद नहीं मिली. आज पूरे देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है. लेकिन मेरी नजर में यह विष महोत्सव है, जिसमें स्वतंत्रता सेनानियों के परिवार को कोई देखने वाला नहीं है.

स्वतंत्रता दिवस की 77 वीं वर्षगांठ पर देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

देश का एक सजग
नागरिक ,एक शुभचिंतक